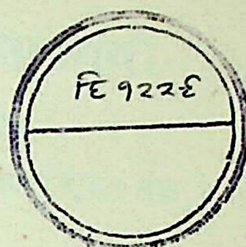
श्री माँ आनन्दमयी
(१८ भाग)

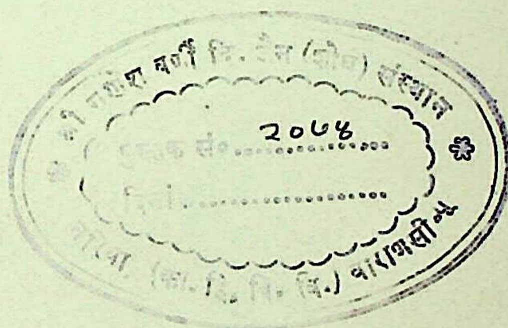
...

न्द ग्रंथी १८ वां भाग
व्र.........................

लेनेवालेका हस्ताक्षर	लौटानेकी तिथि



सिद्धान्ताचार्य पं. फूलचंद जी शास्त्री,
निदेशक श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान,
वाराणसी द्वारा भेंट

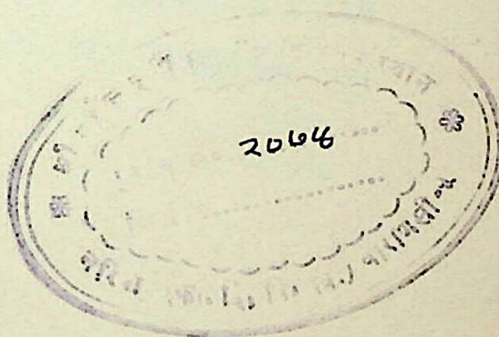


श्री श्री माँ आनन्दमयी

सप्तदश भाग

[जनवरी १९५७ से दिसम्बर १९५७ तक]

श्री गुरुप्रिया देवी
हिन्दी रूपान्तर—विश्वनाथ मुखर्जी



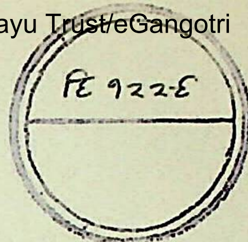
श्री श्री आनन्दमयी संघ
भदैनी, वाराणसी

प्रकाशक
श्री श्री आनन्दमयी संघ
भदैनी, वाराणसी–१

प्रथम संस्करण
अप्रैल, १९७१

मूल्य : तीन रुपये

मुद्रक
आनन्द प्रेस
गौरीगंज, वाराणसी–१



प्रकाशकीय

श्री श्री माँ के अनुग्रह से श्रीयुक्ता गुरुप्रिया देवी (दीदी) लिखित 'श्री श्री माँ आनन्दमयी' का सप्तदश भाग प्रकाशित हुआ।

इधर लेखिका एक लम्बे अर्से से बराबर अस्वस्थ रहते हुए भी आपकी दैनिक डायरी बराबर चालू रही। इस दृष्टि से आपने श्री श्री माँ के अगणित भक्तों को अपनी कृतज्ञता-पाश में आबद्ध कर लिया है।

प्रस्तुत पुस्तक बंगला में प्रकाशित चतुर्दश भाग का हिन्दी अनुवाद है। इस भाग के प्रकाशन में जो विलम्ब हुआ, उसके लिएँ श्री श्री माँ के भक्तों के निकट हम क्षमाप्रार्थी हैं। यथा संभव अन्य भागों का प्रकाशन शीघ्र किया जायगा। अन्य भागों की तरह इस भाग के मुद्रण तथा गेटअप में विशेष ध्यान दिया गया है।

विनीत
प्रकाशक

विषय-सूची

श्री श्री माँ आनन्दमयी



—राँची, [illegible]

श्री श्री माँ आनन्दमयी

सप्तदश भाग

१ जनवरी, १९६७

श्री श्री माँ अभी काशी में हैं। माँ की तबीयत बराबर अस्वस्थ है। हम सब इसलिए विशेष रूप से चिन्तित हैं। माँ के शरीर में किसलिए क्या हो रहा है, यह सब समझने की क्षमता हममें नहीं है। सिर्फ इतना ही जानते हैं कि आधुनिक चिकित्सा का प्रयोग माँ के शरीर के ऊपर नहीं किया जा सकता, फिर भी हमारा दिल जो नहीं मानता।

डा० गोपाल दासगुप्त माँ के बारे में विशेष चिन्तित हैं। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि कलकत्ता से एक बड़ा चिकित्सक तथा एक कर्ण विशेषज्ञ को बुलाकर माँ को दिखाया जाय। इस सलाह के अनुसार कल रात को कलकत्ता में श्री अनिल गाँगूली को फोन किया गया है।

आधी रात के समय माँ की हालत अचानक ऐसी हो गयी कि हम सब बहुत घबड़ा उठे। घर में माँ के सामने मैं, दीदीमाँ, योगीभाई और भैया थे। अचानक माँ के हाथ फैल गये और श्वास की गति न जाने कैसी हो गयी। क्या करूँ कुछ समझ नहीं पा रही थी। थोड़ी देर बाद जब माँ की हालत कुछ स्वाभाविक हो गयी तब हम सब उनके कमरे से धीरे-धीरे बाहर चले आये।

आज सूर्योदय के पूर्व नारायण स्वामीजी को भेजकर श्री गोपीनाथ कविराज जी और डा० गोपाल दासगुप्त को बुलवाया गया। कल रात को माँ की जो हालत थी, उस सम्बन्ध में इन लोगों के साथ परामर्श करने के बाद यह तय किया गया कि आज सवेरे कलकत्ता में डाक्टर के लिए फोन कर दिया जाय।

कविराज जी ने कहा कि दवा वगैरह का प्रयोग तो होगा नहीं, यह तो समझी हुई बात है, फिर भी जांच करके वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय।

कलकत्ता से फोन प्राप्त हुआ कि कल सवेरे हार्ट स्पेशिलस्ट डा० शचीन सर्वाधिकारी तथा आँख-कान-नाक के विशेषज्ञ डा० यतीन दोनों आदमी आ रहे हैं।

२ जनवरी, १९५७

कलकत्ता से दो विशेषज्ञ यहाँ आ गये हैं। डा० सेन ने माँ के कान, नाक और गले की अच्छी तरह जांच करने के बाद कहा कि ठण्ढ लगने के कारण यह शिकायत पैदा हुई है। नाक से कान तक पतली नली जुड़ी है जो बन्द हो गयी है। फलस्वरूप हवा के दबाव के कारण इस तरह की आवाज सुनायी देती है। यह आवाज अक्सर सिर के भीतर भी फैल जाती है। उन्होंने यह राय दी कि गुनगुना नमकदार गरम पानी नाक से खींचा जाय और गर्म पानी की भाप में श्वास लिया जाय।

डा० सर्वाधिकारी माँ के पुराने भक्तों में हैं। वे माँ की तबीयत का यह समाचार सुनकर अपने साथ डा० सेन को ले आये हैं। उन्होंने माँ के हार्ट, लांग्स और ब्लड प्रेशर की जांच अत्यन्त मनो-

योग से किया। सब कुछ स्वाभाविक है, उन्होंने कहा। पर यह भी कहा कि पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है। बातचीत कम से कम की जाय। माँ के कमरे में लोगों का आकर बातचीत करने की मनाही कर दी जाय।

चिकित्सक की हैसियत से अपना काम समाप्त करने के बाद उन्होंने माँ के श्री चरणों में स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना की। हम लोगों को यही एक मात्र आशा है कि माँ के मामूली ख्याल से सब कुछ ठीक हो जा सकता है।

दोनों डाक्टर आज रात की गाड़ी से कलकत्ता वापस चले गये।

३ जनवरी, १९५७

आज सवेरे से योगीभाई ने माँ के शरीर के लिए अखण्ड सम्पुटित चण्डीपाठ आरंभ करवाया।

"देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं।
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।"

इस मंत्र के द्वारा सम्पुटित पाठ प्रारंभ हुआ। सात मराठा ब्राह्मण इस कार्य में व्रती बने—छः पाठक और एक आचार्य। सर्व समेत २१ बार सम्पूर्ण चण्डीपाठ होगा।

गंगा के बिलकुल किनारे आश्रम की छत पर इन महाराष्ट्रीयन ब्राह्मणों का चण्डीपाठ लोगों को आनन्द देने लगा। विशेषरूप से

सम्पुट का मंत्र अत्यन्त सुन्दर ढग से निर्वाचित किया गया है। लोगों के मन में बारंबार इस सम्पुट मंत्र का यही अर्थ गूँज रहा था—'हे अखिल जगत् को, चराचर विश्व की अधिष्ठात्री देवी; तुम अब हमारे प्रति प्रसन्न हो। प्रसन्न होकर तुम अपने शरीर को रोग मुक्त कर हमें त्राण दो।"

शाम के बाद डा० दासगुप्त माँ के कमरे में बैठे थे। बातचीत के सिलसिले में माँ से उन्होंने कहा कि श्री श्यामाचरण दे जी अत्यन्त अस्वस्थ हैं। इस हालत में भी वे माँ को बहुत स्मरण कर रहे हैं। अगर किसी योग क्रम से माँ का एक बार दर्शन कर पाते तो इस वृद्ध को विशेष आनन्द मिलता।

दे जी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूतपूर्व गणित के प्रोफेसर और आगे चलकर प्रो-वाइसचांसलर बने थे। ख्याति प्राप्त पुरुष हैं। आपने अपना सब कुछ विश्वविद्यालय की उन्नति के लिए दान कर दिया है। इन दिनों आपकी उम्र ९० साल की है। पहले भी माँ का दर्शन करने का आप सौभाग्य प्राप्त कर चुके हैं।

उनकी बीमारी की बात सुनकर माँ कह उठीं—"ठीक है, अगर कोई आकस्मिक बाधा न आ गयी तो कल सवेरे बाबा को जाकर देखा जायगा।" माँ को अपने शरीर की वर्तमान दशा का ख्याल ही नहीं हुआ।

४ जनवरी, १९५७

सवेरे ठीक ९ बजे माँ डा० दासगुप्त के साथ 'दे' बाबा को देखने के लिए हिन्दू विश्वविद्यालय मोटर द्वारा रवाना हुईं। साथ में नारायण स्वामी, उदास आदि गये।

बाहर से देखने पर माँ का शरीर काफी दुर्बल दिखाई दे रहा था। पैदल चलते समय माँ के पैर काँप रहे थे। ऐसी हालत में भी माँ बाहर जा सकती थीं, इस बात की कल्पना किसी ने नहीं की थी।

एक घण्टा बाद माँ वापस आ गयीं। सुना कि माँ को 'दे' बाबा के शयन-कक्ष में ले जाया गया। वे माँ को देखकर अत्यधिक आनन्द प्रकट करने लगे थे। माँ ने उनके गले में माला पहनाकर हाथ में फल दिया। थोड़ी देर वहाँ बैठने के बाद माँ जब मोटर तक वापस आयीं तब विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री झा जी सपत्नीक आये और माँ को प्रणाम किया।

जबलपुर के प्रसिद्ध सर्जन डा० रंगीलाल जी, हिन्दू विश्व विद्यालय के प्रोफेसर सुबोध दासगुप्त, डा० शोभा बसु आदि लोगों को माँ के आगमन का समाचार मिल गया था। देखते ही देखते ये सभी लोग, कोई अकेले तो कोई सपत्नीक, कोई इष्ट-मित्र के साथ वहाँ आकर हाजिर हो गये। माँ मोटर पर बैठी हुई थीं। सभी लोग उसी हालत में वहीं आकस्मिक रूप में माँ का दर्शन कर कृतार्थ होते रहे। माँ का दर्शन पाकर सभी लोग प्रणाम करने के बाद वापस चले गये। माँ भी आश्रम वापस आ गयीं।

८ जनवरी, १९५७

माँ के निकट स्वामी विद्यानन्दजी

आज सवेरे पहले से बिना कोई सूचना दिये महामण्डलेश्वर श्री श्री १००८ स्वामी विद्यानन्द जी (गीता स्वामी) माँ से मिलने के लिए चले आये। स्वामीजी ने भारत तथा पाश्चात्य देशों में अनेक जगह गीता प्रचार मन्दिर स्थापित किया है।

माँ कन्यापीठ के ऊपर वाले खण्ड के कमरे में सोयी थीं। माँ के यहाँ समाचार भिजवाकर स्वामीजी को वहाँ ले जाया गया। स्वामीजी कुछ देर तक माँ के निकट बैठे तरह-तरह की बातें करते रहे और माँ का शरीर जल्द अच्छा हो जाय, यह प्रार्थना जता गये। स्वामीजीको माला-चन्दन और पर्याप्त फल भेंट किया गया।

शाम के वक्त कान्तिभाई और पानु को इसलिए स्वामीजी के स्थानीय आश्रम में भेजा गया कि अगर वे कल हमारे आश्रम में भिक्षा ग्रहण करें तो हम सबको विशेष आनन्द प्राप्त होगा। इस अनुरोध के उत्तर में स्वामीजी ने कहा कि वे आश्रम के बाहर अन्यत्र कहीं भिक्षा ग्रहण नहीं करते।

८ फरवरी, १९५७

माँ का शरीर एक प्रकार से उसी तरह चल रहा है। बातचीत बहुत कम करती हैं।

आज सवेरे चण्डीपाठ समाप्त हुआ। सभी ब्राह्मणों ने मिलकर होम और समाधा किया। अनुष्ठान समाप्त होने में लगभग शाम हो गयी। यह निश्चय हुआ कि कल से शोभा (बम्बई निवासी डा० धीरेन बाबू की पत्नी) माँ के शरीर के लिए नौ दिन तक नित्य एक बार सम्पुटित चण्डीपाठ करायेगी।

९ जनवरी, १९५७

योगीभाई आज हरद्वार वापस चले गये। जाते समय वे माँ
से ख्याल करके शरीर स्वस्थ कर लेने के
माँ के स्वास्थ्य के लिये लिये वारंबार अनुरोध कर गये। माँ के
माँ के चरणों में प्रार्थना चरणों में विनति करने के अलावा हम

लोगों के लिए और कोई अन्य उपाय नहीं है, आखिर क्या किया जाय।

कलकत्ता से बिनू दादा (कलकत्ता हाईकोर्ट के वकील श्री शरदिन्दु नियोगी) आये हैं। सवेरे वे अन्नपूर्णा मन्दिर के सामने बैठे थे। अचानक उनके मन में महामृत्युंजय जप कराने का विचार आया। .उस समम माँ भी वहीं मौजूद थीं। बिनू दादा ने बताया कि ज्योंही यह संकल्प मेरे मन में उत्पन्न हुआ त्योंही माँ ने मेरी ओर देखा। इससे बिनू दादा के मन में दृढ़ विश्वास हो गया कि यह अनुष्ठान चाहे जैसे भी हो, करना ही होगा।

११ जनवरी, १९५७

माँ का स्वास्थ्य धीरे-धीरे प्रगति की ओर बढ़ रहा है। नित्य शाम के समय कविराज जी आश्रम में आते हैं। आश्रम में संध्या-पूजा करने के पश्चात् वे माँ के कमरे में ९-९॥ बजे तक तरह-तरह की बाते करते हैं। उस समय वहाँ नारायण स्वामी, अमूल्य बाबू, परमानन्द स्वामो आदि के अलावा और कोई मौजूद नहीं रहता।

माँ का सोना एक पर्दा खींच देना मात्र है।

नारायण स्वामो की जबानी सुना कि आज माँ के सोने के बारे में बातचीत चलने पर माँ ने कहा—"इस शरीर के सोये रहने का अर्थ है पड़े रहना। एक पर्दा खींच देना मात्र। लोगों के साथ बाहरी रूप से व्यवहार बन्द कर देना। तुम लोग जिस प्रकार कमरे के भीतर सोते समय दरवाजा बन्द कर देते हो, ठीक उसी प्रकार यह भी कह सकते हो। दूसरी

ओर इस शरीर के व्यवहार-अव्यवहार का कोई प्रश्न ही नहीं है। अन्य किसी के रहने पर भी व्यवहार—अपने साथ अपना व्यवहार और क्या।"

माँ का स्वास्थ्य ठीक नहीं हो रहा है, इस प्रसंग में माँ ने कहा—"इस शरीर को तुम लोग खराब-खराव कह रहे हो, इसके भीतर भी एक बात है। इस वार हरद्वार के सप्तर्षि-आश्रम में जब संयम-सप्ताह हो रहा था, उस समय सत्संग में वैठे-वैठे इस शरीर को ख्याल हुआ था कि इतनी देरी तक नहीं वैठना चाहिए, इसलिए अब एक निमित्त होकर मानो वह ख्याल पूर्ण होता जा रहा है।"

माँ के ख्याल के ऊपर ही माँ की शारीरिक अवस्था निर्भर रहती है।

बिनू दादा द्वारा प्रस्तावित महामृत्युंजय जप आगामी पौष संक्रान्ति के दिन से आरम्भ करने का निश्चय किया गया। एक-लक्ष्य जप, दस सहस्र होम, एक सहस्र तर्पण, एक सौ अभिषेक तथा दश ब्राह्मण भोजन कराने की बातचीत चल रही है। महामृत्युंजय पुरश्चरण इसी रूप में कराने का नियम तंत्रशास्त्र में निर्दिष्ट है। बंगदेशीय पंडित तंत्रशास्त्र में विशेष पारदर्शी होते हैं, इसलिये तद्देशीय पंडितों द्वारा यह अनुष्ठान कराने का निश्चय किया गया है। तंत्र मतानुसार सिर्फ एक अक्षर जप की विधि है। किन्तु वैदिक मत से ५२ अक्षर-मंत्रों की विधि है।

माँ के शरीर के लिए आश्रमवासी लड़के-लड़कियाँ भी जप और मौन का पालन करते आ रहे हैं। सभी लोगों की एकमात्र हार्दिक इच्छा है कि क्या-क्या करने से माँ का शरीर शीघ्रातिशीघ्र स्वस्थ हो जाय।

१४ जनवरी १९५७

आज प्रातःकाल से महामृत्युंजय जप का अनुष्ठान चण्डीमंडप वाले घर में आरम्भ किया गया। वासन्ती-पूजा की वेदी के ऊपर एक और वेदी निर्माण करवा कर, उस पर घट स्थापित किया गया। काशी के प्राचीन पंडित श्री ताराचरण साहित्याचार्य जी को आचार्य पद पर वरण किया गया। साथ में दस ब्राह्मण जप कार्य में नियुक्त रहेंगे। एक अन्य तन्त्रधारक के कार्य में नियुक्त रहेंगे। ब्राह्मणों के आसन, वस्त्र, रौप्य-अंगुरी, पंचपात्र, ताम्र-कुण्ड, पीतल की रेकाबी, रुद्राक्ष की माला आदि का वरण किया गया। आचार्य को रेशमी वस्त्र उत्तरीय तथा अन्य सामग्रियों के साथ सोने की अँगूठी दी गयी।

नित्य २० हजार जप करते हुए पाँच दिन में कुल एक लाख जप सम्पूर्ण किया जायगा। ब्रह्मचारी भरत अनुष्ठान के यज़मान बने।

आज एक और विशेष शुभ कार्य आरम्भ किया गया। माँ के शरीर के पिताजी की एक विशेष इच्छा थी कि एक शिव मन्दिर की स्थापना हो। किन्तु अपने जीवित काल में वे अपनी उक्त शुभ इच्छा पूर्ण नहीं कर पाये थे। दीदी माँ से एक वार उन्होंने स्वप्न में कहा था—"क्यों, मेरा काम अभी नहीं करवायी ?"

माखन के घर में शिव मन्दिर की प्रतिष्ठा

आश्रम के समीप ही माँ के कनिष्ठ भ्राता माखन ने कई साल हुए एक मकान बनवाया है। उसी मकान में ही एक छोटे शिव मन्दिर का निर्माण कार्य भी पूरा हो गया है। दूसरी ओर बहुत दिन पहले नर्मदा से कई शिवलिंग लाकर आश्रम में रख दिये गये थे। उनमें से एक लिंग निर्वाचित

करके अलग से रखा गया था। उक्त लिंग को आज माँ की उपस्थिति में प्रतिष्ठित किया गया। आज इतने दिनों बाद माँ की कृपा से दादा जी की इच्छा पूरी हुई। यद्यपि माँ कहती हैं—"स्वयं वे आज कृपा करके आये और प्रतिष्ठित हुए।"

बहरहाल, भोर ६ बजे आश्रम से वाद्य-घंटा के साथ शिवलिंग को माखन के घर ले जाया गया। साथ-साथ माँ भी गयीं। बाद में वहाँ से पुनः बाजा बजाते हुए शिव-पार्वती और नंदी को गंगा स्नान कराने के लिए ले जाया गया। स्नान के पश्चात् तीन वार प्रदक्षिणा करने के पश्चात् शिवलिंग, पार्वती और नंदी को माँ की उपस्थिति में मन्दिर में प्रवेश कराया गया।

मन्दिर में भी पहले पंचगव्य तथा पंचामृत द्वारा उन लोगों को स्नान कराया गया। इसके बाद शिवलिंग की यथाविधि स्थापना की गयी। स्थापना के पश्चात् षोड़शोपचार पूजा तथा होम आदि भी माँ की उपस्थिति में सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ। शिवलिंग का नामकरण हुआ विपिनेश्वर और मन्दिर का नाम रखा गया शिवधाम।

१९ जनवरी, १९६७

कल यानी शिव प्रतिष्ठा होने के बाद से ही माँ को बराबर यह ख्याल हो रहा था कि शिव प्रतिष्ठा कार्य में न जाने कहाँ कुछ असम्पूर्ण रह गया है। किन्तु माँ ने इस विषय पर किसी से कुछ नहीं कहा।

आज सवेरे माँ मेरे कमरे में आकर बैठीं। ठीक इसी समय नारायण स्वामी जी, बाटु दादा और पुरोहित बिशु आये। बिशु

को देखते ही माँ ने प्रश्न किया—"कल तुम लोगों ने क्या शिव मन्दिर की प्रतिष्ठा की थी ?"

बिशु जरा अप्रस्तुत हो गया। बोला—"नहीं माँ ! शिव मन्दिर का शोधन किया गया है, पर प्रतिष्ठित नहीं किया गया है।"

सर्वज्ञ माँ

तब माँ ने कहा—"कल से बराबर ही ख्याल आ रहा है कि जैसे कोई कार्य रह गया है। आज तुम लोग सामने हो, इसलिये कहने का ख्याल हुआ। अगर यह काम न हुआ तो हमेशा के लिये अपूर्ण रह जायगा। क्या अब मन्दिर की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती? तुम लोगों के शास्त्र में क्या लिखा है ?"

माँ की जिज्ञासा पर इस सम्बन्ध में खोज की गयी। महा-मृत्युंजय अनुष्ठान के उपलक्ष्य में इस समय आश्रम में कुछ अभिज्ञ विद्वान्, प्राचीन पंडित मौजूद हैं। इनके अलावा काशी के सुप्रसिद्ध स्मृतिशास्त्र के पंडित कमलाप्रसाद स्मृतिभूषण जी से भी पूछा गया। सभी लोगों ने प्रतिष्ठा के पक्ष में राय दी। उसी के अनुसार आगामी कल पूर्णिमा तिथि को मन्दिर प्रतिष्ठा की व्यवस्था की गयी।

१६ जनवरी, १९५७

एक विचित्र घटना

आज दोपहर १२ बजे तक पूर्णिमा तिथि है। सूर्योदय के पूर्व से ही माखन के घर में प्रतिष्ठा का आयोजन हो रहा है। दस महाराष्ट्रीय ब्राह्मणों ने वास्तु-मंत्र जप किया। माँ की उपस्थिति में माँ के सामने ११॥ बजे के भीतर ही विधिवत् सुन्दर ढंग

से मन्दिर की प्रतिष्ठा हो गयीं। माँ की व्यवस्था में किसी प्रकार की सामान्य त्रुटि रखने की गुजांइश नहीं है। मन्दिर के कार्य में सामान्य त्रुटि रहने के कारण कल से आश्रम के कई ब्रह्मचारियों से एक लाख शिवमंत्र जप करवाया जा रहा है।

आश्रम में भी एक काम करवाना था। आज वह भी सम्पन्न हुआ। शिल्प प्रतिष्ठान के आंगन में पुस्तकालय के ऊपर माँ के लिए एक नया घर बनवाया जा रहा है। मेरी इच्छा थो कि पौष संक्रान्ति के दिन मां को उस घर में प्रवेश कराया जाय, किन्तु घटनाचक्र से माँ के मुँह से कई बार पूर्णिमा की बात निकलती रही। योगायोगक्रम से वही सत्य हुआ। योगेश दादा को संक्रान्ति के पहले ही कहा गया था कि उस दिन वे सवेरे माँ के घर में नारायण-शिला लेकर पूजा और होम करेंगे। माँ के घर के ऊपर एक और छोटा सुन्दर घर बनवाया गया है। योगेश दादा ने सोचा कि शायद यही कमरा माँ के लिए बनवाया गया है, इसलिए गलती से उन्होंने उसी कमरे में नारायण-शिला ले जाकर पूजा और होम करने के पश्चात् माँ का उस कमरे में प्रवेश करवाया।

आश्चर्य की बात तो यह हुई कि एक इतनी बड़ी गलती हो गयी, पर इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया और माँ भी स्वयं नीरव रहीं। बाद में बहुत से लोग ने ध्यान आने पर कहा कि यह क्या हुआ।

इधर आज पूर्णिमा के दिन इसीलिए माँ के निर्दिष्ट घर में ही पुनः नारायण-पूजा एवं होम की व्यवस्था की गयी। १२ बजे के भीतर ही माखन के घर में शिव मन्दिर की प्रतिष्ठा का कार्य करवाने के पश्चात् माँ ने आकर नये कमरे में प्रवेश किया। माँ को प्रवेश करवाने के बाद एक-एक करके सभी लोग जाकर आसन पर

बैठ गये। माँ की पूजा माला-चंदन से की गयी। हम सब अवाक् होकर यह सोचने लगे कि माँ के मुंह से बहुत दिन पहले ही पूर्णिमा के दिन की बात प्रकट हुई थी, आज वह हम लोगों की गलती के बीच सत्य सिद्ध हो गयी।

यह तय हुआ कि आज से माँ इस घर में सोयेंगी। किन्तु घर में माँ के ख्याल के अनुसार खटिया, आलमारी, दरी या गलीचा कुछ भी नहीं बिछाया गया। खजूर के पत्ते की चटाई के ऊपर, बोरा के भीतर पुआल भरकर गद्दी बनायी गयी थी। उसी के ऊपर एक चटाई बिछाकर कथरी रखकर माँ के लिए शय्या तैयार की गयी। अवाक् होकर हमलोग माँ की लीला देखते रहे। कब किस-लिए माँ क्या करती हैं, यह हमलोगों की बुद्धि के बाहर की बात है।

१९ जनवरी, १९६७

कल महामृत्युंजय जप समाप्त हो गया। आज आहुति पूर्ण हो गयी। होम और पूर्णाहुति के समय माँ वहाँ उपस्थित थीं। एक सहस्र तर्पण, एक सौ मार्जन तथा दस ब्राह्मणों का भोजन समाप्त हुआ। पुनः षोड़शोपचार से मृत्युंजय महादेव और पार्वती देवी की पूजा हुई। शान्ति जल प्रदान एवं दक्षिणान्त करते-करते लग-भग तीन बज गये।

माँ का शरीर आज कुछ ठीक मालूम पड़ रहा है। माँ का शरीर ठीक रहे, इसके लिए सभी लोग विभिन्न प्रकार से माँ के चरणों में प्रार्थना कर रहे हैं। कोई अखण्ड चंडी पाठ कर रहा है, कोई महामृत्युंजय जप कर रहा है और कोई अखण्ड भाव से नाम कर रहा है। कुछ लोग व्यक्तिगत रूप से संकल्प करवाकर जप

कर रहे हैं। सभी लोगों की एक मात्र कामना यही है कि माँ शीघ्रातिशीघ्र स्वस्थ हो जाँय।

२० जनवरी, १९६७

शाम के बाद माँ के कमरे में कविराज जी जाकर बैठे। नारायण स्वामी, अमूल्य दादा, डा० दासगुप्त आदि और भी कुछ लोग यहाँ उपस्थित हैं। तांत्रिक साधना में बीज मंत्र की इतनी प्रधानता क्यों है, इस विषय पर कविराज जी के साथ नारायण स्वामी-जी बातचीत करते रहे। ठीक इसी समय माँ कुछ कहने जा रही थीं कि अचानक चुप हो गयीं। लगभग २-३ मिनट चुप रहने के बाद माँ अपने आप बोल उठीं—"एक सफेद बाल और दाढ़ी वाला ऋषि की तरह पुरुष आया था। पिताजी (कविराज जी) और नारायण के सामने आकर उन्हें आड़ करते हुए बैठा था।" कुछ देर बाद पुनः बोलीं—"कल से यहाँ अलग से एक आसन बिछा कर रखा जाय।"

जहाँ कीर्तन आदि होता है, वहाँ सूक्ष्म देह-धारियों के लिए एक आसन रखना उचित है।

आगामी २३ तारीख को माँ कलकत्ता जाने वाली हैं। माँ की तबीयत अभीतक पूरी तरह ठीक नहीं हुई। किन्तु भक्तों की इच्छा पूरी करने के लिए माँ अस्वस्थ शरीर लेकर कलकत्ता जैसे भीड़-भाड़ वाले शहर में जा रही हैं।

कलकत्ता के यतीश गुहजी के कनिष्ठ भ्राता स्व० क्षितीश का दामाद द्विजेन व्यवसाय में नियुक्त है। आज से कुछ दिन पहले जिन दिनों वह इण्डोनेशिया में था, उन दिनों उसने स्वप्न में देखा कि माँ मानो आकर उससे कह रही हैं—"तुम अपने मकान के तीन तल्ले में मुझे नहीं बुलाओगे ?"

द्विजेन ने अभी हाल ही में कलकत्ता के बालीगंज में एक नया मकान खरीदा है। स्वप्न के निर्देशानुसार उसने उस मकान की तीसरी मंजिल में माँ के लिए कमरा निश्चित करके रख छोड़ा है। तीन दिन के लिए माँ को वह अपने उस मकान में ले जाने के लिए विशेषरूप से प्रार्थना कर चुका है। इसी बीच वह स्वयं आकर यहाँ अपना निवेदन माँ के श्री चरणों में कर गया है। कलकत्ता में चार दिन रहने के बाद २८ तारीख की रात को माँ यहाँ वापस चली आयँगी।

२३ जनवरी, १९५७

आज तीसरे पहर ३॥ बजे माँ कलकत्ता रवाना हो गयीं। अपने साथ केवल परमानन्द स्वामी तथा उदास को ले गयीं। एक दिन पहले ही बुनी, हेम दीदी, कल्याणी, हर प्रसाद आदि को भेज दिया गया है। २८ ता० को माँ जब यहाँ वापस आयँगी तब ३१ तारीख को मैं माँ के साथ बम्बई जाऊंगी। भइया (श्री बी० के० साह) माँ और मुझे बम्बई आने के लिए बराबर आग्रह कर चुके हैं।

कलकत्ता की ओर

२८ जनवरी, १९५७

आज रात को लगभग एक बजे माँ कलकत्ता से यहाँ वापस आयीं। सुना कि इन चार दिनों तक द्विजेन के भवन में ही विराट रूप में आनन्दोत्सव चलता रहा। इस उपलक्ष्य में उसके पिता-माता भी आये थे। द्विजेन का स्वप्न माँ की कृपा से इस तरह पूर्ण हुआ देखकर सभी लोग आनन्द से आत्महार हो गये। चारों दिन माँ द्विजेन के घर ही रहीं, कहीं नहीं गयीं।

कल सवेरे ७॥ बजे द्विजेन के घर से चलकर कई जगह घूमती-फिरती १० बजे माँ हवड़ा स्टेशन आयीं। वहाँ से तूफान एक्सप्रेस से मुगलसराय होती हुई काशी आयीं।

२९ जनवरी, १९५७

आज दोपहर को भइया दिल्ली से यहाँ आये। आप माँ को लेकर परसों सवेरे बम्बई जायँगे। माँ के रहने के लिए बम्बई स्थित अपने मकान के बगीचे में उन्होंने एक सुन्दर मन्दिर बनवाया है। स्थान बहुत ही सुन्दर और एकान्त है। उनकी विशेष इच्छा है कि माँ कुछ दिन एकान्त में विश्राम करें।

शाम के समय अम्बर के राजा साहब अचानक सपरिवार आये। आते समय उन लोगों ने यह निश्चय किया था कि माँ के यहाँ जाकर कुछ दिन रहेंगे, किन्तु माँ तो एक दिन बाद यहाँ से चली जायँगी। यह समाचार सुनकर ये लोग बड़े दुखित हुए।

रात के समय राजा साहब माँ के साथ एकान्त में काफी देर तक बात करते रहे।

३१ जनवरी, १९५७

बम्बई की ओर माँ

आज सवेरे बम्बई मेल से माँ को लेकर मैं, भइया, स्वामी जी, बुनी, उदास, शोभा आदि रवाना हुईं। हमारे साथ अम्बर के राजा-रानी सपरिवार चल पड़े। कलकत्ता से कान्तिभाई बिभू भी आज बम्बई की ओर रवाना हो रहे हैं। बम्बई में माँ १०-१५ दिन रहने वाली हैं। वहाँ से एक बार अहमदाबाद भी जायँगी।

१ फरवरी, १९६७

आज दोपहर को लगभग एक बजे हमलोग बम्बई पहुँचे। स्टेशन पर लीलाबेन तथा अनेक स्त्री-पुरुष माँ के लिए इंतजार कर रहे थे। माँ ज्यों ही स्टेशन पर उतरीं त्यों ही उन्हें भइया की गाड़ी में बैठाकर सीधे विले पार्ले स्ट्रीट भवन में ले जाया गया। अम्बर के राजा-रानी अपने घर चले गये।

भइया के घर में जब आयी तो देखा—मकान के पीछे की ओर टेनिस-कोर्ट के ऊपर बहुत ही सुन्दर ब्रह्मा के मन्दिरों (पैगोडा) की भाँति एक मकान बनवाया गया है। लीलाबेन अपनी पसन्द के अनुसार उसे सुन्दर बनाने की चेष्टा कर रही हैं। माँ को ठंढक न लगे, इसलिए घर में एयर कण्डिशनिंग मशीन लगाया गया है। बाहरी शोर प्रतिरोध करने का भी इंतजाम किया गया है।

५ फरवरी, १९६७

बम्बई में माँ

माँ आजकल पूर्ण रूप में विश्राम कर रही हैं। यहाँ के लोगों को माँ के आने का समाचार नहीं दिया गया है। फलस्वरूप विशेष भीड़-भाड़ नहीं है। माँ को हर प्रकार से आराम मिले इसके लिए यथासाध्य प्रयत्न भइया और लीला बहन कर चुके हैं और कर रहे हैं।

माँ बड़े आराम से दिन गुजार रही हैं। कभी माँ बगीचे में अपनी इच्छानुसार चहलकदमी करती हैं तो कभी भइया मोटर में बैठाकर उन्हें बाहर घुमा लाते हैं। माँ का शरीर पूर्वापेक्षा काफी स्वाभाविक लग रहा है।

१० फरवरी, १९५७

आज माँ सबसे पहले कुछ देर के लिए साधुबेला आश्रम में गयीं। वहाँ न जाने कौन सा उत्सव चल रहा है। वहाँ के लोग आकर बड़े आग्रह के साथ माँ को अपने यहाँ ले गये। वहाँ से वापस आते समय संन्यास आश्रम में कुछ देर ठहरने के बाद यहाँ वापम चली आयीं। इसके पहले माँ संन्यास आश्रम में कई बार गयी थीं। दक्षिण की यात्रा से लौटते समय हरिबाबा आदि के साथ माँ वहाँ कुछ दिन ठहरी थीं। संन्यास आश्रम के प्रतिष्ठाता श्री १००८ महेश्वरानन्द जी माँ के प्रति विशेष श्रद्धा रखते हैं।

माँ का शरीर ठीक नहीं है सुनकर एक सज्जन ने माँ से आकर कहा—"माँ, आप च्यवनप्राश क्यों नहीं सेवन करतीं ?"

माँ हँसकर बोलीं—"हाँ बाबा, च्यवनप्राश और बलराम-जल का ही सेवन कर रही हूँ।" उक्त सज्जन शायद माँ की बातों का ठीक-ठीक अर्थ समझ नहीं सके। आगामी परसों माँ यहाँ से अह-मदाबाद जाने वाली हैं। वहाँ २-३ दिन रहने के बाद जयपुर, जोध-पुर और कुचामन आदि कई जगह होती हुई २५ तारीख के लगभग वृन्दावन पहुँच जायँगी। इधर भइया की विशेष इच्छा यह थी कि माँ कुछ दिनों तक एकान्त में विश्राम करती रहें। किन्तु उधर पहले से ही हरिबाबा जी तथा अबधूत जी के साथ माँ का प्रोग्राम बन गया था, इसलिए यहाँ अधिक दिनों तक ठहरना माँ के लिए सम्भव नहीं था।

इन दिनों माँ के शरीर की जो हालत है, उसे देखते हुए माँ का यहाँ कुछ दिन एकान्त में विश्राम करना आवश्यक है—प्रत्येक डाक्टर यही राय दे रहे हैं, पर इधर मानो विश्राम करने का अव-सर ही नहीं मिल रहा है। माँ साधु-महात्माओं की इच्छा के विरुद्ध

नहीं चलतीं। अगर इस तरह का कोई ख्याल हो जाय तो अलग बात है। इस प्रसंग की चर्चा चलने पर माँ ने कहा—"चल रहा है, चलने दो। जो हो जाय।"

सुना कि पिछली बार हरिद्वार से वापस लौटते समय जब वे मोदीनगर में थीं तब अवधूत जी के साथ भविष्य के लिए प्रोग्राम बनाती रहीं। इसके अलावा जयपुर के श्री मदनमोहन वर्मा जी बहुत दिनों से अपने यहाँ ले आने के लिए प्रयत्न करते रहे। कुचामन के राजा साहब श्री प्रतापसिंह जी माँ तथा हरिबाबा को अपने यहाँ आने को वड़े आग्रह से विनती कर चुके हैं। जोधपुर स्थित हरिबाबा जी के भक्तों ने उन्हें तथा माँ को अपने यहाँ आने के लिये प्रार्थना की है। यही वजह है कि माँ इस बार इधर से जाते समय इन सभी स्थानों से होती हुई जायँगी। हरिबाबा जी भी अवधूत जी के साथ उपस्थित रहेंगे।

१२ फरवरी, १९५७

आज रात ९ बजे गुजरात मेल से माँ अहमदाबाद की ओर रवाना हो गयीं। स्टेशन जाते समय माँ स्थानीय भक्त श्री मूलजी भाई के यहाँ थोड़ी देर के लिए रुकी थीं।

मूलजी भाई का पूरा परिवार ही अत्यन्त भक्त हैं। दीदी माँ के शिष्य हैं। इसके पहले अनेक बार माँ विभिन्न लोगों के साथ मूलजी भाई के परिवार में ठहरी थीं। आजकल अपने मकान के

अहमदाबाद में माँ

सटे हुए शिव-मन्दिर के सामने एक बड़ा सा हाल बनवाया है। उसके साथ ही माँ के लिये भी एक लम्बा चौड़ा कमरा बनाया गया है ताकि माँ अपनी इच्छानुसार जब चाहें तब आकर

ठहर सकती हैं। मूलजी भाई पत्नी मनीबेन तथा उनकी लड़कियाँ अत्यन्त भक्तिमती हैं।

मैं बम्बई में रह गयी। यह तय हुआ कि अगर मैं स्वस्थ रही तो बाद में सीधे वृन्दावन जा सकती हूँ। इस बार मुझे बहुत पहले ही बम्बई आ जाना चाहिये था। उस समय यह तय हुआ था कि मेरा एक बार एक्स-रे आदि करने के बाद अगर यह देखा गया कि मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गयी हूँ तो चिकित्सकों की राय से मेरा बेल्ट खोल दिया जायगा।

सन् १९५५ जुलाई माह में यहाँ मेरा प्लास्टर खोला गया था। इसके बाद से डाक्टरों की राय के अनुसार बराबर बेल्ट का प्रयोग करती आ रही हूँ। पिछले साल जब जुलाई में यहाँ आयी थी तब एक बार बेल्ट खोल देने की चर्चा हुई थी।

बहरहाल, माँ के जाने के बाद स्थानीय नानावती अस्पताल में मेरा एक्स-रे लिया गया। उसकी रिपोर्ट क्या रही अभी तक मुझे बताया नहीं गया। पर एक बात विशेष रूप से देख रही हूँ कि एक्स-रे लेने के बाद से भइया और लीला न जाने क्यों अस्वाभाविक रूप से गंभीर हो गये हैं। जो लोग हमेशा मेरे साथ हँसमुख ढंग से बातचीत करते थे, वही अकस्मात् इस प्रकार गंभीर और विषण्ण हो गये हैं, फलस्वरूप मुझे संदेह हुआ कि रिपोर्ट अच्छी नहीं है।

डा० सेठ बम्बई से बाहर हैं। अन्त में यह तय हुआ कि उनके आने पर ही सब कुछ निश्चय किया जायगा। इधर माँ भी जाते समय किसी प्रकार का इंगित नहीं कर गयीं। वास्तविक स्थिति क्या है, कुछ समझ नहीं सकी। खैर माँ की जो इच्छा है, वही होगी।

१८ फरवरी, १९५७

अहमदाबाद से प्राप्त बुनी के पत्र से माँ का समाचार मिला। माँ परसों भोर में ६ बजे वहाँ पहुँची थीं। स्टेशन पर अनेक भक्त माँ का स्वागत करने आये थे। माँ को स्टेशन से सीधे कान्तिभाई मुन्शी के घर ले जाया गया। हर बार की तरह इस बार भी एस्बेस्टेस से निर्मित बहुत बड़ा कमरा माँ के लिये श्री मुन्शी के बगीचे में बनवाया गया है।

मण्डी के राजा और रानी साहिबा वहाँ जाकर माँ का दर्शन कर चुके हैं। उनकी लड़की इन्दिरा भी उन लोगों के साथ थीं। राजा साहब ब्राजिल में ५ वर्ष तक भारत के राजदूत थे। पिछले साल जुलाई माह में वापस चले आये हैं। बम्बई में पिछली बार रानी साहिबा के साथ मेरी मुलाकात हुई थी। बाद में वे काशी गयी थीं, किन्तु राजा साहब के साथ भारत लौटने के बाद यह पहली मुलाकात हुई।

राजा साहब ने माँ के निकट दुःख प्रकट करते हुए कहा कि आपने हमें इतना दूर भेज दिया था। इतने दिनों तक माँ के दर्शन का अवसर हमें नहीं मिल सका। यह बात सुनकर माँ हँसती हुई बोली थीं—"बच्चा खेल में मस्त होकर माँ को भूल जाता है।" आगे फिर बोलीं—"इस शरीर का भूलने का कोई प्रश्न नहीं है। बच्ची तो पिता-माता के साथ ही रही।"

कल शाम को कालूपूर में मराठी लड़की डाक्टर विधा माँ को नर्सिंग होम में ले गयी थीं। इस मकान के सम्बन्ध में पहले कोई गड़बड़ी हुई थी। इसलिये डाक्टर विधा ने माँ के निकट प्रार्थना की कि उसका अस्पताल ठीक से चले। माँ के जाने के बाद से सारा झंझट दूर हो गया, फिर कोई गण्डगोल नहीं हुआ। उसका

यह विश्वास है कि माँ की विशेष कृपा से हो सारी सुव्यवस्था हो गयी तथा उसका नर्सिंग होम भी ठीक से चल रहा है। माँ को ले जाकर विधा ने वहाँ माँ की आरती की और प्रसाद वितरण किया।

आज भोर के वक्त माँ रेल से जयपुर चली जायँगी। माँ के साथ परमानन्द स्वामी, बुनी, उदास, शोभा आदि कई लोग हैं।

१७ फरवरी, १९६७

जयपुर से प्राप्त बुनी के पत्र से माँ का समाचार मिला। परसों रात को १२॥ बजे के लगभग माँ जयपुर पहुँची। स्टेशन पर अनेक स्त्री-पुरुष माँ का दर्शन करने आये थे।

जयपुर में माँ

माँ को दादूपंथियों के एक विराट आश्रम में ले जाया गया। माँ के रहने का इंतजाम वहीं किया गया था। स्थान अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त प्रशस्त आश्रम हैं, आश्रम का बाग भी बहुत बड़ा और मनोरम है।

श्री हरि बाबाजी, अवधूतजी आदि मदन मोहन वर्मा जी के निवास स्थान पर हैं। साथ में रास पार्टी भी है।

श्री वर्मा सपत्नीक माँ के बहुत दिनों के परिचित भक्त हैं। आप पहले राजपूताना विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार थे। आजकल आप राजस्थान के पब्लिक सर्विस कमीशन के मेम्बर हैं। आपके मकान के आंगन में ही शामियाना लगाकर सत्संग और रास का प्रबन्ध किया गया है। माँ तथा उनके साथ आये लोगों को किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो, इस बात की खोजखबर वर्मा साहब स्वयं बराबर ले रहे हैं।

जयपुर जाते समय मार्ग में माँ मेरे लिए पत्र लिखवाती रहीं। माँ जानना चाहती हैं—"दीदी कैसी है। स्फूर्ति में रहना।" इत्यादि। माँ की कृपा असीम है। किस प्रकार जल्द मैं स्वस्थ हो जाऊँ, इस ओर माँ का ख्याल बराबर बना रहता है।

२० फरवरी, १९६७

आज चार दिनों के बाद माँ का समाचार प्राप्त हुआ। जयपुर में १८ तारीख तक रहने के बाद कुचामन चली गयीं। इसके पहले वाले दिन दोपहर के सत्संग के बाद माँ को श्रीमती सिनहा के लड़के के घर तथा राजू के यहाँ ले जाया गया था। तीसरे पहर पुनः गाँधी नगर स्थित डाक्टर गुप्त जी के निवास स्थान पर कुछ देर के लिये ले जाया गया था। उनकी पत्नी अत्यन्त अस्वस्थ हैं। स्वयं आकर माँ का दर्शन करने में असमर्थ थीं, इसलिए माँ को ले जाया गया था। डा० गुप्त के यहाँ से माँ को जयपुर के प्रसिद्ध गोविन्द जी के मन्दिर में ले जाया गया। कहा जाता है कि गोविन्द जी अत्यन्य जाग्रत देवता हैं। लोगों का कहना है कि मुसलमानों के आक्रमण के बाद वृन्दावन स्थित गोविन्द जी की मूर्ति को जयपुर में ले आया गया था।

जयपुर के गोविन्द मन्दिर में माँ

तीसरे पहर माँ बहुत देर तक "हे भगवान, हे भगवान" तथा "राम, राम, राम, राम" यही नाम गाती रहीं। जयपुर से रवाना होने के एक दिन पूर्व भी सत्संग हुआ था।

एक सज्जन ने माँ से पूछा कि माया कहाँ से आती है? माँ

हँसकर बोलीं—"माया के भीतर से माया कहाँ से आती है, समझना कठिन है। उन्हें जानने का प्रयत्न करो। अपने को जानने का अर्थ ही है उन्हें जानना। अपने को पा जाने पर सभी प्रश्नों का समाधान हो जाता है। माया में रहते हुए माया को जानना कठिन है, बाबा।"

माया के भीतर रहते हुए माँ को समझना कठिन है।

एक अन्य सज्जन ने प्रश्न किया—"अपने को जानने का क्या उपाय है।"

माँ ने प्रत्युत्तर में कहा—"गुरु ने जो मार्ग बताया है, उसी में चलने का प्रयत्न करो! बैठे मत रहो। चलने की चेष्टा करो। देश सेवा, गृह लक्ष्मी की सेवा, बाल-गोपाल-सेवा, पति सेवा—वे तो बहुत रूपों में हैं। केवल खाने-सोने में समय मत गँवाओ। अमूल्य मनुष्य जन्म वृथा चिन्ता में नष्ट मत होने दो। धर्मशाला में वास न करके अपने घर जाने का प्रयत्न करो।"

माँ इसी प्रकार की बहुत सी बातें कहती रहीं।

जयपुर में २-३ दिन रहने पर माँ काफी स्वस्थ हो गयीं। स्थान अत्यन्त एकान्त और सूखा है। बुनी ने लिखा है कि अगर माँ यहाँ कुछ दिन और ठहर जातीं तो और अच्छा होता।

परसों माँ मोटर द्वारा ८॥ बजे कुचामन की ओर रवाना हो गयीं। एक मोटर में माँ, उदास, बुनी और स्वामीजी थे। राजा प्रताप सिंह इस गाड़ी को स्वयं चला रहे थे। दूसरी गाड़ी में हरिबाबा जी, अवधूत जी आदि थे। माँ के साथ जानेवाले अन्य लोगों को ट्रेन और बस द्वारा आगे ही भेज दिया गया था।

कुचामन की ओर माँ

कुचामन राज्य जयपुर से ९० मील दूर है। कुचामन पहुँचने के १०-१२ मील दूर से ही पहाड़ पर स्थित एक किला को देखकर माँ ने प्रताप सिंह भाई से पूछा कि यह दुर्ग किसका है।

कुचामन राज्य की प्रतिष्ठा का इतिहास

प्रताप सिंह भाई ने उसका इतिहास सुनाया। उन्होंने बताया कि दुर्ग उनके पूर्व पुरुषों का है। एक बार दो भाइयों के बीच आपस में झगड़ा हो जाने के कारण एक भाई घर छोड़कर घर से चलकर जाते-जाते उन्होंने देखा कि इस पहाड़ी पर धुंआ निकल रहा है। वे जब उस धुंआ के समीप पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक वृद्ध महात्मा बैठे हैं। ज्योंही वे महात्मा के निकट पहुँचे त्योंही उन्होंने उनका नाम लेकर पूछा कि यहाँ क्या करने आये हो? राजा साहब के उक्त पूर्व पुरुष का नाम जालिम सिंह था, उन्होंने महात्मा जी से कहा कि मैं रोटी की तलाश में आया हूँ। जहाँ मुझे रोटी मिलेगी मैं वहीं रहूँगा। तभी महात्मा जी ने तीन पत्थर दिखाते हुए कहा कि इसी जगह किला बनाओ। उन्हीं के निर्देशानुसार जालिम सिंह ने वहाँ किला बनवाया। यही है कुचामन राज्य की उत्पत्ति की प्रारम्भिक कहानी।

उक्त महात्मा शिवविश्वेश्वर नाथ बाबा के नाम से प्रसिद्ध थे। महात्माजी द्वारा व्यवहृत खड्ग, योगदण्ड आदि किले के भीतर अभी तक सुरक्षित रखा गया है। बाद में इस दुर्ग के भीतर मन्दिर की स्थापना की गयी। महात्माजी के निधन के पश्चात् उन्हें उसी स्थान पर समाहित किया गया।

खैर, माँ की मोटर कुचामन की ओर बढ़ती हुई १२॥ बजे के लगभग राज्य से ३ मील दूर ही रुक गयी। सुदूर एक बृहद् झील

है। उसके बगल ही में माँ, हरिबाबाजी आदि के लिए विश्राम का इंतजाम किया गया था। यहीं सभी लोगों के लिए जलपान का इंतजाम किया गया था। यहाँ से माँ और हरिबाबाजी को सुसज्जित मोटर में बैठाकर जलूस के साथ राज्य के भीतर ले जाया गया। कितना मनोहर दृश्य था। गाड़ी के भीतर माँ, अवधूतजी और हरिबाबाजी। परमानन्दजी सामने बैठे थे। महिलाओं के लिए एक पृथक् गाड़ी थी। माँ की गाड़ी के पीछे राजा प्रताप सिंह स्वयं राज पोशाक से सज्जित होकर चंवर व्यंजन करते रहे। दूसरी ओर छोटा भाई एक बहुमूल्य छतरी माँ के सिर के ऊपर लगाये खड़ा था। यह विराट आयोजन अपूर्व था। पूर्णांगीण राजोचित अभ्यर्थना। यह सब घटना देखकर परमानन्द स्वामी, बुनी आदि को मण्डी राज्य की बात याद आ गयी। एक बार मण्डी राज्य के महाराजा अपने राज्य में माँ को ले गये थे। उस बार भी इसी प्रकार विराट् आयोजन किया गया था।

कुचामन में आदरपूर्ण स्वागत

बहरहाल, जलूस आगे बढ़ता गया। कुचामन राज्य के भीतर सर्वत्र बड़े-बड़े अक्षरों में "जय माँ जय माँ" लिखा हुआ था। कुछ दूर-दूर पर फूलों के तोरण द्वार बनवाये गये थे। माँ की गाड़ी जब राज्य की सीमा में प्रवेश करने लगी तब उनके सम्मान में ७ तोप दागे गये। हजारों नर-नारियों ने पंक्तिवार खड़े होकर माँ और महात्माओं के ऊपर पुष्प-वृष्टि करते हुए हार्दिक स्वागत का परिचय दिया। यह जलूस इतना लम्बा और जनता की इतनी भीड़ थी कि अनेक स्वयंसेवक तथा पुलिस की सहायता से रास्ता साफ करवा कर गाड़ी आगे बढ़ानी पड़ रही थी। इस तरह का विराट् स्वागत इसके पूर्व इस राज्य में किसी का नहीं हुआ है। माँ के ठहरने का इंतजाम एक

विराट् मन्दिर में किया गया था। प्रेमा (कुचामन की रानी) ने माँ के लिए सारा आयोजन प्रस्तुत करवाया। यद्यपि यहाँ दास-दासियाँ उपस्थित थे, पर प्रेमा अधिकतर कार्य अपने हाथ से करने का अवसर पाकर अपने को कृतार्थ समझ रही थी। माँ को किसी प्रकार की असुविधा न हो इस ओर इसका ध्यान बराबर बना था।

प्रेमा राज्य की रानी अवश्य है, फिर भी उसका स्वभाव अत्यन्त मधुर और निरभिमान है। प्रेमा से हमलोगों का परिचय बहुत पुराना है। इसके पिता जी रहयांर के राजा हैं। वे तथा प्रेमा की माता दोनों ही हमलोगों के पूर्व परिचित हैं। वे दोनों माँ के निकट कई बार आ चुके हैं।

समाचार मिला कि कल माँ को पालकी में बैठाकर किला दिखाने के लिये ले जाया गया था। आपके साथ राजा प्रताप सिंह भी थे। वे माँ को चारों तरफ घुमा-घुमा कर सब जगह दिखला रहे थे। राजा और रानी दोनों ही माँ की पालकी के साथ पैदल गये थे। वहाँ अनेक दर्शनीय सामग्रियाँ हैं। महल सुनहले रंग से रंगा गया है। उसका रंग आज भी इतना सुन्दर है कि लगता है जैसे दो-तीन दिन पहले इसकी रँगाई हुई है।

कुचामन राज्य में विराट् आयोजन किया गया था। सभी लोगों की यह इच्छा थी कि माँ यहाँ कम से कम एक सप्ताह ठहर जाँय। राजा-रानी से लेकर सभी लोगों की यह हार्दिक इच्छा थी। किन्तु माँ एक रात ठहरने के बाद जोधपुर चली जायँगी, क्योंकि श्री हरि बाबाजी पहले से ही २० तारीख को जोधपुर पहुँच जाने का प्रोग्राम बना चुके थे। माँ के आगमन के उपलक्ष्य में राजा प्रतापसिंह जी के अनुरोध पर वृन्दावन से स्वामी अखण्डानन्द

जी, हृषीकेश से शुकदेवानन्द जी आदि यहाँ आये हैं। प्रोग्राम पहले से ही बन चुका था, फिर भी तय हुआ कि जोधपुर से वापस आते समय माँ एक वक्त कुचामन रुक जायँगी।

२२ फ़रवरी, १९५७

आज बुनी का पत्र प्राप्त हुआ। १९ तारीख को रात को ९ बजे माँ कुचामन से ट्रेन द्वारा जोधपुर के लिये रवाना हुईं और २० तारीख की भोर में पहुँच गयीं। श्री हरि बाबाजी वगैरह उसी दिन मोटर से रवाना हुए। यह पहले ही तय हो गया था कि वे लोग जब आ जाँयगे तब स्टेशन से माँ को लेकर जलूस के साथ चला जायगा। उन लोगों के पहुँचने में देर होने के कारण माँ को स्टेशन के वेटिंग रूम में लगभग ३ घंटे तक बैठे रहना पड़ा। बाद में जब सभी महात्मा आये तब माँ रवाना हुईं।

जोधपुर में माँ

वहाँ माँ के ठहरने के लिये जो मकान ठीक किया गया था, उसमें वैसी सुविधाजनक व्यवस्था न रहने के कारण बाद में एक स्कूल में ठहराने की व्यवस्था की गयी।

माँ की तबीयत ठीक नहीं है, वे दिन में दो बार सत्संग में जाती हैं। बाकी समय स्कूल में रहती हैं। अनेक स्त्री-पुरुष माँ का दर्शन करने आते हैं।

आज रात को माँ पुनः कुचामन की ओर चल देंगी। पहले के निश्चय के अनुसार माँ एक वक्त वहाँ रहने के बाद आगामी कल रात को वृन्दावन चली जाने वाली हैं।

२६ फरवरी, १९५७

वृन्दावन से पत्र आया है। माँ परसों सवेरे वृन्दावन आश्रम में कुशलपूर्वक पहुँच गयीं। भरतपुर स्टेशन पर माँ के लिये मथुरा के भार्गव जी ने गाड़ी भिजवायी थी। वहीं से माँ को मोटर द्वारा वृन्दावन ले जाया गया।

यहाँ से जाते समय माँ भइया से कह गयी थीं कि मेरे एक्स-रे प्लेटों को डा० वालिगा को अवश्य दिखाया जाय। इसी के अनुसार डा० वालिगा को प्लेट दिखाये गये। उन्होंने पुनः प्लेट लेने के लिए कहा है।

नानावती अस्पताल की एक्स-रे मशीन खराब हो गयी थी, इसलिए स्थानीय जर्मन डा० के द्वारा मेरे प्लेट लिये गये। डा० क्रोनेनवार्गा एक प्रसिद्ध एक्स-रे विशेषज्ञ हैं। इस बीच वे दो-तीन बार एक्स-रे प्लेट ले चुके हैं। अस्पताल में एक्स-रे प्लेट लेने का ४०) रुपया लगता है, किन्तु जर्मन डा० प्रति प्लेट १५०) रुपया लेते हैं।

२७ फरवरी, १९५७

वृन्दावन में गीता-भवन तथा भागवत-भवन

आज शिवरात्रि है। बुनी के पत्र से पता चला कि वृन्दावन आश्रम में माँ की उपस्थिति में 'गीता-भवन' तथा 'भागवत-भवन' का गृह प्रवेश होगा।

चारखारी की राजमाता ने अपने स्वर्गीय पति महाराजा अरिमर्दन सिंह की पुण्य स्मृति में गीता-भवन के निर्माणार्थ २५०००

रु० दिया है। इसी के साथ ही नेपाल के राज परिवार की कन्या तथा नेपाल के भूतपूर्व राजदूत ने स्वर्गीय राजा विजय शमशेर बहादुर की स्मृति में श्रीमद्भागवत-भवन का निर्माण करवाया है। उन्होंने भी इस कार्य के लिए २५,००० रु० दिया है। श्रीमद्भागवत-भवन अभी सम्पूर्ण नहीं हुआ है। सम्पूर्ण करने में अभी और कई हजार रुपयों की जरूरत होगी।

वृन्दावन में माँ की उपस्थिति में शिवरात्रि

पिछले वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर आश्रम के शिव मन्दिर में पाँच नर्मदेश्वर शिव-लिंगों की स्थापना हुई थी। इस बार वहाँ माँ की उपस्थिति में शिवरात्रि उद्यापित होगा, यह समाचार पाकर जिस दिन माँ वहाँ पहुँचीं, उसी दिन तीसरे पहर विभिन्न जगहों से बहुत से लोग आकर हाजिर हुए। काशी से दीदीमाँ, मौनीमाँ, नारायण स्वामी आदि उसी दिन तीसरे पहर वृन्दावन पहुँचे। मैं स्वयं पहली मार्च को माँ के निकट वृन्दावन जाऊँगी।

१ मार्च, १९५७

आज मेरा वृन्दावन में माँ के निकट जाने की बात है। मैं वृन्दावन के उत्सव में भाग ले सकती हूँ, यह बात स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी। करुणामयी माँ की असीम कृपा मेरे ऊपर सर्वदा वर्षित हो रही है।

जर्मन डा० द्वारा मेरा एक्स-रे लिया गया है। डा० वालिगा आदि लोगों ने प्लेटों को देखने के बाद कहा कि अब मुझ में कोई रोग नहीं है।

यहाँ आने पर नानावती अस्पताल में जो प्लेट लिये गये थे, उन प्लेटों को देखने पर डा० सेठ वगैरह विशेष चिन्तित हो उठे थे। डा० सेठ के साथ बड़ौदा के डा० शिवमूर्ति एवं अन्य तीन बड़े-बड़े डाक्टर मेरे प्लेट में नये दाग देखकर संदेह प्रकट कर रहे थे कि हड्डियों तथा अन्य स्थानों में रोग का सूत्रपात है। इधर जब कि मुझे न तो बुखार या अन्य कोई शिकायत है।

बहरहाल, प्लेटों को देखने के बाद एक मत से निश्चय किया कि मुझे पुनः ७-८ महीना प्लास्टर में रहना पड़ेगा।

इधर भइया की विशेष इच्छा थी कि बड़े सर्जन डा० वालिगा को मेरे प्लेट दिखाये जायँ। स्वयं माँ बम्बई से रवाना होने से पहले यह कह गयी थीं कि जो दाग दिखाई पड़ रहे हैं- वह गैस की छाया के दाग हैं। फलस्वरूप पुनः नये सिरे से प्लेट लिये गये। डा० वालिगा ने ठीक ही कहा है, इसबार प्लेट में किसी किस्म के दाग नहीं हैं। बिल्कुल साफ स्पष्ट प्लेट बने हैं। लिहाजा इस बार सभी डाक्टरों ने एक मत होकर कहा कि पहले जिस स्थान पर रोग था, वह 'पूर्ण रूप से ठीक हो गया है। फिर भी अभी सावधानी बरतने की आवश्यकता है, इसलिये जरूरी है कि कुछ दिनों तक बेल्ट का प्रयोग करती रहूँ। माँ की कृपा से मैं रोगमुक्त हो गयी।

बहरहाल, आज शाम को फ्रण्टियर मेल से मथुरा की ओर रवाना हुई। भइया, लीला आदि बहुत से लोग स्टेशन तक गाड़ी पर बैठाने आये थे। मेरे साथ माखन, पारुल, तुलसी और ठाकुमाँ चल रहे थे।

२ मार्च, १९५७

आज तीसरे पहर पाँच बजे के लगभग वृन्दावन आश्रम में

माँ के निकट पहुँची। आते ही सुना कि शिवरात्रि के दिन गीता-भवन और भागवत-भवन का प्रवेश उत्सव बड़े समारोह के साथ हो गया है।

गीता-भवन तथा भागवत-भवन का प्रवेश उत्सव

उस दिन भोर के समय माँ ने श्री हरिबाबाजी, अवधूत जी आदि महात्माओं को साथ लेकर नारायण शिला, पूर्ण मंगल घट, श्रीमद्भागवत और गीता के साथ इन दोनों नवनिर्मित भवनों के भीतर प्रवेश किया था। दोनों ही स्थानों में वास्तु पूजा एवं होम की व्यवस्था हुई थी। उसी दिन से गीता-भवन में नित्य गीता पाठ का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया है। भागवत-भवन में भी अखण्ड रूप से भागवत पाठ जारी है। पाठ कर रहे हैं—ब्रह्मचारी कान्तिभाई, कुसुम, भारद्वाज, शाश्वतानन्द स्वामी, शिवानन्द, पद्मदत्तजी, योगेश दादा और कलकत्ता के डा० नलिनी ब्रह्म।

माँ एक दिन घर में बैठी थीं, अचानक माँ को यह ख्याल हुआ कि नये भागवत-भवन में अखण्ड गीता पाठ हो सकता है या नहीं। उस समय माँ के निकट डा० नलिनी ब्रह्म बैठे थे। माँ के मुंह से यह बात निकलते ही वे राजी हो गये। इस प्रकार अखण्ड पाठ शुरू हुआ।

शिवरात्रि के दिन पूजा का समस्त आयोजन माँ स्वयं खड़ी होकर करवाती रहीं। मन्दिर के भीतर पूजा करते रहे—कुसुम, भारद्वाज, कान्तिभाई, हरप्रसाद और देहरादून के परशुराम जी और बाहर नाट मन्दिर के एक ओर पुरुष और एक ओर स्त्रियाँ। सभी लोग चार पहर की पूजा करते रहे।

रात १२ बजे तक नये भागवत-भवन में रासलीला होती

रही। इसके बाद प्रति प्रहर की पूजा समाप्ति के बाद नाम चलता रहा। माँ स्वयं भी प्रायः दो घण्टे तक माँ के अनुकरणीय सुर में नाम करवाती रहीं। रात भर माँ स्वयं मन्दिर में उपस्थित थीं। इस तरह अत्यन्त सुन्दर रूप में शिवरात्रि उद्यापित हो गया।

आज तीन दिन से नित्य सवेरे ८ बजे से ११॥ बजे तक भागवत-भवन में श्री गौरांग महाप्रभु की लीला हो रही है। श्री हरि बाबाजी आदि महात्माओं का दल रोज आ रहा है।

३ मार्च, १९५७

आज से श्रीमद्भागवत सप्ताह शुरू हुआ। भागवत-भवन में व्यासासन बड़े ही सुन्दर ढंग से सजाया गया है। सम्पूर्ण आश्रम विभिन्न रंग के पताकाओं से सज्जित है। गौर-निताई मन्दिर, शिव-मन्दिर, गीता-भवन तथा भागवत-भवन के ऊपर विचित्र वर्ण के सिल्क की पताकाएँ फहरा रही हैं। समस्त आश्रम ने इन सबके समन्वय से एक अपूर्वश्री धारण कर लिया है।

सप्ताह में मूल पाठ किया श्रीनाथ शास्त्रीजी ने। इसके पहले आप काशी आश्रम में तथा अन्यत्र भी माँ की उपस्थिति में भागवत सप्ताह कर चुके हैं। मूलधारक बने हैं—ब्रह्मचारी कान्तिभाई। इसके साथ ही और भी १०८ व्यक्तियों ने समवेत भाव से भागवत पाठ आरम्भ किया है। प्रत्येक पाठक को पीत वर्ण का रेशमी वस्त्र तथा उत्तरीय, आसन, पंचायत, माला आदि दिया गया है।

तीसरे पहर व्याख्या श्री नाथजी ही करते हैं। दोनों जून श्री हरि बाबाजी आकर पाठ के निकट बैठते हैं। इसके अलावा जगमोहन मन्दिर में श्री रामचन्द्र जी की तस्वीर रखकर "राम-

अर्चना" भी आरम्भ हुई है। तीसरे पहर जब पाठ समाप्त हो जाता है तब श्री हरि बाबाजी अपने भक्तों के साथ यहाँ कीर्तन करते हैं। भागवत अनुष्ठान सम्पूर्ण निष्काम रूप से कराया जा रहा है। इस कार्य के लिए महारतन ने पाँच हजार रुपया दान दिया है।

गीता-भवन में भी पृथक रूप से एक और श्री मद्भागवत् सप्ताह चल रहा है। इसे करा रहे हैं—डा० नलिनी ब्रह्मजो। उनके कराने के कारण निम्नलिखित हैं—

आज से लगभग दो वर्ष पहले कलकत्ता की सड़क पर मोटर से दब जाने के कारण उनके पुत्र का निधन हो गया। यह भागवत सप्ताह उसकी आत्मा की सद्गति के लिए कराया जा रहा है। इसके मूल पाठक हैं—नित्यानन्द भट्ट, श्रोता नलिनी दादा स्वयं, जापक काशी के विशु, महाबीर त्रिवेदी तथा पाठक के पुत्र हैं

गीता-भवन में भी इसी प्रकार राम अर्चना जारी है। इस प्रकार आश्रम में लगातार अनेक उत्सव चल रहे हैं। फलस्वरूप आश्रम कर्ममुखर बना हुआ है। माँ चारों तरफ घूम फिर कर सब कुछ की देखभाल कर रहीं हैं।

४ मार्च, १९५७

आज माँ का शरीर अचानक ज्यादा खराब मालूम हो रहा है। कल माँ अत्यधिक परिश्रम करती रहीं। यही वजह है कि आज सवेरे माँ भागवत पाठ की जगह जाकर नहीं बैठीं। तीसरे पहर भागवत व्याख्या के समय श्री हरिबाबाजी, स्वामी अखण्डानन्दजी आदि महात्मा गण आये थे, किन्तु माँ का जाना वहाँ नहीं

हो सकता। गले का टान्सिल इतना फूल गया था कि कंठनाली अवरुद्ध हो गया था। गले में भयानक पीड़ा थी। गले के नीचे कोई चीज उतर नहीं रही है। बदन भी कुछ गरम है।

जयपुर से वहाँ के डाइरेक्टर ऑफ हेल्थ डा० शर्मा आये हैं। उन्होंने माँ के गले की जाँच करने के बाद चिन्ता प्रकट की। उन्होंने कहा कि जल्द से जल्द पेन्सिलीन का इन्जेक्शन लगाना जरूरी है।

सत्संग के बाद हरि बाबाजी आदि अनेक व्यक्ति माँ को देखने आये। चूँकि माँ के गले से आवाज नहीं निकल रही थी, इसलिए इन लोगों के साथ वे बातचीत नहीं कर सकीं। दिन भर माँ सोयी रहीं। पान, आहार सब कुछ बन्द रहा। माँ के शरीर की यह हालत देखकर सभी लोग अत्यन्त उद्विग्न हो उठे हैं। क्या किया जाय यह कोई सोच नहीं पा रहा है। इधर जब कि माँ के ऊपर किसी प्रकार की दवा या इन्जेक्शन का प्रयोग नहीं हो सकता। माँ स्वयं तुलसी की पत्ती, नीम की पत्ती, आदी, कच्ची हल्दी और कई लवंग उबालकर, उसमें थोड़ा सा निमक डलवाकर धीरे-धीरे कई बार कुल्ला करती रहीं। गले में एक टुकड़ा रुई बंधवायी। माँ अपने ख्याल से जितनी जल्दी स्वस्थ हो जांय उतना ही हम लोगों के लिए अच्छी बात है।

रात ९ बजे के बाद डा० शर्मा पुनः देखने आये। माँ के गले की जाँच टार्च द्वारा करने के बाद सहसा वे चौंक कर बोले—

माँ की लीला समझना कठिन है

"क्या बात है यह तो मिराकेल मालूम पड़ता है। सुबह गले की हाल देखकर मैं तो घबड़ा गया था। लेकिन अब देख रहा हूँ कि टान्सिल ठीक है, सूजन भी नहीं है।

कई घण्टे के अन्दर इतना परिवर्तन कैसे हो सकता है ? माताजी की लीला माँ ही बता सकती हैं।"

इतना कहने के बाद वे माँ के चरणों में बार-बार प्रणाम करने लगे। हम सब विस्मय से हतवाक् से खड़े थे। माँ की असीम अनन्त-लीला का पार कौन पा सकता है ?

५ मार्च, १९५७

आज माँ के शरीर की हालत कल की अपेक्षा अच्छी है। आज तीसरे पहर माँ सत्संग में उपस्थित थीं। दोपहर को २ बजे से ५ बजे तक श्री नाथजी श्रीमद्भागवत की व्याख्या करते हैं। इसके बाद एक घण्टे तक लगातार स्वामी अखण्डानन्दजी उसका सार-मर्म संक्षेप में नित्य समझाते हैं। डा० शर्मा जयपुर से सप्ताह में भाग लेने के लिए आये हैं। माँ आज उन्हें एक तुलसी की माला देते हुए बोलीं—"पिताजी, माला जप करके इसको (अपने शरीर को दिखाती हैं) ले लो।" इसके पहले इस तरह की बातें माँ की मुंह से हमलोगों ने कभी नहीं सुना था। माँ कब किस उद्देश्य से किसे क्या कहतो हैं। यह हमलोगों के सामान्य बुद्धि के बाहर को बात है।

६ मार्च, १९५७

आज माँ सवेरे उठकर बिछौने के ऊपर बैठी हुई थीं। भक्तों में कुछ लोग माँ की आरती करते रहे। माँ उनके गले में माला पहनाती रहीं। माँ के हाथ से प्रसाद के रूप में माला पाकर लोग अपने को कृतकृतार्थ अनुभव कर रहे थे। माँ के आदेशानुसार एक ओर बैठकर मैं मिठाई-प्रसाद बाँट रही थी।

वृन्दावन के योगेन दादा उस समय दूर खड़े थे। माँ ने उन्हें बुलाया जब वे पास आकर माँ को प्रणाम करने लगे तब माँ ने मुझसे कहा—"दीदी, पिताजी का हाथ भर दो।" मैंने इनके दोनों हाथ भर गये थे, फिर भी वे कह रहे थे—"और दीजिए।"

योगेन दादा का भाग्य

माँ उन्हें पास बुलाकर उनके दोनों हाथों के ऊपर अपने हाथ रखती हुई बोलीं—"लो पिताजी, मुझे ले लो।" इतना कहकर माँ खूब हँसने लगीं। हम लोग योगेन दादा के भाग्य को प्रशंसा बिना किये नहीं रह सके।

९ मार्च, १९५७

आज आश्रम में स्वामी अखण्डानन्दजी, स्वामी कृष्णानन्दजी, स्वामी शरणानन्दजी आदि ३० महात्माओं को माला, चन्दन और वस्त्र देकर उनका सादर स्वागत करते हुए दोपहर को भोजन कराया गया। माँ स्वयं उपस्थित रहकर उनके स्वागत सत्कार में भाग लेती रहीं।

१० मार्च, १९५७

आज भागवत सप्ताह समाप्त हो गया। तीसरे पहर व्याख्या समाप्ति के बाद लोगों ने पाठक को भेंट दिये। सबसे पहले महा-रतन ने एक थाली में जाड़े का कपड़ा, रेशमी धोती और चादर, फल, सोने की अगूंठी और नगद १५१) रु० भेंट किया। आश्रम की ओर से ब्रह्मचारी भारद्वाज ने फल और नगद २५) रु० भेंट किया। बाकी मौजूद राजा-रानियों ने अपनी-अपनी भक्ति के अनु-

सार श्री नाथजी को भेंट दिये। बाद में सुना कि पाठक को सब कुछ मिलाकर नगद १३००) रु० मिले हैं और जो सामान मिले हैं उनकी कीमत ७००-८००) रु० के लगभग है।

गीता-भवन में नलिनी दादा का जो भागवत् सप्ताह चल रहा था, वह भी आज समाप्त हो गया। वहाँ भी भेंट में पंडित जी को लगभग २००) रु० नगदी तथा वस्त्र आदि मिले।

११ मार्च, १९५७

आज श्रीमद्भागवत सप्ताह के समाप्ति के उपलक्ष्य में यज्ञ की पूर्ण आहुति हो गयी। पूर्ण आहुति के समय माँ मौजूद थीं। १०८ पाठकों में प्रत्येक को २९) रु० दक्षिणा, निरीक्षकों को ३१) और आचार्यजी को ५१) रु० दिया गया। सभी व्रतियों को आदर के साथ भोजन कराने के बाद २) रु० की दर से दक्षिणा दी गयी। इसी के साथ ही श्री हरि बावाजी के आश्रम के १६ साधुओं और ब्रह्मचारियों को भोजन कराने के बाद प्रत्येक को वस्त्र भेंट किया गया। यह सारा दृश्य देखने के बाद सभी लोग एक स्वर से कहने लगे कि इस तरह शास्त्रीय विधि के साथ तथा इस तरह राजसिक रूप से ऐसे अनुष्ठान अब दिखाई नहीं देते।

१२ मार्च, १९५७

आज तीन दिन से वृन्दावन धाम के विभिन्न मन्दिरों के गोस्वामी और विभिन्न प्रसिद्ध वक्तागण भागवत-भवनमें भागवत-के बारे में भाषण दे रहे हैं। स्वामी अखण्डानन्दजी ने भी भाषण दिया। सभी वक्ताओं को रेशमी नामावली, फल और मिठाई विदाई में दी गयी।

निम्बार्क आश्रम के महन्त प्रेमदासजी काठियाबाबा के नये आश्रम के महन्त श्रीमत् धनंजय दासजी, मथुरा के भार्गव जी के गुरुदेव श्री किशोरीलालदासजी, श्री चक्रपाणिजी आदि कुछ लोगों को आश्रम में निमंत्रित करते हुए उन्हें भोजन कराया गया और वस्त्र भेंट दिये गये। तीसरे पहर भागवत-भवन में श्री हरिबाबाजी और माँ की उपस्थिति में भक्तलीला अभिनीत हुआ। लीला देखकर सभी आनन्दित हुए।

१३ मार्च, १९५७

आज सवेरे रामकृष्ण मिशन के एक वृद्ध संन्यासी "भक्त महाराज" माँ का दर्शन करने आये। उनके साथ माँ की बातचीत होती रही। चलते समय उन्होंने जमीन पर सिर टेकते हुए माँ को प्रणाम किया।

माँ के सम्बन्ध में भक्त महाराज की उक्ति

इसके बाद लोगों से कहने लगे--"इसबार ये मातृ स्वरूप धारण करने आयीं हैं। आप लोग इनमें ही अपने-अपने इष्ट का दर्शन कीजिये। माँ के साथ सम्बन्ध स्थापित कीजिये—जन्म जन्मान्तर का नित्य सम्बन्ध।"

कुचामन के राजा प्रताप सिंह आदि कुछ लोग बाद में उनसे मिलने गये। इन लोगों से भी उन्होंने कहा—"माँ के निकट शिशु बनकर रहो, वे सभी को पार कर देंगी।"

भक्त राजजी यहाँ के किसी धर्मशाला में ठहरे हुए है। शाम के बाद वे पुनः कई आदमियों के साथ वे भक्तलीला देखने के लिए आये। महाराज का स्वभाव सचमूच बहुत ही मधुर है। माँ के प्रति उनकी श्रद्धा भक्ति असाधारण है।

श्री किशोरीलालदास बाबाजी की शिष्या श्रीमती कस्तुरी देवी

आज माँ का दर्शन करने आयीं है। उनकी जबानी माँ का दर्शन करने के सम्बन्ध में अनेक बातें सुनने में आयी।

एक विचित्र घटना

एक दिन रात को वे काफी रो रही थीं। प्रभु की कृपा कैसे मिले, इसका दुःख उन्हें था। साधन-भजन कुछ नहीं हो रहा है। बाद में उन्होंने स्वप्न में देखा कि एक शुभ्र वस्त्र परिहिता स्त्री मूर्ति आयी है और उनके साथ गैरिक वस्त्र परिहिता एक कन्या भी है। उक्त कन्या का हाथ पकड़कर कहने लगीं––"तुम रो क्यों रही हो? यही तुम्हारे प्रभु हैं। तुम जल्द मेरे साथ आओ।"

यह स्वप्न लगातार दो दिनों तक आप देखती रहीं। इसके बाद आज कई दिन हुए इन्होंने सुना कि वृन्दावन धाम में माता आनन्दमयी नामक एक देवी आयीं हैं। यही वजह है कि ये माँ का दर्शन करने आयी हैं। घटना-चक्र से जिस वक्त वे माँ के निकट आयीं, उस समय माँ के समीप उदास बैठी हुई थी। उदास को देखते ही सहसा चौंक उठी इसी गैरिक वस्त्र परिहिता लड़की को दो दिन स्वप्न में वे लगातार देख चुकी हैं। यह देखने के बाद उन्होंने माँ की ओर गौर से देखा। तब उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि अपने स्वप्न में जिस स्वेत वस्त्र परिहिता मूर्ति को देख चुकी हैं, उनसे इनकी हुबहू मेल खाती है। यह सब देखकर वे अभिभूत हो उठी।

इसके बाद से उक्त महिला का माँ के प्रति अस्वाभाविक रूप से आकर्षण हो गया है। यह होना भी स्वाभाविक है। इसके बाद से जब कभी इन्हें समय मिलता है तब माँ के पास चली आती हैं और जप वगैरह करती हैं। एक दिन जप करते समय वे माँ को

चतुर्भुजा देवी मूर्ति के रूप में देख चुकी हैं। एक दिन माँ को श्रीमूर्ति के रूप में देख चुकी हैं। इस तरह के दर्शन पूर्व उनके विकट गुलाव और कस्तुरी की मंहक आती है। इस तरह की बहुत सी बातें वे कहती रहीं।

रात के लगभग १० बज चुके हैं। माँ के कमरे में कुछ लोग बैठे हैं। माँ थोड़ी-बहुत बातचीत कर रही हैं। ठीक इसी समय नारायण स्वामी धीरे-धीरे कमरे में आकर मुझसे बोले—"दीदी एक बात सुनिये, सुविधानुसार माँ से भी कहियेगा।"

मैंने महा—"क्यों? आप खुद ही कहिये न माँ तो बैठी हैं।"

मेरी बात सुनकर माँ नारायण स्वामी जी की ओर देखती हुई बोलीं—"कौन सी बात? नारायण!"

नारायण स्वामीजी ने माँ से कहा—"माँ आज बिशु गोविन्द मन्दिर में जाकर वहाँ तुलसी कीं कण्ठी पहन कर आया है। दिन भर से उसने कुछ खाया नहीं है। वहुत जप कर रहा है।"

यह बात सुनकर माँ ने कुसुम से कहा—"बिशु को बुला लाओ तो।"

कुसुम जाकर बिशु को साथ ले आयी। बिशु ने कहा कि प्रत्येक वर्ष गोविन्द द्वादशो के दिन जहाँ कहीं भी रहता हूँ, वहाँ किसी न किसी गोविन्द मन्दिर में जाकर गोविन्द दर्शन करता हूँ। इस बार वृन्दावन धाम में हूँ, इसलिये आज गोविन्द जी के मन्दिर में दर्शन करने गया था।

मन्दिर में दर्शन करने के बाद ज्यों ही खड़ा हुआ त्यों ही किसी ने मेरे गले में कण्ठी बाँध दिया। बिशु ने उससे पूछा—"यह क्या है?"

उसने जवाब दिया—"बाबा, माला धारण कर लो न।"

बिशु ने कहा—"धारण कर सकता हूँ, पर शर्त यह है कि अगर कभी टूट गयी तो फिर से गूंथकर नहीं पहनूँगा।" उस व्यक्ति ने इसकी स्वीकृति दे दी।

यह घटना सुनने के वाद माँ के ख्याल में वाजितपुर की एक पुरानी घटना याद आ गयी। माँ ने कहा—"वाजितपुर में जब यह शरीर था, उन दिनों भोलानाथ जी के क्वाटर के पास एक जज रहते थे। उनका नाम रेवती वावू था। उनके यहाँ हरे कृष्ण नाम बहुत होता था। बड़ा जम कर कीर्त्तन होता था। उस मकान में होने वाले कीर्त्तन की आवाज यहाँ से सुनायी देती थी। कीर्त्तन के साथ-साथ यह शरीर न जाने कैसे लस्त हो जाता था। शरीर की इस तरह की हालत सुनकर रेवती बाबू ने भोलानाथ जी से कहा था कि इस शरीर के गले में कण्ठी की माला पहना दो। भोलानाथ जी ने आकर मुझसे यह बातें बतायी। मैंने उनसे कहा था कि तुम उनसे जाकर पूछना कि कौन सी कण्ठी धारण करना होगा? अन्तर कण्ठी या वहिर्कण्ठी? यह बात सुनकर उन्होंने कहा था कि अब कण्ठी लेने की आवश्यकता नहीं है।

वाजितपुर की एक पुरानी घटना

१५ मार्च, १९५७

आज श्री हरि बाबाजीके जन्म तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में हमलोगों के आश्रम में उत्सव का आयोजन हो रहा है। सम्पूर्ण आश्रम को पताका, माला, आम के टल्लो के वन्दनवारों से सुशोभित किया गया है। आँगन-प्रांगण में

हरि बाबाजी के जन्म तिथि पर आश्रम में उनका सादर सम्बर्धना

आलपना का चित्रण शोभायमान है। यह सब मिलकर आश्रम शोभा में अपूर्व श्रीवृद्धि कर रहे हैं।

तीसरे पहर ३ बजे से भागवत-भवन में भागवत लीला हो रही है। अनेक लोग आये हुए हैं।

शाम के ठीक पहले हरि बाबाजी के आने की बात है, इसलिये आश्रमवासी कीर्त्तन का साज-सरंजाम लेकर रास्ते के दोनों ओर खड़े हैं। आगे जयपुर मन्दिर के दरवाजे के पास बैण्ड पार्टी प्रतीक्षा कर रही है। ठीक ६ बजे श्री हरि बाबाजी बाजे-गाजे के साथ श्री गौर-निताई मूर्ति को लिये हुए आये। बैण्ड बजने लगा। कीर्तन आरम्भ हुआ। अपूर्व विराट जलूस चल पड़ा। लगभग ५०० से अधिक स्त्री-पुरुष हरि बाबाजी को आश्रम में मुख्य फाटक पर ले आये। यहाँ माँ उपस्थित थीं। हरि बाबाजी ज्यों ही आये त्यों ही माँ उनका स्वागत करते हुए आश्रम के भीतर ले गयीं। जलूस के आगे बैण्ड पार्टी, उसके बाद श्री गौर-निताई की मूर्ति, उसके बाद माँ और श्री हरि बाबाजी आये।

सर्वप्रथम आश्रम मन्दिर में प्रवेश करते ही माँ हरि बाबाजी को गौरांग मन्दिर में ले गये। हरि बाबाजी ने श्री विग्रहद्वय को फूलों और जरियों की माला पहनायी तथा विभिन्न प्रकार के फल और मिठाइयों का भोग चढ़ाया। वहां कुछ देर कीर्त्तन करने के पश्चात् वे रामअर्चा के स्थान पर आये।

हाल के दक्षिण ओर आसन बिछाकर उस पर रामचन्द्र की तस्वीर सजायी गयी थी। यहीं रामअर्चा का आयोजन किया गया है। श्री हरि बाबाजी वहाँ जाकर रामनाम कीर्त्तन करने लगे।

कुछ देर बाद जाकर मैंने हरि बाबाजी के गले में जरी और फूलों की माला पहनायी और उन्हें एक आलखाल्ला, चद्दर और पगड़ी भेंट करते हुए उन्हें प्रणाम किया। इसके बाद एक-एक कर लोग उन्हें भेंट चढ़ाने लगे। बाबा जी के सभी भक्त-शिष्य विभिन्न प्रकार के बधाई गीत गाने लगे। जितने साधु-महात्मा उपस्थित थे, उन सभी को रूमाल में बाँधकर मिठाई और फल दिये गये। बाकी लोगों को भी प्रसाद दिया गया। सभा समाप्त होते-होते ९ बज गये। ९।। बजे के बाद हाल में टेहरी महाराजा ने माँ के जयन्ती उत्सव के समय पर जो फिल्म तैयार किया था, वह दिखाया। यह सब करने-धरने में रात के ११।। बज गये। माँ रात को भागवत-भवन में ही सो गयीं।

१६ मार्च, १९५७

आज होली है। सवेरे ८ बजे स्वामी अखण्डानन्दजी, स्वामी शरणानन्द जी आदि की उपस्थिति में चारखारी की राजमाता ने अपने स्वर्गीय पति के फोटो के साथ नारायण-शिला और गीता लेकर नवनिर्मित गीता-भवन में प्रवेश किया। माँ तो साथ थीं ही। दूसरी ओर रानी सरला देवी ने भी माँ के पीछे अपने स्वर्गीय पति का फोटो तथा भागवत के साथ भागवत-भवन में प्रवेश किया। इनके साथ भी नारायण-शिला थी।

दोनों ही भवन में उनके अपने-अपने पतियों का फोटो की स्थापना की गयी। भागवत और गीता का षोड़शोपचार से पूजन किया। इसके पहले ही भागवत-भवन में १०८ बार भागवत पाठ हो गया है। इसलिए आज गीता-भवन में १०८ बार गीता पाठ समवेत रूप में हुआ।

सूर्योदय से सूर्यास्त तक अखण्ड पाठ होता रहा। तीसरे पहर माँ स्वयं लोगों के साथ महाप्रभु के मन्दिर के सामने घूम-घूम कर कीर्त्तन करती रहीं। आज होली के शुभ अवसर पर श्रीधाम वृन्दावन में महाप्रभु के सामने, माँ के साथ कीर्त्तन करने में भक्त वृन्दों के मन में जो असीम आनन्द हुआ, उसका वर्णन कौन कर सकता है।

होली उत्सव के उपलक्ष्य में नाना स्थान से अनेक भक्त आकर एकत्रित हुए हैं। इनमें से प्रमुख हैं—मैसूर की महारानी, टेहरी के महाराजा सपरिवार, लम्बा ग्राम का राजपरिवार, रहयांर के राजा और रानी आचरोल के राजा और रानी, शेरकोट की रानी साहिबा, अम्बर के राजा सपरिवार नीमखेर के राजा और रानी, बम्बई से श्री० वी० के० शाह, अहमदाबाद से मुकुन्द भाई आदि। कुचामन के राजा-रानी तो यहाँ पहले से ही मौजूद हैं। इस उपलक्ष्य में आज रात को स्थानीय चार रासमण्डली एक साथ महारास करेंगी। कल माँ यहाँ से मोदी नगर चली जाने वाली हैं। मैं कुछ लोगों को लेकर देहरादून चली जाऊँगी। फिर यह आनन्द का मेला समाप्त हो जायगा।

१७ मार्च, १९५७

आज सवेरे से वृन्दावन का यह आनन्दहाट उखड़ना शुरू हो गया है। दीदी माँ आदि बहुत से लोग तूफान मेल से काशी चले गये हैं। अनेक भक्तगण अपने-अपने घर वापस जाने लगे हैं। तीसरे पहर ३ बजे माँ श्री वर्मा की गाड़ी से मोदीनगर रवाना हो गयीं।

माँ श्री वर्मा की गाड़ी से रवाना हो गयीं। मैं भी उसी गाड़ी में परमानन्द स्वामी, भइया और बुनी को लेकर चल पड़ी। श्री

वर्मा सेन्ट्रल पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य हैं। आजकल आप दिल्ली में ही रहते हैं।

मैं माँ की मोटर से दिल्ली तक जाऊँगी। वहाँ से आज रात की गाड़ी से देहरादून चली जाऊंगी। यही वजह है कि माँ मुझे दिल्ली स्टेशन पर उतार कर सीधे मोदीनगर चली जायँगी!

शाम के ६ बजे के लगभग हम लोग दिल्ली स्टेशन पहुँचे। स्टेशन पर अनेक भक्त माँ का दर्शन करने के लिए खड़े थे। माँ मुझे उतार कर मोदीनगर चली गयीं। रात की गाड़ी से मैं देहरादून रवाना हो गयीं।

१८ मार्च, १९५७

आज सवेरे ८ बजे मैं देहरादून पहुँची।

मोदीनगर में माँ

माँ मोदीनगर में ६-७ दिन रहने वाली हैं। अवधूतजी पहले से ही वहाँ पहुँच गये हैं। हरि बाबाजी भी कल माँ के साथ गये हैं। वहाँ एक विराट सत्संग का आयोजन किया गया है। वृन्दावन से किसी रास पार्टी को भी बुलाया गया है।

मोदी उद्योग समूह आजकल भारत में विशेष ख्याति प्राप्त कर रहा है। बाटा नगर की भाँति मोदीनगर भी एक विशिष्ट जनपद बन गया है। इन उद्योग समूह के प्रधान डायरेक्टर श्री गुजरमल मोदी अवधूतजी के विशेष भक्त हैं। उनके ही व्यवस्था से यह सब आयोजन हो रहा है।

२० मार्च, १९५७

बुनी के पत्र से माँ का समाचार प्राप्त हुआ। माँ उसी दिन

७॥ बजे मोदीनगर पहुँची। हरि बाबाजी की गाड़ी भी साथ-साथ थी। स्वागत सत्कार के लिए बैण्ड पार्टी के साथ विराट व्यवस्था की गयी थी। वहाँ माँ के ठहरने के लिये सुमेर हाऊस में इंतजाम किया गया था। सुमेर हाऊस दो तल्ले का नया भवन है। अभी तक उसमें बिजली नहीं लगी है। वर्माजी तथा भइया भोजन के पश्चात् उसी रात को दिल्ली वापस चले आये।

१८ तारीख की सुबह से अखण्ड कीर्त्तन शुरू हो गया है। यह कीर्त्तन एक सप्ताह तक अखण्ड रूप से होता रहेगा। रास भी सवेरे नियमित रूप से हो रहा है। दिल्ली टहरी के महाराजा-महारानी के अलावा और भी लोग माँ का दर्शन करने आये हैं। भइया का भी दिल्ली से आना-जारी है।

माँ की तबीयत कुछ अस्वस्थ है। माँ जिस कमरे में हैं, वह कमरा नया होने के कारण काफी तर है। माँ के तमाम बदन में दर्द हो रहा है। सिर में भी काफी दर्द है। केवल दूध-रोटी खा रही हैं। वृन्दावन में होने वाले एक सप्ताह के विराट उत्सव के बाद माँ मोदीनगर गयीं। वहाँ भी विराट उत्सव एवं जनता की भीड़ है। फलस्वरूप माँ को आराम करने का जरा भी मौका नहीं मिल पा रहा है। फिर भी माँ यथारीति नियमित रूप से सत्संग में भाग ले रहीं हैं।

श्री मोदी सपत्नीक माँ का हाल-चाल बराबर ले रहे हैं। इनमें सेवा का भाव अति सुन्दर है। माँ के साथ इनका यह प्रथम परिचय हुआ।

२२ मार्च, १९६७

आज के पत्र से पता चला कि वहाँ खूब पानी बरस रहा है।

यही वजह है कि माँ की तबीयत अस्वस्थ है। जिस पण्डाल में अखण्ड कीर्त्तन हो रहा था, उसके भींग जाने के कारण माँ के कमरे में कीर्त्तन का प्रबन्ध किया गया है। माँ को बगल के छोटे कमरे में रखा गया है। हरि बाबाजी इस मकान के ऊपर के तल्ले में हैं।

दिल्ली की पार्टी वहाँ के कीर्त्तन में भाग लेने के लिए रविवार को जायगी। यद्यपि यह स्थान निर्जन, शहर से दूर है, फिर भी माँ के आगमन के कारण काफी लोग आ-जा रहे हैं। इस उत्सव के उप-लक्ष्य में वहाँ के २५०-३०० लोग मौजूद हैं। ऐसी प्रतिकूल अवस्था में, अस्वस्थ शरीर लेकर सारा व्यवहार माँ किस ढंग से कर रही हैं, यह हमारे बुद्धि के वाहर की बात है।

मूसलाधार पानी बरस रहा है। सत्संग का पण्डाल गिरने ही वाला है। माँ ने मोदी को बुलाकर पूछा कि शहर के किसी बड़े हाल में सत्संग का इन्तजाम किया जा सकता है या नहीं? उन्होंने बड़ी निराशा से माँ से कहा—"भगवान की माया समझना कठिन है।" इस उत्सव के उपलक्ष्य में उन लोगों ने यथासाध्य सुन्दर व्यवस्था की है, किन्तु ऐसे दुर्योग और वर्षा में सब कुछ चौपट हुआ जा रहा है।

गुजरमल जी माँ के निकट अपने अतीत जीवन की कहानी सुना चुके हैं। कैसे वे पहले-पहल इस अंचल में आये। कैसे इतने बड़े उद्योग की स्थापना उन्होंने की, अपने बचपन में वे एक बार घर-द्वार छोड़ कर कहीं चले गये थे—इस तरह की बहुत सी वातें बच्चों की तरह सरल भाव से माँ के निकट प्रकट करते रहे। हर वर्ष माँ की उपस्थिति में ठीक इसी प्रकार का उत्सव हाता रहे, इसके लिये वें माँ के निकट बार-बार प्रार्थना करते रहे।

२८ मार्च, १९८७

आज परमानन्द स्वामी का पत्र आया है। माँ की तबीयत अभी तक ठीक नहीं हुई है। सर्दी और कफ से वे परेशान हैं। भोजन नाम मात्र करती हैं। सिर्फ दूध-रोटी, या बोट या कभी खिचड़ी खाती हैं।

पिछले २२ तारीख के सबेरे माँ को पहले मोदी के घर से शहर के स्कूल में ले जाया गया था। मोदी के घर के लोगों ने मिलकर माँ की आरती और कीर्त्तन किया था। गुजरमलजी और उनकी पत्नी उनकी मोटर में थे। रास्ते के दोनों किनारे के दृश्यों के बारे में वे लोग माँ को बताते जा रहे थे। बाजार के बीच एक मन्दिर बन रहा था। वह भी माँ को दिखाया गया।

माँ ज्यों ही लड़कियों के एक स्कूल में पहुँचीं स्कूल की छात्राओं तथा अध्यापिकाओं ने मिलकर माँ को गार्ड ऑफ ऑनर देते हुए उनका स्वागत किया। माँ ने छात्राओं से दोस्ती करती हुई उनसे पाँच बातों का पालन करने के लिये अनुरोध किया। लड़कियों ने बड़े आनन्द के साथ उन अनुरोधों को स्वीकार कर लिया। चूँकि माँ स्कूल आयी हैं इस उपलक्ष्य में एक दिन के लिए स्कूल में छुट्टी हो गयी। इस दिन स्कूल की सभी छात्राएँ रासलीला देखने आयेंगी।

यहाँ से माँ को लड़कों के कालेज में ले जाया गया। इस कालेज के अध्यक्ष श्री उपेन बाबू माँ के पूर्व परिचित रहे। आज से कई वर्ष पहले की बात है। आप सर्व प्रथम माँ को देहरादून की ओर ले गये थे। उपेन बाबू ने माँ की उपस्थिति में, बच्चों के सामने छोटा सा भाषण दिया। यह स्कूल, कालेज मोदी परिवार-द्वारा संस्थापित हैं।

४

गुजरमलजी की पत्नी दयावती मोदी स्वनामधन्य महिला हैं। वे स्वयं अनेक समाजकारी संस्था से सम्वद्ध हैं।

मोदीजी का विराट परिवार है। सभी भाई और महिलाएँ माँ के निकट बराबर आ-जा रही हैं। वे लोग अपने बीच माँ को पाकर खुशी से फूले नहीं समा रहे हैं। सभी लोग एकान्त में आ-कर अलग-अलग ढंग से माँ से बातचीत कर रहे हैं।

कल अखण्ड कीर्त्तन की समाप्ति का दिन था। दिल्ली से बहुत से लोगों ने आकर इस कीर्त्तन में योगदान दिया है। उत्सव का आखिरी दिन, तिस पर रविवार होने की वजह से सवेरे रासलीला देखने के लिए १०-१२ हजार लोग आये थे। कीर्त्तन के समय माँ कुछ देर तक हाथ ऊपर उठाकर लोगों के साथ कीर्त्तन करती हुई, उन सबको उत्साहित करती रहीं।

दिल्ली मेरठ से लोग बराबर आ-जा रहे हैं। आगा साहब (वर्तमान उत्तर रेलवे के चीफ सिक्युरिटी आफिसर), श्री वर्मा, टेहरी के महाराजा-महारानी आदि अनेक लोग माँ का दर्शन करने आये हैं। सोपारी भाई आजकल सरकारी कार्य से दिल्ली आये हुए हैं। वे भी सपत्नीक माँ का दर्शन करने आये हैं। आज भोर के वक्त माँ यहाँ से हापुड़ चली जायँगी।

२६ मार्च, १९५७

आज समाचार मिला कि माँ कल मोटर द्वारा हापुड़ चली गयीं। वहाँ मोदी के एक भाई हैं। वहाँ वे उत्सव का आयोजन करने के बाद माँ, हरि बाबाजी आदि को ले गये हैं। माँ को वहाँ की एक पाठशाला में

हापुड़ में माँ

ठहराया गया है। दयावती मोदी भी माँ के साथ गयी हैं।

आज सबेरे माँ मोटर द्वारा दिल्ली आकर दिल्ली मेल से विंध्याचल रवाना होंगी।

२९ मार्च, १९६७

हापुड़ से दिल्ली होती हुई माँ का विंध्याचल आगमन

आज दो दिन के बाद पुनः समाचार मिला कि माँ २६ ता० की रात को लगभग ११ बजे विंध्याचल आश्रम में सकुशल पहुँच गयीं। उस दिन दिल्ली स्टेशन पर बहुत से लोग माँ का दर्शन करने आये थे। रास्ते में टुण्डला, इटावा, कानपुर, इलाहाबाद आदि स्टेशनों पर बहुत से लोग आये थे, मीरजापुर स्टेशन से माँ तारापद बाबू की गाड़ी से विंध्याचल पहुँची थीं।

तारापद वंद्योपाध्याय जी पहले काशी में भइया के इंश्योरेंस कं० में काम करते थे। आजकल आप मीरजापुर स्थित सरकारी इंश्योरेंस कं० में काम कर रहे हैं।

विंध्याचल में माँ के साथ स्वामी परमानन्द, कुसुम, प्रियरंजन एवं रेणु सर्वाधिकारी हैं। बुनी और उदास को माँ ने काशी भेज दिया है।

मोदी नगर के उत्सव के बाद यहाँ आकर माँ शायद कुछ दिन विश्राम करेंगी। कुसुम ने लिखा है कि बहुत दिनों से माँ में सोने का भाव नहीं है। समय का अभाव तो बराबर बना हुआ है। विंध्याचल में आने के बाद से माँ अपने ख्याल के अनुसार उठ बैठ रही हैं। इसलिए कुछ स्वस्थ दिखाई पड़ रही हैं। इन दिनों

विंध्याचल का आश्रम बिलकुल खाली है। अन्य कोई व्यक्ति यहाँ नहीं है।

परसों वहाँ दक्षिण अफ्रीका का एक मद्रासी परिवार माँ का दर्शन करने आया था। उन लोगों ने अपने परिवार के लोगों की तस्वीर माँ को दिखायी और माँ के साथ अपना फोटो खींच कर ले गये।

३० मार्च, १९६७

स्वामी जी के पत्र से मालूम हुआ कि माँ ने हमलोगों को देहरादून (रायपुर वाला) आश्रम साफ करवाने की आज्ञा दी है। वहाँ कोई आने वाला है।

४ अप्रैल, १९६७

आज समाचार मिला कि माँ पहली तारीख को विंध्याचल से काशी चली आयी हैं। विंध्याचल में माँ की तबीयत ठीक थी, किन्तु काशी आते ही फिर गड़बड़ी शुरू हो गयी। रात में सोने का भाव नहीं रहता। वृन्दावन की तरह टान्सिल में पुनः दर्द आरम्भ हो गया है। कान में आवाज ज्यादा गूंजती है। इसके साथ ही धड़कन कुछ तीव्र हो गयी है।

काशी में माँ

माँ नये मकान के 'अवधूत कुटीर' में रहती हैं। लड़कियाँ वहाँ नहीं जा पातीं। सिर्फ गोपाल की माँ साथ रहती है। इसके अलावा कुसुम और परमानन्द स्वामी हैं।

अगले ६ तारीख को आश्रम में वासन्ती पूजा होगी। इस बार अष्टमी और नवमी पूजा एक ही दिन होगी। नवमी के दिन सवेरे माँ काशी से बाराबंकी से होती हुई यहाँ आने वाली हैं। हम सब आशा कर रहे हैं कि माँ १० तारीख के सवेरे तक आ जायंगी।

६ अप्रैल, १९५७

आज एक पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ की तबीयत पहले की अपेक्षा कुछ अच्छी है। माँ के साथ इस बार बहुत से लोग यहाँ आने वाले हैं।

अहमदाबाद के जन्मोत्सव में भाग लेने के लिए काशी से जो लोग जायंगे, वे लोग भी यहाँ आ रहे हैं। इस महीने के अन्त तक माँ और हमलोग अहमदाबाद रवाना हो जायँगे। स्वामीजी का अनुमान है कि अहमदाबाद के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में इस बार ४००-५०० भक्त वहाँ आयंगे। इसलिए उन्होंने लिखा है कि वहाँ को व्यवस्था करने के लिए पहले से २-३ संन्यासी या ब्रह्मचारी भेज दिये जाँय। इसी बीच स्वामीजी ने मुकुन्द भाई को कहा है कि वहाँ के स्थानीय होस्टलों एवं ४-५ मकान बाहरी व्यक्तियों के लिए ठीक ठाक करके रखवाया जाय।

माँ काशी से ८ तारीख को सबेरे बाराबंकी जायंगी। वहाँ एक रात रहने के बाद दिन भर लखनऊ में रहेंगी। फिर शाम की गाड़ी से देहरादून रवाना होंगी।

दिल्ली से श्री अमलसेन परसों काशी पहुँच गये हैं। काशी में रहते समय उनके पैर में चोट लगी थी। इसलिये माँ के निर्देशा-

नुसार उन्हें दिल्ली में चिकित्सा के लिए ले जाया गया था। नये आश्रम के नीचे वाले कमरे में उनके रहने का इन्तजाम किया गया है।

काशी वाले आश्रम के घाट का निर्माण कार्य जारी है। चुनार से सैकड़ों बड़ी-बड़ी नाव द्वारा पत्थर लाकर घाट के सामने फेंका जा रहा है। पत्थरों से सम्पूर्ण घाट ढालुआ बनाने का प्रस्ताव है। बरसात शुरू होने के पहले ही काम समाप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

८ अप्रैल, १९५७

काशी से बाराबंकी और लखनऊ होती हुई माँ का देहरादून आगमन

काशी से पत्र प्राप्त हुआ। माँ की की तबीयत काफी अच्छी है। गले में दर्द नहीं है। सर में गूंजने वाली आवाज पहले की अपेक्षा बहुत कम है। पिछले २-३ दिन से थोड़ी देर तक सो लेती हैं। कविराज जी नित्य शाम को माँ के यहाँ आते हैं। उनके साथ अनेक प्रकार की बातें होती हैं।

परसों आश्रम में वासन्ती पूजा के लिए वासन्ती देवी की मूर्ति आयी है। यथा रीति चण्डी मण्डप में पूजा आरम्भ हो गयी है। इस बार माँ उपस्थित हैं, इसलिए लोग विशेष आनन्दित हैं। काशी के मजिस्ट्रेट, सीनीयर सुपरिडेण्टेण्ट ऑफ पुलिस आदि माँ का दर्शन करने के पश्चात् प्रसाद ले गये हैं। वर्मा जी भी एक वक्त माँ का दर्शन करने आये थे। उत्तर प्रदेश राज्य सभा के अध्यक्ष श्री चन्द्रभानजी माँ का दर्शन करने के लिए गये थे। माँ के साथ वे काफी देर तक बातचीत करते रहे।

इसी बीच उत्तर प्रदेश के उपमन्त्री रावत साहब भी माँ से मिलने आये थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि माँ को बारावंकी तक अपनी मोटर पर साथ ले चलें। किन्तु माँ का शरीर ठीक न होने के कारण तथा काफी लम्बा सफर होने के कारण स्वामीजी ने ट्रेन द्वारा जाने का निश्चय किया। उन्होंने यह जरूर कहा कि ९ तारीख को तीसरे पहर माँ को मोटर द्वारा बाराबंकी से लखनऊ ले जायंगे। यह सब बातें तय हो गयीं। लखनऊ में माँ कुछ घण्टे उनके यहाँ आराम करेंगी। बाद में माँ वहाँ से देहरादून रवाना होंगी।

माँ को किसी ने एक विराट कदमा दिया था। एक दिन सत्संग के समय माँ उसे तोड़-तोड़ कर सबको बाँटती रहीं। इस वजह से लोगों को उस दिन विशेष आनन्द प्राप्त हुआ था।

१० अप्रैल, १९५७

आज सबेरे ९॥ बजे माँ देहरादून पहुँचीं। देहरादून आकर माँ पहले सीधे कल्याणवन में चली गयीं। इस बार माँ वहाँ कुछ दिनों तक रहेंगी। कल्याणवन में कुछ देर रहने के बाद माँ किशनपुर चली आयीं।

देखा—माँ के साथ बहुत से लोग आये हैं। काशी से सती, वुबा, कुसुम, पानु, स्वामीजी, शोभा दीदी, बुनी, उदास आदि तथा कलकत्ता से रेणु दीदी, किरन बाबू की पत्नी वगैरह आयी हैं।

परसों माँ काशी से रवाना हुई थीं। उसी दिन सबेरे माँ विशुद्धानन्द स्वामीजी के यहाँ गयी थीं। वहाँ से वापस लौटते समय

माँ शंकरानन्दजी तथा स्वर्गीय दरबेशजी की पत्नी को देखती हुई आयी हैं।

लखनऊ आते समय अयोध्या तथा फैजाबाद स्टेशनों पर बहुत से लोग मिलने आये थे। फैजाबाद के मजिस्ट्रेट श्री रामकृष्ण त्रिवेदी माँ के एक पुराने भक्त हैं। वे भी स्वयं स्टेशन आये थे। रास्ते में गाड़ी में खराबी हो जाने के कारण गाड़ी २ घण्टे लेट हो गयी थी। बारावंकी स्टेशन पर अनेक लोग माँ का स्वागत करने आये थे। स्टेशन से कीर्त्तन करते हुए जलूस के साथ माँ को एक धर्मशाले में ले जाया गया था। बम्बई के स्वामी श्री कृष्णानन्दजी आजकल वहीं हैं। वे आजकल यहाँ एक विराट उत्सव कर रहे हैं। इसी उपलक्ष्य में वे माँ से विशेष अनुरोध करते हुए एक दिन के लिए अपने यहाँ ले गये हैं। धर्मशाला अभी नयी बनी है। बहुत बड़ी धर्मशाला है। चारों तरफ कमरे, बीच में विराट हाल है। चौथे मंजिल पर माँ के रहने के लिए इन्तजाम किया गया था। माँ के साथ गये लोग भी उसी धर्मशाला में ठहरे थे।

बाराबंकी के उत्सव में माँ

कृष्णानन्द स्वामीजी तथा व्यवस्था करने वाले अधिकांश लोग माँ को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसका बड़ा ख्याल रख रहे थे।

उसी दिन रात को लखनऊ से रावत साहब, इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट के सेक्रेटरी पाल जी, रहयांर के राजा-रानी आदि अनेक गण्य मान लोग माँ से मिलने आये थे।

कल सवेरे माँ २ घण्टे तक धर्मशाला के सत्संग भवन में मौजूद थीं। हजारों स्त्री-पुरुष इस उपलक्ष्य में वहाँ उपस्थित थे। श्री

कृष्णानन्द जी के अनुरोध पर माँ कुछ देर तक गाती रहीं।

दोपहर के भोजन के बाद माँ ठीक ३ बजे रावत साहब की मोटर से लखनऊ रवाना हो गयीं। पाल साहब तथा कृपाल के भाई महेन्द्र सिंह अलग-अलग गाड़ी से माँ के साथ रवाना हुए। रावत साहब का निवास स्थान लखनऊ में विधान सभा के ठीक सामने है। उनके मकान के बगीचे में माँ के बैठने का इन्तजाम किया गया था। उन्होंने अपने भवन में एक नवनिर्मित शिव मन्दिर की स्थापना की है। वे माँ को उक्त स्थान दिखलाते रहे।

शाम को ६ बजे के बाद माँ स्टेशन आ गयीं। स्टेशन पर सैकड़ों भक्त माँ का दर्शन करते रहे। उनमें नेपाल स्थित भारतीय राजदूत डा० भगवान सहाय, उत्तर प्रदेश राज्य म्युजियम के डायरेक्टर श्री नागर, चन्द्रभानजी आदि अनेक लोग उपस्थित थे।

इसी गाड़ी में कलकत्ता से सावित्री, गंगा आदि आ रही थीं। लखनऊ पहुँचते ही इन सबने माँ का दर्शन किया। यह सब पुरी के आश्रम से आ रही हैं। अब माँ के निर्देशानुसार रायपुर में आकर रहने वाली हैं।

आज सबेरे हरिद्वार स्टेशन पर योगी भाई आये और माँ का दर्शन कर चले गये। वे शायद कल यहाँ आयँगे।

किशनपुर के आश्रम में भोग आदि हो जाने के बाद माँ कल्याणवन वापस चली गयीं। वहाँ माँ के साथ परमानन्द स्वामी, कुसुम, भरत भाई तथा गोपाल ःभी माँ रहने वाले हैं।

आज तीसरे पहर ५॥ बजे के बाद मैं कल्याणवन गयी। कल्याणवन के पक्के प्रांगण में माँ देर तक बैठी रहीं। लोगों के

साथ बातचीत होती रही। माँ के लिये बाहर बराण्डे में सोने की व्यवस्था करते देखा। मैं रात को पुनः किशनपुर के आश्रम में वापस चली आयी।

११ अप्रैल, १९५७

आगामी १३ अप्रैल चैत्र संक्रान्ति के दिन दीदी माँ का संन्यास उत्सव मनाया जायगा। दीदी माँ को इसीलिये यहाँ ले आया गया है। दोपहर को ११ बजे के लगभग माँ किशनपुर के आश्रम में आ गयीं। भोग के पश्चात् २॥ बजे के लगभग पुनः कल्याणवन वापस चली गयीं।

तीसरे पहर योगी भाई हरिद्वार से यहाँ आये। उनके लिये आश्रम में रहने का इन्तजाम किया गया। वे कल्याणवन जाकर माँ से देर तक बातचीत करते रहे।

रात के वक्त माँ आश्रम स्थित सभी साधु-ब्रह्मचारियों को बुला-कर दीदी माँ के संन्यास उत्सव के काम धाम की विधि व्यवस्था समझाती रहीं। यह तय हुआ कि प्रकाशानन्दजी कल हरिद्वार जा कर श्री विष्णुदेवानन्दजी, श्री महेश्वरानन्दजी आदि महात्माओं को आमन्त्रित कर आयेगा।

१२ अप्रैल, १९५७

आज सवेरे पुरी आश्रम से कमलाकान्त ब्रह्मचारी आये। माँ से बातचीत करते समय कह रहा था कि पुरी के पुरातन भक्त दीनेश बाबू आदि कहते रहते हैं कि माँ में पहले भाव समाधि होती थी, किन्तु आजकल वह सब कुछ नहीं हो रहा है। यही वजह है बहुत

से लोग यह अनुमान कर रहे हैं कि माँ में अवस्था का पतन हो गया है।

यह सब सुनकर हँसती हुई माँ बोलीं—"इस शरीर की बात छोड़ दो। दूसरी ओर भी इस तरह की सब अवस्थाओं के बाद भी भावाभाव के अतीत यह भी हो सकता है। जो लोग जो समझेंगे वे वही कहेंगे। इसमें दोष की क्या बात है?"

कमलाकान्त से माँ ने कहा कि वृन्दावन जाकर पूजा पाठ इत्यादि के साथ साधन-भजन करो। वह जल्द ही चला जायगा।

आज लगभग १२ बजे माँ आश्रम में आयीं। भोग इत्यादि के बाद थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात् कल्याणवन वापस चली गयीं। सुना कि कान की आवाज में कुछ वृद्धि हुई है। काशी में माँ गरम पानी का भाप लेती थीं। उससे उन्हें आराम था। इस बार आते समय मार्ग में न जाने कहाँ फानेल खो गया। इसलिये कैसे भाप लिया जाय इस सम्बन्ध में लोग चिन्तित हो उठे हैं। इधर माँ अपनी व्यवस्था स्वयं कर चुकी हैं। पपीते का डण्ठल केतली के मुँह से लगाकर माँ फानेल का काम चला रही हैं।

१३ अप्रैल, १९६७

आज दीदी माँ का संन्यास उत्सव है। सवेरे ८ बजे के लग-भग दीदी माँ को आश्रम से कल्याणवन ले जाया गया। वहाँ माँ और दीदी माँ को नये कपड़े पहनाकर मोटर में बैठाया गया। फिर जलूस के साथ आश्रम ले आया गया। एक खुले हुए मोटर में माँ और दीदी माँ बैठी हुई हैं। अम्बर के राजासाहब गाड़ी चला रहे हैं। उनके सामने पुलिस

गिरि जी का संन्यास उत्सव

बैण्ड पार्टी, उसके बाद कीर्त्तनियों का दल है। गाड़ी के दोनों ओर कोई छाता पकड़े है तो कोई साधु चंवर डुला रहा है। धीरे-धीरे जलूस आश्रम पहुँचा। शंख और हुलूध्वनि के साथ माँ एवं दीदी माँ को लेकर बड़े हाल में आसन के ऊपर बैठाया गया। अब आरम्भ हुआ समवेत रूप से गीता और चण्डी का पाठ।

श्री अवधूतजी आज सबेरे हरिद्वार से यहाँ आये। कल्याणवन में माँ के कमरे के पास ही उनके रहने का इन्तजाम किया गया। माँ चारों तरफ घूमती-फिरती हुई साधुओं के स्वागत सत्कार की व्यवस्था देखती रहीं। कहाँ किसे बैठाना होगा, कहाँ किसे भोजन कराया जायगा, कैसे आसन बिछाया जायगा आदि सारी बातें हर तरह से माँ दिखा और समझा रही थीं।

१० बजे के वक्त नारायण पूजा के बाद माँ और दीदी माँ की पूजा आरम्भ हुई। थोड़ी देर बाद ही हृषीकेश परमार्थ निकेतन से श्री सुखदेवानन्द स्वामी जी आ गये। पूजा समाप्त हो जाने के बाद लोगों के अनुरोध पर उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया।

ठीक १२ बजे साधु-महात्माओं का भोजन आरम्भ हुआ। माँ बीच-बीच में जाकर प्रवेक्षण करती रहीं। साधु भोजन के बाद, माँ और दीदी माँ को भोग पर बैठाया गया। भोग के बाद लगभग ५००-६०० भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।

तीसरे पहर सत्संग आरम्भ होने पर अवधूत जी ने एक भाषण दिया। इसके बाद वे हरिद्वार चले गये। इसके बाद दीदी माँ के बारे में थोड़ी देर तक चर्चा हुई। मौन समाप्ति के बाद आरम्भ हुआ अखण्ड कीर्त्तन। यह कल सूर्योदय तक शायद समाप्त होगा।

माँ रात को १० बजे के बाद कल्याणवन वापस चली गयीं। इस प्रकार दीदी माँ का संन्यास उत्सव किया गया।

१४ अप्रैल, १९५७

आज वैशाख माह का पहला दिन है, फसली संवत् का नव वर्ष। सवेरे मैं लड़कियों को ले जाकर माँ को पुष्पांजलि दे आयी। उस समय माँ सोयी हुई थीं। बाद में लगभग १ बजे माँ सोकर उठीं। १२ बजे के बाद माँ आश्रम में आयीं। मोदीनगर से मोदीजी सपत्नीक तथा नारायण दास बाजोरिया यहाँ आये। उनके साथ बातचीत करते रहने के कारण इस वक्त माँ कल्याणवन न जा सकीं। इधर धीरे-धीरे अँधेरा छा गया। माँ ऊपर अपने कमरे में जाकर आराम करने लगीं।

रात को माँ फिर नीचे नहीं आयीं। लोग एक-एक करके आये और माँ के घर में जाकर उन्हें प्रमाण कर चले गये।

लोगों के जाने के बाद माँ ने आश्रम के सभी संन्यासियों एवं ब्रह्मचारियों को बुलवाया। दीदी माँ का संन्यास उत्सव किस भाँति लोग मिल-जुलकर सुन्दर रूप से और आनन्द के साथ मना चुके हैं, इन बातों की चर्चा चलती रही।

आश्रम के ब्रह्मचारियों के प्रति माँ के कुछ उपदेश

इसके बाद न जाने किस सिलसिले में यह चर्चा उठी कि पिछले साल रायपुर के आश्रम की भूमि को लेकर जो झंझट उत्पन्न हुई थी, इस मामले में स्वरूपानन्दजी को कचहरी जाना पड़ा था। इससे उन्हें कुछ संकोच अनुभव होता था। माँ ने भी कहा—"संन्यासी अपने आदर्श से किसी भी स्थिति में विच्युत न हो। पर आश्रम

का काम भी किसी तरह से बिगड़ने न पाये इस ओर दूसरों से प्रयत्न करवाना चाहिए।" माँ ने आगे कहा—"अब सवाल यह है कि जो विषय दूसरों के कहने पर कोई प्रतिकार नहीं हो सकता, वह सब बातें न कहना ही अच्छा है। इस शरीर का यही ख्याल है।"

थोड़ी देर के बाद ब्रह्मचारी हरिप्रसाद से कहने लगीं—"महिलाओं से अप्रयोजनीय बात न कहना ही अच्छा है।"

यह बात सुनकर हरिप्रसाद के मन में अभिमान के कारण चोट पहुँची। जब वह माँ के पास से दूर जाना चाहा तब माँ ने उसे समझाते हुए कहा—"कल्याण की ओर रह जाने से अच्छा होता। दूसरी जगह मान, प्रतिष्ठा, अर्थ यही सब तो।" इस तरह की बातें कहती हुई वे उसके मन के अभिमान को दूर करने का प्रयत्न करने लगीं। दूसरे लोगों से जप ध्यान विशेष रूप से करने के लिए कहती रहीं।

आज माँ के पैरों के दर्द और सूजन में काफी कमी है, इसलिये कल दिल्ली जाकर डा० सेन से जाँच कराने की चर्चा चली।

१८ अप्रैल, १९८७

आज भोर के समय कुसुम को दिल्ली भेजा गया। वह पल्टू के साथ मिलकर डा० सेन से मुलाकात का समय ठीक कर लेगा। पल्टू के साथ डा० सेन का घनिष्ठ परिचय है। आज माँ तीसरे पहर मोटर से दिल्ली चली गयीं। उनके साथ स्वामीजी और बुनी गये।

१६ अप्रैल, १९५७

आज माँ शाम के बाद मोटर द्वारा दिल्ली से वापस आयीं। लौटते समय वे मोदीनगर होती हुई आयी हैं।

सुना कि कल कुसुम दिल्ली में डा० सन्तोष बाबू के साथ बात-चीत पक्की कर चुका था। आज सवेरे ७॥ बजे माँ को उनके घर पर ले जाया गया था। उन्होंने माँ की अच्छी तरह से जाँच पड़ताल की। घुटने के नीचे जिस स्थान पर सूजन अधिक थी, उसके भीतर से पम्प द्वारा पानी निकाला गया। इससे उन्हें कुछ दिनों तक राहत मिलेगी। इसके बाद एक्स-रे लेने की बात उठी तब माँ को उनके नर्सिंग होम में ले जाया गया। वहाँ एक्स-रे होने के बाद माँ आश्रम वापस आयीं। भोग हो जाने के बाद लगभग ३ बजे माँ दिल्ली से रवाना होकर यहाँ आयीं।

कुसुम को दिल्ली से अहमदाबाद भेज दिया गया है। इस बार अहमदाबाद में माँ का जन्मोत्सव मनाया जायगा। इधर माँ के शरीर की यह हालत है। डाक्टरों ने ही माँ को अधिक देर तक बैठे रहने के लिये मना किया है। अहमदाबाद जाकर सत्संग आदि में यदि माँ देर तक न बैठीं तो वहाँ के लोग बड़े दुःखित होंगे। यह सब बातें मुकुन्दभाई और कान्तिभाई को समझाने के लिये कुसुम को अहमदाबाद भेजा गया है। अगर वे लोग इस बात को मंजूर कर लें तो इस बार माँ का जन्मोत्सव यहाँ हो सकता है। माँ को लेकर इधर-उधर जाने की जरूरत नहीं होगी।

१८ अप्रैल, १९५७

अहमदाबाद से मुकुन्दभाई का तार आया है। वहाँ क्या तय

हुआ इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं है। इसलिए उसके यहाँ फोन किया गया। फोन पर मुकुन्दभाई ने कहा कि यदि माँ अहमदाबाद आयेंगी तो हमें विशेष आनन्द मिलेगा। यहाँ आकर यदि माँ कार्यक्रम में भाग न भी लें तो हमें किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा। अब इसके आगे क्या किया जा सकता है फलस्वरूप माँ के साथ सलाह करने के बाद अहमदाबाद जाने का निश्चय किया गया। गो कि इसमें अनेक कारण हैं। कान्तिभाई मुन्शा तथा मुकुन्दभाई काफी दिनों से वहाँ इस बार का जन्मोत्सव मनाने की बातें कहते आये हैं। यद्यपि कान्तिभाई आजकल भारत के बाहर हैं, फिर भी उनकी पत्नी कुन्दनबेन तथा अन्य लोग अपने निवास स्थान पर माँ के ठहरने के लिए इन्तजाम कर रहे हैं। माँ की उपस्थिति में मुकुन्दभाई के मकान में श्रीमद्-भागवत सप्ताह होने की चर्चा हो रही है। निमंत्रण पत्र आदि छपवाकर बांट दिया गया है। फलस्वरूप ऐसी हालत में वहाँ का उत्सव बन्द कर दिया जाय तो लोगों को बड़ा दुःख होगा। इन सब कारणों से अहमदाबाद जाने का निश्चय किया गया।

अहमदाबाद में जन्मोत्सव की सूचना

२१ अप्रैल, १९५७

कुसुम आज सवेरे अहमदाबाद से वापस आया। उसकी जबानी अहमदाबाद में होने वाले जन्मोत्सव सम्बन्धी बातचीत विस्तार के साथ मालूम हुई।

तीसरे पहर माँ बहुत से लोगों को लेकर रायपुर घूम आयीं। शाम के बाद आश्रम के समीप ही फ्री फिनिश मिशन से वहाँ के कुछ लोग माँ को कड़े आदर के साथ अपने यहाँ ले गये।

२२ अप्रैल, १९५७

आज आश्रम में श्रीमती सब्बरवाल ने माँ को भोग चढ़ाया। यह परिवार माँ का विशेष भक्त और सेवापरायण प्रवृत्ति का है। आपके पति पंजाब के भूतपूर्व साल्ट कमीश्नर रहे। यद्यपि वे स्वामी रामतीर्थ मिशन से विशेष रूप से संश्लिष्ट हैं, फिर भी हमारे यहाँ बराबर आते-जाते हैं एवं माँ के प्रति उनकी असीम श्रद्धा है।

आज तीसरे पहर माँ मोटर द्वारा यहाँ के कई मकानों में गयीं। यहाँ के लोगों की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि माँ कभी कृपा करके उनके घर में चरण-धूलि दें। आज माँ उनलोगों की वह इच्छा पूर्ण कर आयीं।

२३ अप्रैल, १९५७

आज भी आश्रम में स्वर्गीय माधवरामजी की पुत्र वधू हंसा-देवी ने माँ को भोग और भंडारा दिया। आज भी तीसरे पहर माँ यहाँ के कई लोगों के यहाँ घूम-फिर आयीं।

वैज्ञानिक और ऋषि माँ के साथ बातचीत करते हुए एक सज्जन ने पूछा था कि आधुनिक वैज्ञानिकों ने जिन सामग्रियों का आविष्कार किया है और जिन्हें सर्वसाधारण के सामने रखते हैं, इस तरह प्राचीन काल के मुनि-ऋषि अपने द्वारा उपलब्ध सत्य को बहुजन के हित के लिए नहीं दे सके थे।

माँ ने हँसकर उत्तर दिया—"जागतिक सुख-सुविधा तो अमृत देने में अक्षम है। ऋषि गण जो सनातन पन्था छोड़ गये हैं वही सब वैज्ञानिक मतोपलब्धि का मूत्र उत्स है। एक प्रकार से उनके छोड़े हुए धन का सभी उपभोग कर रहे हैं।

२४ अप्रैल १९५७

कलकत्ता से सर राजेन मुखोपाध्याय की पुत्र वधू प्रभा दीदी आज कई दिन हुए माँ के निकट आयी हुई हैं। उनके मृत पौत्र की तिथि के उपलक्ष्य में आज आश्रम स्थित साधु-महात्माओं को भंडारा दिया गया। इसी उपलक्ष में सवेरे से जप और कीर्त्तन चल रहा है।

अहमदाबाद जाते हुए श्री श्री माँ का हरिद्वार और वृन्दावन आगमन

कल सवेरे माँ यहाँ से मोटर द्वारा हरिद्वार जाने वाली हैं और हमलोग यानी मैं, दादी माँ, महिलाएँ आदि सभी लोग बम्बई एक्प्रेस से अहमदाबाद रवाना होंगे। परमानन्द स्वामीजी भी हमारे साथ जायेंगे। यह तय हुआ कि माँ आगामी ३० तारीख तक अहमदाबाद पहुँच जायँगी।

आज यहाँ जैक नामक एक अमेरिकन युवक माँ के साथ एकान्त में बातचीत करता रहा। आजकल यहाँ माँ के निर्देशानुसार रायपुर के आश्रम में साधन-भजन कर रहा है।

२५ अप्रैल, १९५७

आज सवेरे १० बजे के लगभग मैं, दादी माँ, और परमानन्द स्वामी माँ के साथ मोटर द्वारा हरिद्वार की ओर रवाना हुई। हमारे साथ जाने वाले अन्य लोग यहाँ से सीधे बम्बई एक्सप्रेस से अहमदाबाद रवाना हुए। रास्ते में माँ मुझे हरिद्वार स्टेशन पर उतार कर योगी भाई के यहाँ चली गयीं।

२६ अप्रैल, १९५७

कल रात को हमलोग बड़ौदा पहुँचकर लगभग आधी रात के समय अहमदाबाद पहुँचे। हम सब कान्तिभाई के यहाँ ठहरे हैं। मैंने देखा कि माँ के रहने के लिए बड़ी सुन्दर व्यवस्था की गयी है। स्वामीजी ने चारों तरफ मुआइना कर लिया।

२९ अप्रैल, १९५७

आज वृन्दावन से प्राप्त पत्र से समाचार मिला कि माँ हरिद्वार में दो रात रहने के बाद २७ तारीख की दोपहर को बम्बई एक्सप्रेस से रवाना होकर आधी रात को वृन्दावन पहुँची थीं।

माँ के जन्मोत्सव में श्री हरिबाबाजी का पूरी पार्टी के साथ अहमदाबाद आगमन

आज सवेरे श्री हरिबाबाजी आदि सभी को साथ लेकर माँ फ्रण्टियर मेल से रवाना होकर रात को ३ बजे के लगभग बड़ौदा पहुचेंगी। पहले यह तय हुआ था कि माँ और हरिबाबाजी को मोटर से अहमदाबाद ले आया जायेगा। किन्तु सड़क खराब रहने के कारण रेल से आने का निश्चय किया गया।

३० अप्रैल, १९५७

आज माँ हरिबाबाजी आदि के साथ सवेरे ६॥ बजे के लगभग अहमदाबाद पहुँचीं। सुना कि हरिबाबाजी मथुरा स्टेशन पर माँ के साथ आ मिले थे। माँ के साथ १२ व्यक्ति और हरिबाबाजी के साथ ६ व्यक्ति आये हैं। उत्तर रेलवे के जनरल मैनेजर श्री कौल साहब ने माँ के साथ आने वाले लोगों के लिए तीसरे दर्जे की एक बोगी रिजर्व करा दी थी।

दिल्ली से अछरोल के राजा तथा रानी उसी गाड़ी से माँ से मिलने के लिए मथुरा आ रहे थे। वे लोग भरतपुर तक माँ के साथ बातचीत करते हुए आये और पुनः वहाँ से दिल्ली वापस चले गये। राजा-रानी दोनों ही एक हफ्ते के भीतर यूरोप यात्रा करने जा रहे हैं, इसलिए माँ का आशीर्वाद प्राप्त करने आये हैं।

शाम के बाद गाड़ी के भीतर ही कण्डक्टर गार्ड की अनुमति लेकर हरिबाबाजी ने कीर्त्तन समाप्त किया। गाड़ी के अन्य यात्री खासकर एयर कण्डिशन कोच के यात्री विस्मय से अवाक् रह गये। गाड़ी के भीतर जोर-जोर से घण्टा वजाते हुए कीर्त्तन करने पर आपत्ति की जा सकती थी, किन्तु साधु-महात्मा को देखने के कारण किसी ने आपत्ति नहीं की।

भइया, कान्तियाभाई तथा लीला बेन कल रात को बड़ौदा स्टेशन पर माँ के साथ मिल गये थे। इन लोगों ने पहले से ही माँ के साथ गुजरात मेल में एक बोगी रिजर्व करवा ली थी। इधर मुकुन्द भाई ने निश्चय किया था कि गुजरात मेल से पहले चलने वाली गाड़ी सौराष्ट्र मेल से माँ को यहाँ ले आकर और जल्दी पहुँचेंगे। आश्चर्य की बात तो यह हुई कि माँ की फ्रण्टियर मेल बड़ौदा स्टेशन पर कुछ देर से पहुँची। इधर तब तक सौराष्ट्र मेल छूट गयी थी, इसलिए माँ को गुजरात मेल से आना पड़ा। किसी को भी दुःखित होने का मौका नहीं मिला। वम्बई से उसी गाड़ी में भूता साहब की पत्नी तथा सुशीला बहन आयी हैं।

माँ को स्टेशन से ले आने के लिए ठाकुरभाई आदि बहुत से लोग गये थे। माँ स्टेशन से सीधे कान्तिभाई की लड़की उर्मिला की ससुराल में हरिबाबाजी को ले गयीं। उनके लिए वहीं ठहरने का इन्तजाम किया गया है। माँ तथा हरिबाबाजी को आंगन में बैठा

कर उनकी आरती की गयी। बाद में हरिबाबाजी ऊपर अपने रहने के स्थान में चले गये और माँ कान्तिभाई के निवास स्थान पर चली आयीं।

आज तीसरे पहर से श्री हरिबाबाजी का सत्संग कान्तिभाई के निवास स्थान पर आरम्भ हुआ। सत्संग के पश्चात् माँ मोटर द्वारा २-३ मकानों में घूम आयीं। शाम के बाद हरिबाबाजी का कीर्त्तन माँ के कमरे के सामने हुआ।

१ मई, १९५७

कल सवेरे ही वृन्दावन से रास पार्टी यहाँ आ गयी है। आज सवेरे उन लोगों की रास लीला आरम्भ हुई।

बगीचे में पण्डाल लगाकर सत्संग का स्थान बनाया गया है। एक ओर रासलीला तथा सत्संग हो रहा है। दूसरी ओर राम-अर्चा आरम्भ हुई है। शाम के बाद ठाकुर भाई माँ को साथ लेकर बाहर कहीं चले गये। विश्वविद्यालय के मैदान में माँ कुछ देर तक चहल-कदमी करती रहीं। बाद में मुकुन्द भाई के यहाँ होती हुई माँ वापस आ गयीं। भइया रात को बम्बई वापस लौट गये। लीला-बेन आदि माँ के निकट २-३ दिन रहने के बाद चली जायंगी।

२ मई, १९५७

अहमदाबाद में श्री श्री माँ के जन्मदिन का उत्सव

आज माँ का जन्म दिन है। वैशाख की १९ वीं तारीख है। आज रात को माँ की प्रथम दिन की पूजा होगी। कल माँ का ६१ वाँ साल पूरा हो गया।

मुकुन्द भाई के निवास-स्थान पर आज सवेरे से भागवत-सप्ताह आरम्भ हुआ। मकान के पास ही सुसज्जित पण्डाल है। माँ के बैठने के लिए अलग से स्थान बनाया गया है।

आज सवेरे ७ बजे माँ के साथ मैं, दीदी माँ, स्वामीजी आदि स्थानीय शारदा मन्दिर में गये। इस विद्यालय के निर्माण के लिए ठाकुर भाई ने काफी व्यय किया है। अभी तक बराबर सहायता देते रहते हैं। श्री श्री माँ के श्रीहस्त से इस विद्यालय के एक नये प्रकोष्ठ की नींव की स्थापना हो, ठाकुर भाई की ऐसी इच्छा है। यही वजह है कि माँ को यहाँ लाया गया है। माँ के द्वारा नींव रखवायी गयी। इस समय नगर के अनेक गण्य-मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

यह समारोह हो जाने के बाद हमलोग मुकुन्द भाई के यहाँ आये। अभी तक यहाँ श्रीमद्‌भागवत पाठ आरम्भ नहीं हुआ था। मुकुन्द भाई माँ के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि शुभ कार्य आरम्भ होने के पहले माँ की पूजा हो।

सज्जित पूजा पण्डाल। पण्डाल में स्वामी माधवतीर्थजी आदि महात्मा गण उपस्थित हैं। सभी लोगों के सामने पण्डाल के मध्य में माँ की पूजा का आसन बनाया गया है। पूजा आरम्भ होने ही वाला था कि सहसा माँ उठीं और पूजा पात्र से कई मालाएँ लेकर अपने हाथ से महात्माओं को पहनाने लगीं। बाद में कई मालाएँ तोडकर उपस्थित जनता की ओर फेंकने लगीं। साथ ही बोलीं—"इस शरीर को तो पूजा-तूजा नहीं आता।" इतना कहने के बाद जमीन में लोटती-पोटती हुई लोगों को साष्टांग प्रणाम करने लगीं। हम लोग विस्मय से अवाक् रह गये।

इसके बाद मुकुन्द भाई और उनकी पत्नी सुमित्रा बेन ने माँ को आसन पर बैठाकर पंचामृत द्वारा चरण धोने के पश्चात् माला,

चन्दन, वस्त्र, नैवेद्यादि षोडशोपचार से विधिवत् माँ की पूजा की। साथ ही साथ गुजराती वेदपाठी ब्राह्मण समस्वर से वेद मन्त्र पाठ करने लगे। सब कुछ मिलकर पूजा स्थान में एक अपूर्व पूत भावमय परिवेश की सृष्टि हुई।

इसी बीच माँ पास ही रखे न जाने कहाँ से एक पुस्तक उठा लीं। उक्त पुस्तक को गोद में रखकर वे स्थिर भाव से बैठ गयीं। मैंने देखा कि उक्त पुस्तक के ऊपर श्रीकृष्ण का एक रंगीन चित्र है। ऐसा लगता था मानों श्रीकृष्ण की पूजा सामने रखे चित्रपट की हो रही है। जब तक पूजा होती रही माँ धीर भाव से, निश्चल अवस्था में, निर्निमेष दृष्टि से बैठी रहीं। माँ के आनन पर एक अनुपम दीप्ति उद्भासित हो रही थी। पूजा के बाद आरती समाप्त होने पर वहुत देर बीते माँ स्वाभाविक स्थिति में वापस आयीं।

इसके बाद भागवत-पाठ आरम्भ हुआ। पाठ और व्याख्या की व्यवस्था पृथक् ढंग से की गयी है। पाठ करेंगे कई ब्राह्मण और व्याख्या करेंगे स्थानीय एक विशिष्ट पंडित श्री सांगक्लेचर व्याकरण-तीर्थ वेदान्तशास्त्री।

यहाँ से उठकर माँ कान्तिभाई के यहाँ चली आयीं। यहाँ हरिबाबाजी का सत्संग हो रहा था। माँ यहाँ कुछ देर तक बैठीं। इसके बाद हरिबाबाजी को चण्डी पूजा के स्थान पर ले जाया गया। आज से चण्डी पूजा और पाठ आरम्भ हुआ। यह कार्यक्रम तिथि पूजा दिवस तक होता रहेगा।

आज अक्षय तृतीया है। आज के दिन महिलाएँ जल-दान करती हैं। वस्तुतः यह बंगाल की रीति है, किन्तु मैंने देखा कि यह रीति इस अंचल में भी प्रचलित है। कान्तिभाई की पत्नी, ठाकुर भाई की पत्नी, बीना, उर्मिला आदि ने माँ तथा हरिबाबाजी के

सामने ब्राह्मणों को जलपूर्ण जलपात्र, फल तथा मिष्ठान्न दान किया।

जितने दिनों तक भागवत-सप्ताह जारी रहेगा, मुकुन्द भाई के विशेष आग्रह के कारण उतने दिनों तक उन्हीं के यहाँ माँ का भोग होगा। फलस्वरूप कुछ देर के लिए माँ को मुकुन्दभाई के यहाँ ले आया गया। भोग के बाद माँ वहीं विश्राम करेंगी।

तीसरे पहर माँ पुनः पाठ के स्थान पर जाकर बैठीं। पाठ समाप्त होने के बाद आरती के पश्चात् माँ डेरे पर वापस आ गयीं।

प्रत्येक वर्ष सवेरे और शाम को मां की आरती की जाती है। किन्तु इस बार माँ का आना-जाना दो मकानों में है, इसलिए उन्हें ठीक समय पर पाना कठिन हो रहा है। आज शाम के पश्चात् माँ कमरे में आकर बैठीं तब वहीं उनकी आरती हुई। मौन के कुछ पूर्व माँ मुकुन्द भाई के डेरे पर जाकर रात १० बजे वापस आयीं।

रात ३ बजे माँ की पूजा आरम्भ हुई। माँ कमरे के बाहर लान में सोयी हुई थीं। वहीं पूजा का आयोजन हुआ। विभिन्न स्थानों से आये हुए भक्त वृन्द यहाँ आकर समवेत हुए। यथा समय कुसुम ब्रह्मचारी ने माँ की पूजा करना शुरू किया। बहुत दिन पहले की बात है, मेरी इच्छानुसार गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा नदी तथा गंगोत्री, यमुनोत्री, मानसरोवर का पानी अनेक कष्ट से संग्रह करके रखा गया था। सिन्धु नदी का पानी भी पाकिस्तान से हवाई जहाज के द्वारा ले आया गया है। इन सब पानियों से माँ का चरण धुलाया गया। पंचामृत द्वारा अभिषेक किया गया, फिर पूजा प्रारंभ हुई। जब तक पूजा होती रही, माँ एक किनारे सोयी रहीं। पूजा, भोग, आरती होते-होते भोर के ५ बज गये। पूजा के बाद जब लोग पुष्पांजलि देकर चले गये तब माँ की मशहरी गिरा दी गयी। माँ

देर तक एक ही अवस्था में लेटी रहीं। जब वे उठीं तब दिन के १० बज चुके थे।

३ मई, १९५७

आज जब माँ सोकर उठीं तब उनके कमरें में आरती की गयी। इसके बाद माँ कुछ देर के लिए रास-लीला तथा राम-अर्चा के स्थान पर जाकर बैठीं। सत्संग समाप्त हो जाने के बाद माँ मुकुन्दभाई के डेरे पर चली गयीं। आज मुकुन्द भाई के वहाँ दीदी माँ और मैंने प्रसाद पाया। माँ को आज १६ पदों का भोग दिया गया था।

आज भी शाम के कुछ पहले माँ मोटर पर टहलने गयी थीं। वापस आकर तुरन्त हरिबाबाजी के कीर्त्तन में मुकुन्दभाई के डेरे पर चली गयीं। मौन के पश्चात् पण्डाल में लगभग एक घण्टा मातृ सत्संग हुआ। रात १० बजे जब माँ कान्ति भाई के डेरे पर आयीं तब उनकी आरती की गयी।

४ मई, १९५७

आज माँ सवेरे ९ बजे सोकर उठीं। किसी सूरत से माँ की आरती जब समाप्त हुई तब वे रासलीला के स्थल पर जाकर बैठीं। कुछ देर बाद वापस आ गयीं। पुनः १०॥ बजे राम-अर्चा के निकट जाकर बैठीं। राम-अर्चा समाप्त होने पर माँ आज बहुत दिनों के बाद स्नान करने गयीं। स्नान करने के बाद माँ मुकुन्द भाई के डेरे पर चली गयीं।

तीसरे पहर लगभग ५॥ बजे माँ हरिबाबाजी के सत्संग में

गयीं। सत्संग के बाद ठाकुर भाई माँ को कंकड़िया तलाब ले गये। उनके साथ बहुत से लोग थे। वहाँ जाकर टहलती हुई माँ कहने लगीं—"जागतिक दृष्टि से कुछ खराब दिखाई दे रहा है।" इसका क्या अर्थ है, उस वक्त हमलोग नहीं समझ सके।

वहाँ से वापस आकर माँ मुकुन्दभाई के डेरे पर चली गयीं। वहाँ से जब माँ वापस आयीं तब रात के १०।। बज चुके थे। आरती के बाद माँ विश्राम करने चली गयीं।

९ मई, १९५७

आज ७।।। बजे चन्द्रकान्त सेठ आकर माँ और हमलोगों को अपने नये मकान में ले गये। भइया भी माँ के साथ गये।

वहाँ से वापस आकर माँ कान्तिभाई के यहाँ कुछ देर तक रास-लीला देखती रहीं और कुछ देर तक राम-अर्चा के निकट बैठने के बाद मुकुन्दभाई के यहाँ भागवत-सप्ताह में चली गयीं। आज माँ शाम को यहाँ नहीं आयीं। आज उर्मिला के श्वसुरजी का जन्म दिन है। हरिबाबाजी अपनी पूरी पार्टी के साथ उन्हीं के मकान में हैं। आज शाम को वहीं पर कीर्त्तन, राम-अर्चा आदि होने वाला है। आज ५।।। बजे मुकुन्द भाई के मकान से माँ सीधे वहाँ चली गयीं। हमलोग भी ७-८ गाड़ी में लदकर वहाँ पहुँचे। वहां मां, दीदी मां, मुझे तथा उपस्थित साधु-महात्माओं को उन-लोगों ने वस्त्र दान दिया। उर्मिला के अनुरोध पर मां कुछ देर तक "हे भगवान-हे भगवान" कीर्त्तन करती रहीं। वहां से वापस लौटते-लौटते रात के १० बज गये।

वहाँ से वापस आकर माँ हमलोगों को बहुत सी बातें बताने लगीं। उपस्थित लोगों में कुछ लोग संन्यासी और ब्रह्मचारी भी

थे। साधु-सेवा किस तरह करनी चाहिए ? लोगों के साथ किस तरह विनम्र और मधुर व्यवहार करना चाहिए, किस प्रकार सर्वदा अन्तर में प्रफुल्लता भरते हुए सेवा कार्य करना चाहिए—इस तरह के नाना विषय के उपदेश माँ हमलोगों को देती रहीं। माँ के श्री मुख से माँ के शरीर के ऊपर साधना के खेल का इतिहास थोड़ा-बहुत सुनने में आया। इसके बाद माँ १ बजे के बाद विश्राम करने गयीं। हमलोग एक-एक करके वापस चले आये।

६ मई, १९६७

आज भी माँ मुकुन्द भाई के घर पर भोग के समय कुसुम, उदास, वुनी, परमानन्द स्वामीजी आदि को बहुत सी बातें बताती रहीं। बातचीत के सिलसिले में माँ ने कहा—"पहले एक समय ऐसा था जब यह शरीर किसी के किसी भी काम के प्रति ध्यान नहीं देता था। इसके बाद कुछ ऐसा भी हुआ कि लोगों के काम-काज, व्यवहार देखने पर भी कुछ कहा नहीं जाता था। इसके बाद फिर एक ऐसा समय आया जब किसी का कोई व्यवहार देखकर उसे प्राइवेट में बुलाकर कहा जाता था कि वह अपने स्वभाव का संशोधन कर सकता है। किन्तु आजकल कैसा हो गया है ? आज-कल देखा जा रहा है कि यह शरीर लोगों के बीच किसी-किसी को उसकी त्रुटि बतला देता है। यह जो व्यवहार है, यह भी किन्तु अपने को लेकर अपने खेल की तरह है। कोई यह न सोच ले कि यह जो व्यवहार है, इसके द्वारा दूसरों का दोष देखा जा रहा है। वास्तव में यह उस दृष्टि की नहीं है। यह कैसा है जानते हो ? यह तो ऐसा है जैसे अपने हाथ से ताली बजाना, फिर स्वयं ही उसे सुनना। इसी प्रकार का और क्या। किसी को परेशान करने के लिए या दूसरों के दोष की आलोचना करने के लिए नहीं। पृथक

दृष्टि से इस शरीर का कोई ख्याल नहीं है। अपने को लेकर अपनी लीला।" इस प्रकार की बहुत सी बातें माँ कहती रहीं।

भक्तों में से कुछ लोग संन्यास ग्रहण करना चाहते हैं, जब यह प्रसंग नारायण स्वामी ने माँ के निकट उत्थापित किया तब माँ ने कहा—"ठीक है, तुम लोग अगर संन्यास लेना चाहो तो कैसे रहना चाहिए, किन नियमों का पालन करना उचित है। यह सब बातें एक बार लिखकर रख दो।"

एक मद्रासी सज्जन जिनकी उपाधि पिल्लई है, माँ के साथ कुछ दिनों से हैं। वे इस समय संन्यास लेने के इच्छुक हैं। माँ ने उनसे कहा—"ठीक है, एक वर्ष तक संन्यासी किस तरह रहते-चलते हैं, उन नियमों का पालन करके देखो।"

नारायण स्वामी ने माँ से कहा कि प्रति वर्ष माँ के जन्मोत्सव के अवसर पर कम से कम दो-एक ब्रह्मचारियों को संन्यास लेना चाहिए। माँ के सान्निध्य में रहने पर किसे कैसा वैराग्य हुआ, यह सब बातें विचार करते हुए संन्यास लेना चाहिए। कुसुम ने माँ से कहा कि आश्रमवासी साधु-ब्रह्मचारियों में पारसी साधु केशवानन्द में त्याग, वैराग्य, तितिक्षा उत्तम है।

शाम के समय माँ को स्थानीय श्री अद्वैतानन्द सागराचार्यजी के मठ में ले जाया गया। यहाँ भी भागवत-सप्ताह हो रहा है। माँ को बड़े आदर के साथ व्यासासन के बगल में बैठाया गया। वहाँ कुछ देर रहने के बाद माँ कान्ति भाई के डेरे पर वापस चली आयीं।

आज मुकुन्द भाई के घर पर भागवत-सप्ताह में श्री कृष्ण जन्म सम्बन्धी अध्याय पाठ करने के वक्त विशेष रूप से आरती आदि की व्यवस्था हुई थी। माखन और मिसरी का भोग दिया गया था।

पाठक श्री विष्णुदेवजी ने माँ को अपने हाथ से किंचित् माखन मिसरी खिलाया। उन्होंने जब प्रार्थना की तब माँ ने भी उनके मुँह में प्रसाद रख दिया। इसके बाद उपस्थित कई लोगों के मुँह में थोड़ा-थोड़ा प्रसाद माँ ने डाल दिया। इनमें स्वामी माधवातीर्थ, परमानन्द स्वामी, मैं और अन्य बहुत से लोग थे।

७ मई, १९५७

अहमदाबाद में भोलानाथ जी का तिरोधान दिवस

आज भोलानाथ जी की तिरोधान तिथि है। माँ सवेरे उठकर मुकुन्द भाई के घर भागवत-पाठ में गयीं। वहाँ से कुछ देर के लिए रास-लीला स्थल पर भी गयीं।

भोलानाथजी की तिथि के उपलक्ष्य में यहाँ के परिचितों को, हरिबाबाजी के साथियों को तथा संन्यास आश्रम, गीता-भवन और कई मठों के साधु-महात्माओं को निमन्त्रित किया गया। लोगों का माला-चन्दन से स्वागत करते हुए आदर के साथ भोजन कराया गया। हरिबाबाजी को विशेष रूप से आलखल्ला, पगड़ी और चादर भेंट दिया गया। साधुओं के भोजन के समय माँ स्वयं उपस्थित रहकर उनकी आरती करवाईं। आज भी माँ तरह-तरह की बातें कहती रहीं—"यद्यपि पहले से सब निर्धारित है, फिर भी शक्तिशाली पुरुष होने पर उसे बदल सकता है। साधारण क्षेत्र में ऐसा हो सकता है कि जो होने वाला है, उसके लिए वे लोग कहते हैं; किन्तु ऐसा भी अक्सर देखा गया है कि जो निर्धारित नहीं है, वे लोग उसे भी कर सकते हैं। गोकि ऐसे व्यक्ति कोटि में गुटी (कुछ), अर्थात् करोड़ों में एक।"

८ मई, १९५७

श्री श्री माँ के श्री मुख से विभिन्न विषय की बातें

पिछली रात को माँ बहुत सी बातें कहती रहीं। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि एक दिन माँ अचानक कह उठी थीं—"जागतिक दृष्टि से खराब दिखाई दे रहा है।" इसके अलावा मृत देह देख चुकी हैं। हमलोगों ने बराबर गौर किया है कि माँ इस तरह का कुछ जब कहती या देखती हैं तब कोई न कोई दुःसंवाद मिलता है। कल रात को समाचार मिला कि मोरवी के वृद्ध महाराज लम्बे अर्से तक बीमार रहने के पश्चात् स्वर्गवासी हो गये हैं। वे माँ के प्रति काफी भक्ति-श्रद्धा रखते थे। बहरहाल एक समाचार मिला। माँ की कृपा से अब कोई नया समाचार न मिले।

आज सवेरे उठकर माँ पहले रास-लीला में जाकर बैठीं। राम-अर्चा समाप्त होने के बाद माँ को चण्डी पाठ के स्थल पर थोड़ी देर के लिए बैठाया गया। माँ की आरती आज वहीं हुई।

इसी बीच वृन्दावन स्थित राधावल्लभजी के मन्दिर के महन्त श्री मुकुटबिहारीजी माँ का दर्शन करने के लिए आकर माँ के कमरे में बैठे। ज्योंही माँ ने कमरे में प्रवेश किया त्योंही माँ के पैरों में पुष्पांजलि चढ़ाते हुए उन्होंने प्रणाम किया। माँ के साथ महन्तजी की कुछ देर बातचीत होती रही।

महन्तजी—"जिस लड़के को दूध पी लो कहने पर पीता है, माँ का ध्यान उसकी ओर नहीं रहता; किन्तु जो नटखटपन करता है उसके प्रति मां का ध्यान विशेष रूप से रहता है।"

माँ—"अगर वह सचमुच माँ हुई तो वे इन सब बातों पर ध्यान नहीं देतीं।"

महन्तजी—"बालक जब यह देखता है कि उसके प्रति माँ का ध्यान नहीं है तब वह नटखटपन करता है। वह यह देखता है कि माँ क्या करती हैं।"

माँ—"जो बालक परीक्षा करना चाहता है वह ऐसा करता ही है। बालक भी होगा परीक्षा भी करेगा।" इतना कहने के बाद खिलखिला कर हंस पड़ीं।

पुनः बातचीत के सिलसिले में महन्त जी ने कहा—"ठीक कह रही हैं माँ; पर जो बादल पानी लेकर ऊपर जाता है, वही बादल पानी लेकर नीचे उतरता है। जो बादल पानी नहीं बरसाता वह बादल तो बादल नहीं है। पर बिरह में..........।"

उनकी बात पूरी होने के पहले ही माँ कह उठीं—"हाँ विरह में ही संयोग, दोनों ही एक ही स्थान में।"

महन्तजी ने पुनः कहा—"माँ, लोग यहाँ आते हैं, लेकिन बरतन लेकर नहीं आते। इसीलिए एक बूंद पानी तक नहीं पाते।"

माँ—"फिर बरतन ले आते हैं तो उसे उल्टा करके रख देते हैं।"

महन्तजी—"ठीक कह रही हैं माँ, बरतन उल्टा करके रखने का मतलब है घर की ओर ध्यान रखना। कृपा-वारि लेने के लिए बरतन दीनता से तैयार करना पड़ता है।"

माँ—"पिताजी, दीनता से उल्टा बरतन भी सीधा हो जाता है।"

आज रात में मुकुन्द भाई के घर पर सत्संग के समय उनसे कुछ कहने के लिए अनुरोध किया गया। मुकुटबिहारी जी महा-पण्डित हैं। माँ कह उठीं—"पिताजी, वृन्दावन की तरह नटखट न हो।"

पिछली बार वृन्दावन में भागवत-सप्ताह के समय उन्हें आमंत्रण किया गया था। वे भाषण देने के लिए राजी हो गये थे, पर विशेष कारण से उपस्थित नहीं हो सके थे। इसीलिए माँ ने उल्लिखित बातें कहीं। माँ की बातें सुनकर वे लज्जित होते हुए बोले—"नहीं माँ, वृन्दावन ठहरा ब्रजभूमि; वहाँ नटखट हो सकता था। लेकिन यह है—अपना प्रदेश। यहाँ माँ के आदेश की रक्षा करना कर्त्तव्य है।"

उनके जाने के बाद माँ १।। बजे लगभग मुकुन्दभाई के डेरे पर आयीं।

दोपहर को जयपुर से मैसूर की महारानी और २-३ व्यक्ति आने वाले हैं। उन लोगों को लाने के लिए कुसुम को स्टेशन भेजा गया है। वे लोग माँ के यहाँ भोजनादि करने के बाद यहाँ आये।

आज भागवत-पाठ समाप्त होने के बाद पाठक के अनुरोध पर माँ लगभग आधे घण्टे तक बड़े सुन्दर ढंग से कीर्त्तन कराती रहीं। कीर्त्तन के बाद पण्डाल में ही माँ की आरती हुई।

वहाँ से माँ मुकुन्द भाई के यहाँ चली गयीं। वहाँ भी माँ कुछ देर तक कीर्त्तन कराती रहीं। वहाँ से वापस लौटने में रात के लगभग ११ बज गये।

९ मई, १९५७

आज सवेरे उठकर माँ मुकुन्दभाई के यहाँ चली आयीं। बीच में कुछ देर के लिए यहाँ आकर पुनः अपने डेरे पर चली गयीं।

आज सवेरे से माँ का भाव जैसे खूब गम्भीर सा लग रहा है। बहुत कम बोल रही हैं। भोर के वक्त मुँह धोते समय अपने भाव में विभोर होकर गाती रहीं—"मेरा सब होगे, सब होगे, सब होगे तुम।"

आज तीसरे पहर श्रीमद्भागवत-सप्ताह समाप्त हुआ। हमलोगों ने मुकुन्द भाई के यहाँ प्रसाद ग्रहण किया। पाठ समाप्त होने के बाद आश्रम की ओर से कुसुम के द्वारा कुछ फल और रुपये भेंट किये गये। बाद में भागवत एवं मां की आरती हो जाने के बाद मां कुछ देर तक नाम कराती रहीं।

शाम के बाद माँ की आरती कान्ति भाई के बगीचे में हुई। वहाँ से माँ हरिबाबाजी के कीर्त्तन में गयीं और वापस लौटीं रात ११ बजे।

मैसूर की महारानी भोजनादि के पश्चात् जाते समय माँ को जब प्रणाम करने आयीं तब अचानक माँ उन लोगों को लेकर मोटर से बाहर चली गयीं। जाते समय कहती गयीं—"उड़ती चिड़िया का आना जाना।" साथ में किसी को जाने के लिए मना कर गयीं। माँ का भाव कुछ गम्भीर है, पता नहीं कहाँ जायँगी क्या करेंगी। फलस्वरूप हमलोग कुछ चिन्तित से रहे। माँ लगभग १२॥ बजे वापस आयीं। सुना कि महारानी को पहुँचाकर वे मुकुन्द भाई के यहाँ गयी थीं। माँ जिस वक्त सोने गयीं, उस वक्त रात के १०॥ बज चुके थे।

१० मई, १९५७

आज सवेरे रासलीला आदि मुकुन्द भाई के घर पर होने का निश्चय हुआ है। माँ इसीलिए वहाँ जल्दी से चली गयीं। वहाँ ९॥ बजे रासलीला समाप्त होने पर माँ राम-अर्चा में गयीं। इसके बाद लगभग १०॥ घण्टे तक समवेत भाव से समग्र गीता का पाठ हुआ। माँ अन्त तक वहाँ बैठी रहीं।

आज मुकुन्द भाई ने पाठ समाप्ति के उपलक्ष्य में लोगों को भण्डारा दिया। भोग के पश्चात् माँ आज मुकुन्द भाई के अनुरोध पर उनके यहाँ विश्राम करती रहीं। विश्राम के वाद लगभग ६ वजे माँ यहाँ आयीं।

यहाँ सत्संग समाप्त होने के बाद माँ को लेकर मुकुन्द भाई और उनकी पत्नी सुमित्राबेन श्रीमद्भागवत पुस्तक को पाठक के डेरे पर पहुँचा आये। यह यहाँ की स्थानीय रीति है।

आगामी कल से सभी कार्यक्रम कान्ति भाई के डेरे पर होगा। यद्यपि कान्ति भाई अनुपस्थित हैं, फिर भी कुन्दन, लीला, ठाकुर भाई आदि मिलकर माँ का उत्सव एवं सत्संग का सारा इन्तजाम कर रहे हैं। विशेष रूप से उर्मिला का पति मधुकान्त काफी परिश्रम कर रहा है। ठाकुर भाई की लड़की बीना तथा शक्ति ने दिन-रात परिश्रम करते हुए पण्डाल तथा मां के कमरे को सजाया है। माँ को गर्मी महसूस न हो, इसलिए घर के चारों तरफ खस की टट्टियों में पानी का पम्प लगा दिया गया है। विशाल पण्डाल के चारों ओर खस के द्वारा ठंडा रखने का इन्तजाम किया गया है। इतना विशाल आयोजन होने पर भी माँ वहाँ अधिक दिनों तक ठहर नहीं पा रही हैं। वहाँ सारा कार्यक्रम हो भी नहीं रहा है,

कान्ति भाई के डेरे पर उत्सव

इसलिए वहाँ के लोग मन ही मन दुःखित थे। किन्तु कल से वहाँ सभी कार्यक्रम होंगे, सुनकर लोग प्रसन्नता से फूले नहीं समाये।

११ मई, १९६७

आज सवेरे योगी भाई दिल्ली से यहाँ आने वाले हैं। मधुकान्त तथा उर्मिला स्वयं बड़े उत्साह के साथ योगी भाई को ले आने के लिए मोटर द्वारा वड़ौदा गये हैं। योगी भाई को आने में देर होते देख हम सब चिन्तित हो उठे। लगभग १ बजे उर्मिला योगी भाई को लेकर यहाँ आयी। सुना कि बड़ौदा से वापस आते समय एक दूसरी गाड़ी से धक्का लग जाने के कारण मधुकान्त की गाड़ी टूट गयी। माँ की असीम कृपा से सभी सकुशल बच गये। मधुकान्त और योगी भाई के साथ के लोग अभी तक वहीं हैं। उर्मिला किसी सूरत से एक दूसरी गाड़ी के जरिये योगी भाई को लेकर यहाँ आ गयी।

मधुकान्त और राजा साहब के सेक्रेटरी लगभग ४ बजे थाने से वापस आये। इन लोगों को देखकर हमलोग निश्चिन्त हुए। जैसी हालत हम लोगों ने सुनी थी, उससे किसी के बचने की उम्मीद नहीं थी। माँ की कृपा से आज बहुत बड़ी मुसीबत से यह लोग बच गये।

१२ मई, १९६७

आज सवेरे १०८ कुमारियों को भोजन कराया गया। प्रत्येक कुमारी को जरी का चादर ओढ़ाकर, माला-चन्दन से सजाकर आरती की गयी। इनके साथ ५ बटुक भी थे। एक कुमारी आधा

भोजन कर उठ गयी। माँ जल्दी से उस पत्तल को अपने हाथ से उठाकर बोलीं—"मेरे मुँह में थोड़ा सा डाल दो तो।" इसके बाद माँ अपने हाथ से उक्त कुमारी का प्रसाद वितरण करने लगीं।

तीसरे पहर ४ बजे के लगभग माँ हरिबाबाजी के सत्संग में जाकर बैठीं। घण्टा भर के बाद माँ वापस आकर अपने कमरे में सो गयीं। शाम के बाद ठाकुर भाई की गाड़ी से थोड़ी देर के लिए घूमने गयीं। साथ में मुकुन्द भाई की गाड़ी से लड़कियाँ भी गयीं। अजीत भाई के घर, विश्वविद्यालय का मैदान आदि स्थान घूमने के बाद माँ वापस आ गयीं। वापस आकर माँ हरिबाबाजी के सत्संग में जाकर बैठीं।

रात के समय योगी भाई के साथ माँ परवर्ती प्रोगाम के बारे में कुछ बातचीत करती रहीं। जयपुर के मदन मोहन वर्मा का विशेष आग्रह है कि माँ माउण्ट आबू में जाकर विश्राम करें। भइया माँ के लिए पूना में इन्तजाम कर रहे हैं। कुछ लोग देहरादून और सोलन के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

योगी भाई के चले जाने के बाद माँ मुझसे कुछ बातें कहने लगीं। कुछ दिन पूर्व कई ब्रह्मचारियों में न जाने किस विषय पर कहा सुनी हो गई थी। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में माँ कहने लगीं—"यह शरीर यह भी कह सकता है कि तुम लोग जो इच्छा हो कर सकते हो। किन्तु ख्याल होता है कि वे लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह उनके लिए मंगलकारी नहीं है। यही वजह है कि कुछ कहा जाता है, पर इस शरीर के लिए सब बराबर है।"

मैंने माँ से निवेदन किया—"माँ हम सबके लिए संशोधन की आवश्यकता है।" माँ ने कहा—"हाँ, किन्तु कहने पर देखा गया है

कल्याणमयी माँ का उपदेश

कि अनेक का मन खराव होता है। आज-कल अक्सर मन में आता है कि कुछ न कहकर इस शरीर के ऊपर से ही हो जाय या यह शरीर तुम लोगों के निकट से दूर हट जाय।"

आगे पुनः कहने लगीं—"जो कुछ कहा जाता है, वह उनके मंगल के लिए ही, असंतोष या क्रोध का कोई प्रश्न नहीं है। आपस में मिल जुलकर रहने का अर्थ है—सह्य शक्ति वृद्धि करना, उत्ते-जित भाव से बातचीत न करना, जब इस मार्ग पर आये हो तव यही भाव लेकर रहने का प्रयत्न करो।" माँ की यह बातें सुनकर जिन लोगों में कहा सुनी हुई थी वे सब अनुतप्त होकर माँ के श्री चरणों में अच्छा बनने की प्रार्थना करने लगे। आज माँ लगभग ११॥ बजे सोने गयीं।

१३ मई, १९५७

गत रात्रि को २॥ बजे से लेकर भोर छः बजे तक मां पण्डाल में कीर्त्तन के पास बैठी रहीं। रात भर बहुत सुन्दर नाम हुआ। बीच-बीच में मां भी योगदान देती रहीं। आज सवेरे बम्बई से भइया, कानिया लीला बेन, सुनैना आदि आये हैं।

सत्संग समाप्त होने के बाद मां चिनू भाई के यहां घूमने गयीं। वहां नवचण्डी पाठ हो रहा था।

आज कई दिनों से मां के पैरों में एक प्रकार का दर्द है। बाहर से कुछ समझ में नहीं आता। उस दर्द को लेकर भी मां इतना चल-फिर रही हैं।

कुछ दिन पहले मां को चन्द्रकान्त सेठ के घर में गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में ले जाया गया था। उन लोगों के विशेष आग्रह पर आज मां को दोपहर के समय उस मकान में विश्राम के लिए ले जाया गया। मां के साथ परमानन्दस्वामीजी, उर्मिला और उषा गये।

वहां से ४ बजे वापस आकर मां सत्संग में जाकर बैठीं। सत्संग समाप्त होने पर मां, हरिबाबाजी आदि सभी लोग चिनू भाई के मकान में गये। वहां से वापस आते-आते रात के ८ बज गये। रात को सत्संग के बाद जयन्ती महोत्सव तथा वृन्दावन में हुए भागवत-सप्ताह की फिल्म लोगों को दिखायी गयी। माँ लगभग १२ बजे तक पण्डाल में बैठी रहीं।

रात को मां का परवर्त्ती प्रोग्राम निश्चित हुआ। मां १८ तारीख को यहां से बम्बई चली जायँगी। वहां २-३ दिन रहने के बाद पूना चली जायँगी। लीला बेन आदि यह आग्रह करते रहे कि मां कृपा करके कम से कम वहां ५-७ दिन ठहरें।

१५ मई, १९५७

आज सवेरे मां उठकर पण्डाल में जाकर बैठ गयीं। राम-अर्चा समाप्त हो जाने के बाद भी मां काफी देर तक पण्डाल में बैठी रहीं।

पुनः तीसरे पहर ४। बजे हरिबाबाजी के प्रोग्राम में चली आयीं। मां कुछ देर बैठे रहने के बाद मोटर से घूमने चली गयीं। आज ९॥ बजे के बाद जयन्ती की फिल्म दिखाई गयी।

१६ मई, १९५७

आज रात को माँ की जन्म तिथि पूजा है। सवेरे जब माँ उठीं तब शोभा ने उन्हें वस्त्र, मुकुट आदि से खूब सुन्दर ढंग से सजायी।

अहमदाबाद में श्री श्री माँ की जन्म तिथि पूजा

बम्बई से लीला बेन भी बहुत सी जरी की माला लायी हैं। यह सब मुकुट जरी की मालाएँ तथा और ८० गज लांगलाट कपड़े मेरे द्वारा रास लीला पार्टी वालों को देने के लिए माँ ने भिजवाया।

रात को मौन समाप्त होने पर सभी लोग मिल-जुलकर पूजा कार्य में लपट गये। मधुकर और शक्ति विशेष रूप से परिश्रम करने लगे। पूजा का आयोजन पण्डाल के भीतर ही हो रहा है, वर्ना इतने लोगों के बैठने का इन्तजाम करना असम्भव हो जाता। माँ के लिए बैठने वाली चौकी उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर करते हुए पण्डाल के बीच में रखा गया। फूल-माला, मखमल के ऊपर जरी की कसीदाकारी वाला कीमती चादर माँ के चौकी के ऊपर सजाया गया था। एक ओर साधु-संन्यासी, महात्माओं के बैठने के लिए ३ चौकियों के ऊपर गलीचा बिछाकर बैठने का स्थान बनाया गया है। दूसरी ओर वेदपाठियों के लिए बैठने की जगह है। सामने पुरुष और महिलाओं के बैठने के लिए अलग-अलग स्थान बनाया गया है। बीच में दोनों किनारे रस्सियों के द्वारा आने-जाने का मार्ग बनाया गया है। सम्पूर्ण व्यवस्था बहुत सुन्दर ढंग से की गयी है।

माँ की चौकी के सामने पूजा का आयोजन किया गया है। दोनों ओर त्रिपदी के ऊपर १२० प्रकार के फल तथा विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ रखी हैं। पूजक के आसन के बगल में पूजा के लिए

प्रचुर फूल और माला है। यह सब ठीक-ठाक करते-करते रात के २॥ बज गये। रात को ठीक ३ बजे, ठाकुर भाई, मुकुन्द भाई, योगी भाई और भइया माँ को पूजा मण्डप में ले आये। जब मुकुन्द भाई ने माँ को सो जाने के लिए कहा तो वे सो गयीं। योगी भाई माँ के लिए एक बहुमूल्य सिल्क की साड़ी लाये हैं। उसी को पहना कर माँ को पूजा मण्डप में ले आया गया है। यहाँ लीला और कुन्दन बेन अपनी पसन्द के अनुसार एक बहुत सुन्दर साड़ी खरीद लायी हैं। उसे माँ के ऊपर चादर के रूप में ओढ़ा दिया गया।

ब्रह्मचारी कुसुम ने माँ की पूजा शुरू की। पूजक को घण्टी बजते ही उपस्थित महिलाओं की हुलूध्वनि तथा शंखनाद से विशाल पण्डाल मुखरित हो उठा। धूप और गुगुल के गन्ध से वातावरण गमक रहा था। ५०० से अधिक नर-नारो माँ की शुभ तिथि पूजा देखने के लिए भक्ति भाव से उद्ग्रीव होकर बैठे रहे। सभी भक्त गण मधुर स्वर से "माँ-माँ" कोर्तन कर रहे हैं। एक अपूर्व आनन्द भावलोक की सृष्टि हुई है। जिसका वर्णन भाषा के माध्यम से नहीं किया जा सकता। श्री हरिबाबाजी, योगेश ब्रह्मचारीजी, माधवानन्द स्वामीजी आदि अनेक महात्मा अपने-अपने आसन पर आसीन हैं। इन सभी लोगों के ललाट पर चन्दन और गले में माला देकर सम्मानित किया गया है।

पूजा आरम्भ हो गयी है। पवित्र तीर्थ जल से माँ के दोनों चरण धोकर पंचामृत द्वारा अभिषेक किया गया। यथा विधि षोड़शोपचार से पूजा समाप्त करने के वाद माँ के चारों ओर १०८ पद्मों की माला सजा दी गयी। भोग आदि लगाने तथा आरती समाप्त करते-करते ५ वज गये। इसके बाद उपस्थित सभी लोग एक-एक कर माँ को प्रणाम करते हुए वापस जाने लगे। ठाकुर भाई, चिनू

भाई, मुकुन्द भाई खड़े रहकर सारी व्यवस्था करते रहे। इस प्रकार प्रणाम की क्रिया समाप्त होते-होते ६॥ बज गये।

धीरे-धीरे माँ को मण्डप से उनके कमरे में ले आकर लिटा दिया गया। उस समय माँ में एक अपूर्व भाव विह्वलता थी। दोनों नैनों में आवेश, बदन में एक अपूर्व स्वर्गीय दीप्ति थी। माँ हमलोगों की हैं, इस मर्त्य में देहधारी हैं, यह विश्वास नहीं हो रहा था। ऐसा लगता था मानो किसो दिव्य धाम से करुणाघन एक देवी मूर्ति इस मर्त्य लोक में सद्यः आविर्भूता हुई हैं।

किसी प्रकार माँ के इस भाव विवश शरीर को पकड़कर शय्या पर शयन करा दिया गया हमलोग हल्के कदमों से बाहर चले आये।

१७ मई, १९५७

आज माँ १० बजे के लगभग सोकर उठीं। उस समय तक वे स्वाभाविक स्थिति में नहीं आयी थीं। फिर भी हाथ मुँह धुलाकर सामान्य जलपान दिया गया। धीरे-धीरे जाकर माँ रासलीला के स्थल पर बैठ गयीं। आज रासलीला वाले विदा हो जायँगे। दक्षिणा वस्त्र, माला आदि मैंने उन लोगों को दिया।

११॥ बजे के लगभग माँ पण्डाल से वापस आयीं। यहाँ राजा प्रताप सिंहजी ने माँ की पूजा की। तीसरे पहर भइया और लीला ने माँ की पूजा की आज रात को यह लोग बम्बई चले जायँगे।

मैनपुरी से नागेश्वरी प्रसाद जी एवं उनकी पत्नी सुशीला आयी है। सुशीला स्वप्न में माँ को शिव के वेष में देख चुकी है, इसलिए उसने आज माँ को त्रिशूल, डमरू, कुण्डल, मस्तक में अर्ध चन्द्र, बाघम्बर, बैठने के लिए मृगचर्म, चांदी के खड्ग इत्यादि से शिव

के रूप में सजाया है। माँ को शिव के रूप में दर्शन करने के बाद से उसकी यह वासना बहुत दिनों की थी जो आज पूरी हो गयी। जब श्रृंगार सम्पूर्ण हो गया तब माँ बोलीं—"तुम लोगों का बहु-रूपी श्रृंगार समाप्त हुआ।" यह कह कर वे सब खोल खालकर देखने लगीं।

तीसरे पहर माँ सभी कार्यक्रमों में भाग लेती रहीं। शाम के पहले ठाकुर भाई आज माँ को चन्दोली सरोवर दिखाने के लिए ले गये। वहाँ श्री श्री विद्यानन्द स्वामीजी से मुलाकात हुई। माँ के साथ वे काफी देर तक बातचीत करते रहे। स्वामीजी की उम्र काफी है, स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है, फिर भी वे कल तीसरे पहर कान्तिभाई के घर होने वाले सत्संग में आये थे।

शाम के बाद श्री हरिबाबाजी का सत्संग यथाविधि सम्पन्न हुआ। माँ भी उपस्थित थीं। मौन के बाद श्री योगेश ब्रह्मचारी के अनुरोध करने पर माँ थोड़ी देर तक कीर्तन करती रहीं।

कल यहाँ से माँ चली जाने वाली हैं। आज बहुत से लोगों ने माँ से विदा ले ली। माँ आज जल्दी से सो गयीं।

१८ मई, १९५७

अहमदाबाद में उत्सव की परिसमाप्ति और श्री श्री माँ का अहमदाबाद त्याग

आज अहमदाबाद के उत्सव का आखिरी दिन है। कान्तिभाई के घर वाले सवेरे से ही बड़े दुःखित हैं, क्योंकि माँ आज चली जायंगी। इस उत्सव के प्रधान उद्योक्ता कान्तिभाई हैं, पर कार्योपलक्ष्य में वे अनुपस्थित हैं इन दिनों वे भारत से वाहर हैं। उनकी उपस्थिति पर्याप्त परिणाम में हमलोग सर्वदा अनुभव कर रहे हैं। उनके रिश्तेदार, मित्र. ठाकुर भाई, लड़की वीणा,

कान्तिभाई की स्त्री कुन्दन, लड़की उर्मिला, दामाद मधुकान्त आदि सभी लोग मिलकर सारा इन्तजाम करते रहे। इन लोगों के स्वागत सत्कार से समागत सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न रहे।

हरिबाबाजी आज रात को द्वारिका रवाना हो रहे हैं। इनके साथ केवल २-३ आदमी जा रहे हैं। मार्ग में व्यवस्था आदि करने के लिए माँ ने ब्रह्मचारी कान्तिभाई को साथ भेज दिया। वह राजकोट तक जाकर बाबाजी को गाड़ी पर चढ़ाने के बाद यहाँ वापस आ जायगा। उनकी पार्टी के अन्य लोग तथा रास लीला मण्डली वाले वृन्दावन वापस चले गये।

आश्रम के कुछ ब्रह्मचारियों को जैसे कुसुम, भारद्वाज, गौरांग, हरिप्रसाद और कान्तिभाई को माँ ने यह आदेश दिया कि स्थानीय उत्कण्ठेश्वर मन्दिर में जाकर कुछ दिनों तक साधन-भजन करो। उत्कण्ठेश्वर महादेवजी का मन्दिर यहाँ से ३० मील दूर है। कान्ति-भाई की सहायता से वहाँ एक आश्रम निर्मित हुआ है। कान्ति भाई की बहुत इच्छा थी कि माँ तथा अन्य लोगों को उत्सव के बाद एक बार वहाँ ले आकर कुछ दिनों के लिए रखेंगे। लेकिन यह अवसर इस बार नहीं मिला, क्योंकि वे भारत के बाहर हैं। अगर इसी बीच कान्ति भाई वापस लौटे तो शायद एक बार माँ वहाँ जा सकती हैं। बहरहाल इस समय माँ वहाँ नहीं जा सकीं, इसीलिए कुछ ब्रह्मचारियों को वहाँ रखने का निश्चय किया गया।

यहाँ का आनन्द मेला अब समाप्त हो गया। माँ रात को ९-४० बजे गुजरात मेल से बम्बई रवाना हो गयीं। कान्ति भाई के अधिकांश आत्मीय स्वजन मुकुन्द भाई, चिनू भाई, अजीत भाई आदि सैकड़ों स्त्री-पुरुष माँ को गाड़ी पर चढ़ाने के लिए स्टेशन पर

आये। गाड़ी के गार्ड ने सीटी बजायी, अश्रुपूरित नेत्रों से सम्पूर्ण स्टेशन माँ के कमरे की ओर अपलक दृष्टि से देखता रहा। रात के अंधेरे में गाड़ी अदृश्य हो गयी।

दीदी माँ, मैं, परमानन्द स्वामी, नारायण स्वामी, बुनी, उदास, बिमला, सती, बुबा, नीलिमा, मिस पाठक आदि हमलोग माँ के साथ चल रहे हैं। योगी भाई सोलन जा रहे हैं। वे बड़ौदा स्टेशन तक माँ को गाड़ी में आये और यहाँ उतर गये। पानु दिल्ली होते हुए कलकत्ता जा रहा है। वह भी बड़ौदा स्टेशन पर उतर गया।

१९ मई, १९५७

आज सवेरे हमलोग ८ बजे बम्बई पहुँचे। माँ के स्वागत के लिए बम्बई स्टेशन पर भइया सपरिवार, कानिया भाई, मूलजी, भाई, सुपारी साहब, सपत्नीक जितेन दत्त आदि बहुत से लोग मोटर लेकर आये थे। माँ को स्टेशन से सीधे भइया के घर ले आया गया। आश्रम के कुछ लोग भइया के घर ठहर गये। बाकी लोगों के लिए एक अलग मकान में इन्तजाम किया गया है।

बम्बई में माँ

पिछले फरवरी माह में माँ यहाँ आकर नये मन्दिर में ठहरी थीं। यहाँ आते ही माँ विश्राम करने चली गयीं।

तीसरे पहर ५॥ बजे के बाद माँ के घर के सामने कुछ देर तक रामचरित मानस और माँ के उपदेशों के संग्रह का पाठ किया गया। पाठ समाप्त होने के बाद माँ घूमने चली गयीं।

बहुत दिनों से यह चर्चा चल रही थी कि जन्मोत्सव के बाद

माँ को कुछ दिनों के लिए किसी एकान्त स्थान में रखा जायगा। भइया ने मुझे भी कई बार माँ को पूना ले जाने के लिए कहा है। भइया माँ के निकट यह प्रार्थना कर चुके हैं कि वे कुछ दिनों तक जाकर पूना में रहें। पूना में भइया के विशेष मित्र इंजीनियर श्री भूता साहब ने एक नया मकान बनवाया है। वहीं माँ को ठहराया जायगा। माँ के ठहरने के लिए किन-किन व्यवस्थाओं की आवश्यकता है यह देखने के लिए आज दोपहर को परमानन्द स्वामी तथा कानिया भाई को पूना भेजा गया। ये लोग कल वापस लौट आयेंगे।

२० मई, १९६७

माँ के घुटने के पीछे थोड़ा सा अंश फूल गया है जिसके कारण काफी दर्द है और चलने-फिरने में कठिनाई होती है। आज भइया की इच्छानुसार नानावती अस्पताल के सुपरिण्टेण्डेण्ट डा० सेठ को माँ का पैर दिखाया गया। जाँच करने के बाद उन्होंने कहा कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। कुछ दिनों के आराम करने के बाद वह स्वतः ठीक हो जायगा।

आज सवेरे माँ के घर के सामने समवेत रूप से गीता-चण्डी पाठ हो रहा था। ठीक इसी समय परमानन्द स्वामी वापस आये। उनकी जबानी पता चला कि श्री भूता साहब का मकान अत्यन्त सुन्दर है। स्थान भी एकान्त में है। पर उस मकान में भूता साहब कुछ दिनों तक रह चुके हैं, इसलिए मूल मकान में माँ को रखा नहीं जा सकता। सामने मोटरगैरेज में माँ के रहने के लिए इन्तजाम किया जा सकता है। माँ के लिए जो कुछ करना होगा। उन सब बातों का स्वामीजी निर्देश दे आये हैं। एक नया पैखाना,

बाथरूम और एक रसोईघर बनाना होगा। यह सब बनाने में ४-५ दिन लग जाँयगे। इसलिए माँ ४-५ दिन तक माँ यहीं विश्राम करेंगीं।

माँ आजकल यहाँ पर्याप्त विश्राम कर रही हैं। अपनी इच्छानुसार घूमती फिरती हैं। कोई निश्चित कार्य-क्रम भो नहीं है।

एक दिन सुभाषचन्द्र वोस का छोटा भाई सपत्नीक माँ का दर्शन करने आया। पहले ये अहमदाबाद के किसी मिल में काम करते थे। इन दिनों बम्बई में बिजली का तार बनाने का एक नया कारखाना आपने स्थापित किया है। एक दिन वे आकर माँ को अपना कारखाना देखाने के लिए ले गये। माँ के साथ हमलोग कई आदमी गये। वहाँ जाकर देखा कि बाहर से तार मंगाकर यहाँ उसपर रबर चढ़ाया जाता है। कारखाने में बैठाकर माँ की पूजा की गयी। कारखाने के व्यक्ति एक-एक करके माँ को प्रणाम करने लगे। माँ उन लोगों को फल आदि वितरण करने लगीं। घण्टा भर बाद हमलोग वापस चले आये।

नेताजी सुभाष चन्द्र के कनिष्ठ भ्राता तथा अन्य विभिन्न भक्तों का माँ के निकट आगमन

नित्य तीसरे पहर जितेन दत्त सपरिवार, सुपारी साहब सपत्नीक, धीरेन बाबू आदि माँ का दर्शन करने आते हैं। जितेन दत्त आजकल बम्बई में भारत सरकार के ट्राफिक कमीशन के सदस्य हैं। अभी वे बम्बई में ४-५ साल रहेंगे। सुपारी साहब भारत के सर्व प्रधान सीमेण्ट उद्योग असोशियेटेड सीमेण्ट कम्पनी के डिप्टी जनरल मैनेजर के रूप में कई साल से काम कर रहे हैं।

एक दिन जयपुर से एक काश्मीरी महिला आकर माँ को अपने

स्वप्न की कहानी सुनाने लगी। इन्होंने स्वप्न में देखा है कि माँ इनके पास आकर कह रही हैं—"तुम मुझे प्रणाम करो।" माँ के कथनानुसार जव उन्होंने माँ को प्रणाम किया तो माँ ने उनको एक मंत्र बताया। तव से अब तक यह भद्र महिला उक्त मंत्र का जाप करती आ रही हैं। हमलोग स्वप्न की इस घटना को सुनकर बड़े चकित रह गये। न जाने कितने अगणित व्यक्ति माँ के निकट दीक्षा ग्रहण करने के लिए प्रार्थना कर चुके हैं। किन्तु माँ ने कभी साधारण रूप से किसी को दीक्षा नहीं दी। फलस्वरूप कितने लोग निराश हो जाते हैं। इधर इस तरह अयाचित रूप में भाग्यवान स्त्री-पुरुष माँ की कृपा प्राप्त कर लेते हैं। इसका लेखा-जोखा कौन रखता है?

एक घटना

२४ मई, १९६७

आज तीसरे पहर ३ बजे हमलोग पूना की ओर रवाना हुए। हमलोग माँ को लेकर मोटर से चल पड़े और बाकी लोग ट्रेन से रवाना हुए। माँ के लिए पहले से ही एक एयर कन्डिशन मोटर ठीक करके रखा गया था। बम्बई से पूना मोटर मार्ग से १२० मील दूर है। रास्ते में ही पहाड़ी मार्ग भी है। जब हम पूना पहुँचे तब शाम के ६॥ बज चुके थे।

श्री भूता साहब का मकान पूना के प्रसिद्ध अंचल गणेश खिन्द-रोड पर है। पास ही ब्रिटिश युग के आई० सी० एस० अफसरों की कालोनी है। गवर्नर हाउस भी पास ही है। भूता साहब और कानिया भाई माँ के स्वागत के लिए खड़े थे। रेल से आने वाले लोग हमसे पहले ही पहुँच गये हैं।

एक बड़े बरगद के नीचे मोटर गैरेज में माँ के लिए ठहरने का इन्तजाम किया गया है। इस कमरे को रंग आदि के द्वारा इस तरह सजा दिया गया है कि उसे कोई गैरज नहीं कह सकता। कमरे के दोनों ओर खिड़कियों पर पर्दे लगाये गये हैं। पास ही माँ के लिए रसोई घर और बाथरूम है। थोड़ी दूर आगे अलग से बाथरूम और पैखाना भी है। हमलोगों ने निश्चय किया कि रसोई घर से सटे हुए बाथरूम को माँ के लिए भोग का कमरा बनायेंगे। श्री भूता साहब का मकान तस्वीर की तरह सजाया हुआ है। आधुनिक फैशन की सारी सामग्रियाँ रखी हैं। बाकी लोगों के लिए कुछ दूर पर रहने का इन्तजाम कर दिया गया है। वह मकान श्री शिवनाथ बनर्जी का है जो कि हिन्दुस्तान कन्सट्रक्शन कम्पनी के डायरेक्टर हैं।

२६ मई, १९५७

आज शाम के समय माँ सामने बगीचे में टहल रही थीं। ठीक इसी समय एक अपरिचित सज्जन ने आकर प्रणाम करते हुए कहा—"बिना पूछे भीतर आऊं या नहीं इसी ऊहापोह में काफी देर तक बाहर खड़ा रहा।"

माँ ने तुरन्त कहा—"इस शरीर के निकट आने के लिए किसी प्रकार की पूछताछ करने की जरूरत नहीं है बाबा। सभी लोग आ सकते हैं।"

उन्होंने कहा कि माँ के आने का समाचार पाकर मैं श्री दिलीप कुमार राय के निकट पूछने गया था। वे माँ कहाँ हैं जानते हैं न।

उनकी जबानी पता चला कि हमलोगों के निवास स्थान के पास ही दिलीप राय रहते हैं। कानिया भाई के श्वसुर सर चुन्नी-

लाल मेहता के घर वे आजकल ठहरे हुए हैं। मैंने सोचा था कि कानिया भाई से उन्हें अवश्य समाचार मिला होगा, किन्तु अब पता चला कि उन्हें माँ का समाचार नहीं मिला है। मैंने तुरन्त धीरेन बाबू और तपन इन दोनों को दिलीप राय के पास भेजा।

सुना कि वे नित्य शाम को १ घण्टा भजन करते हैं। उस समय यहाँ के बहुत से लोग वहाँ जाते हैं। धीरेन दादा और तपन के वापस लौटने पर सुना कि वे जब भजन पर बैठने जा रहे थे, ठीक इसी समय इन लोगों ने जाकर इनसे माँ के आगमन का समाचार दिया। भूता साहब भी उनके परिचितों में हैं। अगर उन्हें मौका मिला तो आज रात को माँ से मिलने जरूर आयँगे। ऐसा उन्होंने कहा है।

रात को हमलोग कुछ देर तक इन्तजार करते रहे, किन्तु वे नहीं आये। भारत में शायद ही ऐसा कोई शिक्षित व्यक्ति होगा जो दिलीप राय के नाम से परिचित न होगा। विदेशों में भी वे बहुतों से परिचित हैं। आप पाण्डेचेरी स्थित श्री अरविन्द आश्रम में बहुत दिन तक रहे। आजकल कुछ दिनों से पूना में रहते हैं। इसके पहले भी आकर माँ को भजन सुना गये हैं। आपके भजन और संगीत अत्यन्त आकर्षक, सुन्दर और भावमय होते हैं।

२७ मई, १९५७

आज सवेरे ११ बजे के बाद हमलोग माँ के कमरे में बैठे हुए थे। ठीक इसी समय श्री दिलीप कुमार अपने कई भक्त शिष्यों को लेकर माँ का दर्शन करने आये। गैरिक वस्त्र पहने हुए, मस्तक पर पीत रंग की टोपी, सिल्क की एक नामावली चद्दर ओढ़े हुए, सिर पर नये ढंग के तिलक लगाये, सौम्य प्रसन्न मूर्ति दिलीप कुमार राय से बहुत

श्री श्री माँ के निकट दिलीप कुमार राय तथा इन्दिरा देवी

दिनों के बाद मुलाकात हुई। उनके चेहरे पर कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ है।

उनके साथ श्रीमती इन्दिरा भी आयी हैं। दिलीप कुमार ने इनका परिचय यों दिया—"माँ, आप देहरादून के भक्त कृपाराम जी की लड़की हैं। यह हमारे यहाँ रहती हैं। इनका वास्तविक नाम जनक कुमारी है। मैंने इनका नाम इन्दिरा रखा है। इन्हें दो बच्चे हैं। बड़ा बम्बई में इंजीनियरिंग पढ़ता है और छोटा माँ के निकट रहते हुए पढ़ता-लिखता है। इनके पति भी इंजीनियर हैं। वे अक्सर आश्रम में आते हैं।

श्रीमती इन्दिरा का नाम हम सब इसके पहले सुन चुके हैं। आप पीत रंग की साड़ी पहने थीं। बड़ी हँसमुख हैं। माँ के निकट सिर झुका कर प्रणाम करती हुई माँ के निकट बैठ गयीं।

दिलीप कुमार ने माँ से कहा—"माँ, हमारे यहाँ आपको एक दिन चलना होगा।"

माँ—"बाबा, तुम तो जानते हो कि बहुत दिनों से यह शरीर किसी गृहस्थ के मकान में नहीं जाता।"

दिलीप कुमार—"माँ, वहाँ विग्रह है। वहाँ जाने में दोष क्या है?"

माँ—"बाबा, दोष तो कुछ नहीं है, किन्तु बहुत दिनों से इस शरीर का ऐसा ही चला आ रहा है। सभी जानते हैं।"

गृहस्थ का मकान सुनकर शायद इन्दिरा को चोट पहुँची। उन्होंने दिलीप कुमार से अंग्रेजी में कहा—"दादा, वह तो गृहस्थ का मकान नहीं है, आप भी तो वहाँ रहते हैं।"

बातचीत के मर्म को समझते हुए माँ ने दिलीप कुमार से कहा—"बाबा, आजकल वहाँ शायद कोई गृहस्थ नहीं रहता, किन्तु इसके पहले तो रहते थे न ? जब तुम वहाँ से चले जाओगे तो फिर कोई आकर रहेगा।" थोड़ी देर ठहर कर पुनः कहने लगीं—"पर आजकल बीच-बीच में ऐसा होता है कि आगे शायद कोई गृहस्थ का मकान था किन्तु बाद में वहाँ कोई मन्दिर या आश्रम की स्थापना हुई और वहाँ कोई गृहस्थ भविष्य में निवास न करे तो इस शरीर को अक्सर लोग ऐसे स्थान पर ले जाते हैं।"

दिलीप बाबू ने आपत्ति के स्वर में कहा—"किन्तु मुझे ऐसा लग रहा है कि आपको कलकत्ता स्थित गृहस्थों के मकान में जाते देखा है।"

माँ ने जरा सा हँसकर कहा—"नहीं बाबा, कलकत्ते में ऐसे मकान हैं जहाँ उन लोगों ने आदर से इस शरीर के लिए अलग से कमरा बनवा रखा है। ऐसे मकानों में गृहस्थ के रूप में कोई नहीं रहता और ऐसे मकान्नों में जाने पर घर के भीतर से नहीं जाना पड़ता। इस तरह के किसी मकान में तुमने मुझे जाते देखा है बाबा ?"

इस तरह की दो-चार बातें होने पर यह प्रसंग दब गया। माँ ने उनसे कहा—"बाबा, तुम्हारा इतना सुन्दर गला है। हमलोगों को कोई गीत नहीं सुनाओगे ?"

दिलीप कुमार जरा सा ऊहापोह करते हुए बोले कि आजकल वे विग्रह के सामने के अलावा अन्यत्र कहीं गाते नहीं। चूँकि मां ने गाने के लिए कहा है, इसलिए श्रीमती इन्दिरा के साथ बातचीत करने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि अपना दैनिक भजन आज शाम के समय माँ के सामने गायेंगे।

शाम होने के थोड़ी देर पहले दिलीप कुमार के निवास स्थान पर गाड़ी भेज दी गयी। वे आये और ठीक ७। बजे भजन शुरू

किया। पहले गुरु प्रणाम करने के बाद निर्वाणाष्टक स्तोत्र और भवान्यष्टक स्तव अति सुललित कण्ठ से गाकर सुनाया। इसके बाद उन्होंने स्वरचित अति सुन्दर कृष्ण-लीला संगीत गाया। मौन के थोड़ी देर पहले भजन समाप्त कर वे माँ के पैरों के समीप आकर बैठे। फिर वाल सुलभ भाव से बोले—"थोड़ी देर माँ के चरणों के पास बैठूँ।"

मौन के बाद उन्होंने इन्दिरा देवी के साथ आयी महिलाओं की ओर इशारा करते हुए कहा—"यह सब इन्दिरा की शिष्याएँ हैं। इन्दिरा के साथ यह सब भजन करती हैं।"

उन लोगों को मोटर से भेज दिया गया। दिलीप कुमार के व्यवहार से सभी लोग मुग्ध हो गये।

३१ मई, १९५७

आज तीसरे पहर माँ बगीचे में टहल रही थीं। सांगली के राजा साहब सपत्नीक आये और माँ को प्रणाम किया। इसके पहले भी वे माँ का दर्शन कर चुके हैं।

शाम के बाद माँ के कमरे में बातचीत चल रही थी। योगी भाई नर्मदा से कई शिव-लिंग ले आये थे। उनमें से एक की स्थापना हरिद्वार के शिव मन्दिर में हो गयी है, बाकी तीनों की स्थापन्ना पिछले वर्ष वृन्दावन में हुई है। इस प्रसंग पर एक सूक्ष्म देहधारी महात्मा की चर्चा चल पड़ी। माँ जिन दिनों दक्षिण भारत में थीं उन दिनों वे रामेश्वर में आकर माँ से मुलाकात कर गये थे। बाद में द्वारका में उनका महामिलन हो गया।

यही सब बातें हो रही थीं कि इस समय इस आशय का तार आया कि योगी भाई की विमाता माँ का निधन सोलन में हो गया। यह सुनकर माँ बोलीं—"देखो दीदी, वह जो सूक्ष्म शरीरधारी महात्मा दक्षिण यात्रा के समय मिला था। वह था चिदाम्बरम के पुजारी का लड़का। योगी भाई का ७५-७६ वाँ किसी पूर्व पुरुष ने उक्त पुजारी के वंश में जन्म ग्रहण किया था।"

एक सूक्ष्म देहधारी महात्मा की बात

इतना कहकर माँ चुप हो गयीं। मुझे ऐसा लगा जैसे उक्त सूक्ष्म शरीर वाले महात्मा के साथ योगी भाई का कोई सम्बन्ध था या नहीं कौन जाने? माँ भी हर समय सब बातें स्पष्ट करके नहीं कहतीं।

इसी बीच एक दिन माँ लेटी हुई थीं। मैं उनके निकट बैठकर हवा कर रही थी। माँ किंचित् आँखें खोल कर कहने लगीं—"देखो दीदी, एक बड़ी जगह दिखाई दे रही है। वहाँ बहुत से घर हैं। इन घरों में बीमार व्यक्ति रहते हैं। बीच में एक बड़ा हाल बनाया जायगा, इसीलिए परमानन्द को बुलाया गया। परमानन्द हाथ में एक रजिस्टर लेकर आ गया।" इतना कहकर माँ चुप रह गयीं। मैं इस बात का कोई मतलब नहीं समझ सकी, सब कुछ रहस्य रह गया।

और एक दिन माँ चुपचाप बिछौने पर बैठी थीं। कमरे में बहुत से लोग थे। कानिया भाई ने माँ से प्रश्न किया—"माँ, गृहस्थाश्रम में कैसे गृहस्थ जीवन पालन करना चाहिए?"

माँ धीरे-धीरे कहने लगीं—"एक ब्रह्मचर्य आश्रम में अभाव

के कारण ही अन्य सभी आश्रमों के नियमों का ठीक-ठीक ढंग से पालन नहीं होता। बुनियाद पक्की न होने पर जैसे मकान नहीं बनाया जा सकता, उसी प्रकार आश्रम माने जहाँ श्रम नहीं। फिर भगवान् को अलग कर देनेपर सभी श्रम हैं तब विश्राम कहाँ? गृहस्थाश्रम में रहते हुए तत्त्वज्ञान में सेवा की जाय तो ठीक-ठीक आश्रमवास होता है।

गृहस्थाश्रम में कैसे गृहस्थ, धर्म पालन करना चाहिए

पति को परमपति जानते हुए सेवा, पुत्र को बालगोपाल के रूप में सेवा, स्त्री को महामाया के रूप में सेवा। तुम्हीं लोग तो कहते हो—'यत्र जीव, तत्र शिव'। 'यत्र नारी तत्र गौरी।' आवश्यकता है इस संसार का मालिक न बनकर, माली बनकर रहो। मालिक बनने पर गण्डगोल होता है। माली होनेपर कोई झगड़ा नहीं होता। बस उसी प्रकार यह संसार भी भगवान् का है। मैं सेवक मात्र हूँ। उनके निर्देशानुसार मैं सिर्फ सेवा करता रहूँगा। यह भाव मनमें रखते हुए यदि गृहस्थाश्रम में रहा जाय तो अन्य कोई नवीन बन्धन की सृष्टि नहीं होती। केवल प्रारब्ध भोग होता है। इन बातों को हर वक्त मनमें रखते हुए यदि गृहस्थी की जाय तो डर किस बात की? वे सब ठीक कर लेंगे।"

२ जून, १९५७

आज सवेरे पाठ समाप्त होने पर तपन ने माँ से पूछा—"माँ, हमलोगों का कल्याण कैसे होगा? इस विषय पर कुछ कहिए।"

माँ ने कहा—"अपने को जानने का प्रयत्न करना ही मनुष्य का एक मात्र कर्त्तव्य है। अपने को जानना, भगवान् को जानना। और भगवान् को जानने का मतलब अपने को जानना। जब तक भगवान् नहीं मिलते तब तक दुःख दूर नहीं होता।

भगवान् को पाने के लिए केवल उनका जय, उनका ध्यान, उनकी पूजा, उनके नाम का कीर्त्तन, इसके अलावा कल्याण का और कोई मार्ग नहीं है। सत्संग, सद्ग्रन्थ का पाठ करना इस मार्ग के लिए अनुकूल है। और यह शरीर तो प्रायः एक ही बात कहता है, विषय माने विष होता है। विषय-भोग में धीरे-धीरे मृत्यु, जिसे स्लो प्वाइजन कहते हो। और यह रिटर्न टिकट खरीद कर लौट आने का इन्तजाम करने के बरावर है, इसलिए यह शरीर हर वक्त कहता है कि उन्हें लेकर जितने देर तक रह सको, प्रयत्न करो। समय गुजरता चला जा रहा है।"

कल्याण का मार्ग

इस तरह की बातें हो रही थीं कि ठीक इसी समय श्री दिलीप कुमार, इन्दिरा देवी और एक मिलेटरी अफसर सपत्नीक माँ के निकट आकर बैठे। आज दिलीप कुमार और उनके साथियों को यहाँ प्रसाद पाने को कहा गया है।

जब लोग भोजन करने बैठे तब बहुत दिनों के बाद नाना प्रकार के बंगाली व्यंजन खाते हुए दिलीप कुमार आनन्द प्रकट करने लगे। भोजनादि समाप्त करने के बाद सभी लोग माँ को प्रणाम कर चले गये।

माँ के आगमन का समाचार इधर कई दिनों में यहाँ फैल गया है। सिन्धी, पंजाबी, महाराष्ट्री, गुजराती आदि लोग दल के दल माँ का दर्शन करने आ रहे हैं। बंगालियों में अनेक पूर्व परिचित मिल रहे हैं। कलकत्ता के हेरम्ब भट्टाचार्य जी की कन्या गीता अपने पति को साथ लेकर आयी है। कलकत्ता के सुधीन मजुमदार की बहन कल्याणी भी सपरिवार माँ का दर्शन करने आयी है।

३ जून, १९६७

आजकल एक बात प्रायः माँ के मुख से सुनने में आ रही है। आज भी न जाने किस प्रसंग में कह रही थीं—"दुर्लभ मनुष्य जन्म पाये हो, एक मुहूर्त भी बेकार जाने मत दो। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी कुछ दिनों तक जीवित रहने के बाद पुनः नये पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सृष्टि कर जगत् से विदा लेते हैं। अगर तुम लोग भी सिर्फ यही करोगे तो प्रभेद क्या रह जायगा ? रिटर्न टिकट न कटवाना पड़े, इसके लिए प्रयत्न करो। कुछ की चाह रखने पर सुख, उसका अभाव होने पर दुःख जगत् में सब कुछ क्षणभंगुर है। यह जो सुख है, वह अभी है, अभी नहीं। नित्य सुख, अनन्त सुख पाने के लिए नित्य वस्तु को प्राप्त करना होगा।"

दुर्लभ मनुष्य जन्म

आजकल माँ अधिकतर लोगों को संयम पालन करने को कहती हैं। माँ कहती हैं कि सप्ताह में एक दिन या दो दिन, अगर यह न हो सके तो कम-से-कम महीने में एक दिन संयम भाव में जीवन यापन करने का प्रयत्न करना चाहिए। आश्रम में भी ब्रह्मचारी और संन्यासियों में कुछ लोग महीने में एक-एक सप्ताह मौन रहकर संयम नियम का पालन कर रहे हैं। कोई-कोई एक महीने तक संयम पालन करता है। परमानन्द स्वामी पिछले जन्मोत्सव के समय से ही संयम के आहार का नियम पालन कर रहे हैं। दिन में एक बार बिना नमक का उबला भात और रात में जरा सा दूध लेते हैं, फिर दिन भर कुछ नहीं खाते। स्वामीजी इस तरह वृद्धावस्था में भी संयम-पालन करते हुए कम उम्र के ब्रह्मचारी और संन्यासियों को आदर्श की शिक्षा दे रहे हैं।

इसके अलावा माँ जहाँ-जहाँ जाती हैं, वहाँ आजकल प्रायः

ही अखण्ड रूप से १२ या २४ घण्टा जप का आयोजन होता है। माँ हमेशा कहती हैं—"उन्हें लेकर रहने का प्रयत्न करो, समय बेकार न चला जाय।"

८ जून, १९५७

माँ के निर्देशानुसार आजकल नारायण स्वामी जी यहाँ तुलसीदास कृत रामायण का पाठ कर रहे हैं। २–३ दिन से श्रीरामचन्द्र की जन्म लीला का पाठ हो रहा है।

माँ शायद उसी बात को ख्याल करते हुए कह रही हैं—"रामचन्द्र का जन्म हुआ। चाहो तो तुम लोग अखण्ड रामायण पाठ शुरू कर सकते हो।"

देहरादून के लक्ष्मीजी हमारे साथ हैं। यह सब बातें सुनकर वे अत्यन्त उत्साहित हुए। माँ से उन्होंने पूछा—"माँ कब से शुरू होगा?"

माँ साथ ही साथ बोल उठीं—"जो काल करो सो आज करो, और जो आज करोगे सो अभी करो।" थोड़ी देर बाद पुनः कहने लगीं—"अगर सम्भव हो तो अभी १२ बजे से आरम्भ कर दो तो।"

इस समय ११॥ बज रहे हैं। जब यह सवाल उठा कि आरम्भ कौन करेगा तब नारायण स्वामी ने कहा कि अभी तक वे कुछ खाये नहीं हैं, इसलिए माँ अनुमति दें तो वे आरम्भ कर सकते हैं।

माँ ने कहा—"ठीक है नारायण आरम्भ कर दे। इसके बाद तुम लोग मिलजुल कर अच्छी तरह पाठ करो।"

माँ का काम प्रायः इसी तरह हो जाता है। ५ मिनट के भीतर सारा प्रबन्ध ठीक-ठाक हो गया। पाठ का स्थान ठीक हो गया, कौन-कौन पाठ करेगा उसकी सूची तैयार हो गयी, ठीक १२ बजे नारायण स्वामी ने विधिवत् भोग आरती करने के बाद पाठ आरम्भ किया।

६ जून, १९५७

आज तीसरे पहर श्री दिलीप कुमार और इन्दिरा देवी दोनों टहलते हुए आये। हँसते हुए उन्होंने मुझसे कहा—"दीदी, अब तो मेरे लिए जप की माला बन गयी। आज दोपहर के भोजन के लिए न जाने कितनी चीजें भिजवायीं यह सब सहज में भुलाने योग्य नहीं है।" आज दोपहर को मालपुआ, खीर आदि तथा कई प्रकार की मिठाइयाँ बनवाकर भिजवायी थीं इसी प्रसंग में इन्होंने यह सब कहा। आज शाम के समय माँ को लेकर हमलोग उनके यहाँ जाने वाले हैं। इस बात का स्मरण उन्होंने दिलाया।

शाम को ठीक ७॥ बजे हमलोग माँ को लेकर वहाँ गये। देखा—घर के बाहर सीढ़ी के ऊपर माँ के लिए स्वतन्त्र रूप से आसन बिछाया गया है। यहाँ के बहुत से विशिष्ट लोगों को माँ का दर्शन करने के लिए आमंत्रित किया गया है। प्रसिद्ध साधु टी० एल० भास्वानी आने वाले थे। पर अस्वस्थ हो जाने के कारण अन्त में नहीं आ सके। साधु भास्वानी इसके पहले माँ को काशी में देख चुके हैं। इस अंचल में तथा भारत के अन्यत्र भी वे अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

भास्वानीजी के आने के इन्तजार में प्रोग्राम आरम्भ करने में थोड़ी देर हो गयी। बाद में जब इन्दिरा देवी आयीं तो दिलीप कुमार ने भजन आरम्भ किया! गुरु प्रणाम करने के पश्चात् पहले कृष्ण का एक संगीत फिर शिव का एवं पुनः एक कृष्ण संगीत गाने के बाद इन्दिरा देवी लिखित एक हिन्दी भजन गाकर उन्होंने सुनाया। बाद में दिलीप कुमार ने उसका बंगला अनुवाद गाकर सुनाया। जैसी भाषा और भाव, ठीक उसी प्रकार सुर और ताल, इसकी तुलना नहीं की जा सकती। बाद में ५ मिनट नाम कीर्त्तन करने के बाद ठाकुरजी की आरती हुई।

इसके बाद दिलीप कुमार ने माँ के बारे में लोगों के सामने एक भाषण दिया। उनका भाषण अंग्रेजी में था। उन्होंने कहा—

श्री श्री माँ के सम्बन्ध में दिलीप कुमार का भाषण

माँ आज भारत और भारत के बाहर अनेक स्थानों में परिचिता हैं। आपके चरणों में आश्रय लेकर अनेक नर-नारी शान्ति का मार्ग प्राप्त कर रहे हैं। सन् १९२४ के दिनों जब मैं अपने गुरुदेव श्री अरविन्द के पास गया तब उनकी जबानी सुना था कि साधन-भजन के जरिये उच्च स्तर प्राप्त कर बहुत से लोग व्यक्तिगत रूप से आनन्द प्राप्त करते हैं। किन्तु वह आनन्द दूसरों को नहीं दे पाते। वह शान्ति दूसरों को दान नहीं कर पाते। जो लोग ऐसा कर सकते हैं, वैसे लोग इस जगत् में दुर्लभ हैं। इस प्रकार के अति मानवों (सुपर मैन) में माँ अन्यतमा हैं।

इसी प्रकार वे अपनी सुललित भाषा में १५ मिनट तक माँ के सम्बन्ध में भाषण देते रहे। इसके बाद मौन समाप्त होने पर इन्दिरा देवी ने माँ की आरती की। माँ ने दिलीप कुमार की ओर इशारा

करते हुए कहा—"गुरु की करो।" किन्तु वे इस बात को ओर ध्यान न देकर अत्यन्त भक्ति के साथ माँ की आरती करती रहीं।

आते समय मैंने इन्दिरा देवी से कहा—"तुम्हारा गीत मैं नहीं सुन सकी।" इस बात के उत्तर में दिलीप कुमार ने उनसे कहा—"जरूर गीत सुना देना, दीदी संदेश खिलायेंगी।" इतना कह कर वे हँसते हुए माँ को मोटर तक चढ़ाने आये।

७ जून, १९५७

आज सवेरे पाठ समाप्त हो जाने के बाद माँ के पास बहुत से लोग आकर बैठे। कुछ दूर पर स्वर्गीय मनोज बाबू का पुत्र गोपालू (बूबा का भाई) खड़ा है। गोपालू बम्बई से आया है। यहाँ आते ही उसे बुखार आ गया था। बुखार के दौरान वह विकार-रोगी की तरह बक-झक करता रहा। यह माँ भी सुन चुकी हैं। आज उसे देखते हो माँ ने उससे पूछा—"क्यों रे, कैसा है?"

गोपालू ने जवाब दिया—"अभी कमजोरी बहुत है।"

प्रत्युत्तर में माँ कहने लगीं—"देखा गया है कि कोई-कोई चाय-सिगरेट पीते हुए नशे में अपना काम-काज करता है। किन्तु वे जब बीमार पड़ते हैं तब यह सब पीने के कारण उनके शरीर और मन में कमजोरी आ जाती है।" पुनः आगे कहने लगीं—"जो लोग चाय-सिगरेट पीते हैं अगर वे लोग चाहें तो यह सब छोड़ सकते हैं, किन्तु जिन लोगों से लेकर पीते हैं, वे सहज ही नहीं छोड़ते।"

माँ की बातें सुनकर सभी लोग हँसने लगे। माँ ने गोपालू से पूछा—"क्या तुम यह सब पीते हो?"

गोपालू ने माँ के निकट इस बात को स्वीकार किया। इसके साथ ही उसने यह भी कहा कि अब भविष्य में नहीं पियेगा।

नारायण स्वामी ने इस बारे में कहा—

माँ की बात पर साधारण इच्छा शक्ति जागरण का उदाहरण

"काशी के डा० गोपाल दास गुप्त बहुत सिगरेट पीते थे। उनके मुँह का सिगरेट कभी बुझता नहीं था। किन्तु एक दिन माँ की बात पर अपने इस कड़े नशे को क्षण भर में उन्होंने त्याग दिया।

माँ ने भी कहा—"हाँ, यह शरीर उन दिनों काशी के उस पार नाव पर था। शरीर स्वस्थ नहीं था। इसलिए नारायण जाकर गोपाल को ले आया था। बाबा के मुँह से सिगरेट की तीव्र महक आ रही थी। शरीर को देखकर जब बाबा वापस जा रहे थे तब मैंने कहा—'बाबा, सिगरेट ने तुम्हें पिया है या तुमने सिगरेट को पिया है?' बाबा बुद्धिमान थे। गम्भीर भाव से चिन्तन करते हुए चले गये। जाते समय गंगा में सिगरेट बाक्स फेंकते हुए घर गये। इसके बाद से उन्होंने कभी सिगरेट नहीं पी।"

माँ के इस तरह की बात पर चाय या सिगरेट छोड़ देने के अनेक उदाहरण हैं। जीवन भर का अभ्यास क्षणभर में छोड़ देना यह कम त्याग की बात नहीं है।

माँ मुझसे कह रही हैं—"देखो दीदी, कल रात को सोयी हुई थी और देख रही थी—समुद्र में एक लंच बड़े जोर से चक्कर खा रहा है, एक बड़ा जहाज धीरे-धीरे डूबता जा रहा है। बचने का एक रास्ता है। उस जहाज पर देखा गया कि अनेक परिचित लोग हैं।" इतना कह कर परमानन्द स्वामी से बोलीं—"देखो तो

परमानन्द, तुम्हारे अखबार में किसी जहाज के डूबने की चर्चा है या नहीं।"

८ जून, १९५७

अखण्ड रामायण जिस दिन शुरू हुआ था, उसके दूसरे दिन वह समाप्त हो गया। आज दोपहर से पुनः रामायण के सुन्दर काण्ड को सम्पुटित करते हुए पाठ आरम्भ किया गया है। शाम तक समाप्त हो जाने के बाद आरती हुई।

आज रात से कल सवेरे ८ बजे तक यहाँ का बंगाली समुदाय अखण्ड कीर्त्तन करने वाला है। दिलीप कुमार एवं इन्दिरा देवी भी कई लोगों के साथ आकर कीर्त्तन में कुछ देर तक भाग लेते रहे। बीच-बीच में माँ भी जाकर उनके उत्साह में योगदान देती रहीं।

माँ आज पुनः कहने लगीं—"देख रही हूँ कि शरीर कहीं गया है। एक व्यक्ति अस्वस्थ है। मैंने कहा कि मेरे कमरे के ऊपर वाले कमरे में इसे रख सकते हो किन्तु परमानन्द ने आकर कहा, जरूरत नहीं है। जो होना है उसकी कोई व्यवस्था हो जायगी। कुछ देर बाद परमानन्द ने जैसे मैं बैठी थी, उसी हालत में पीछे से आकर उठा लिया और अस्वस्थ व्यक्ति के पास रख दिया। यह देखकर वह व्यक्ति क्षमा माँगने लगा। यह शरीर जैसा कहता रहता है—'ना, ना, इस शरीर के निकट अन्याय क्या है।' इस तरह कहने लगा।" इतना कहकर माँ चुप हो गयीं। आगे कुछ नहीं जाना जा सका।

९ जून, १९५७

आज सवेरे ८ बजे तक अखण्ड कीर्त्तन होता रहा। अन्त होने के कुछ पहले माँ वहाँ जाकर योगदान देती रहीं। बड़े आनन्द के साथ नाम समाप्त हुआ।

जिन लोगों ने कीर्त्तन किया उन लोगों से यहाँ प्रसाद पाने को कहा गया। दिलीप और इन्दिरा देवी भी आये। माँ के कमरे के पास वरगद के पेड़ के नीचे भोजन बनाया गया। लोग बड़ी तृप्ति के साथ दस पद का प्रसाद पाते रहे। इसके बाद माँ के पास कुछ देर बैठे रहने के पश्चात् २ बजे के लगभग लोगों ने विदा ले ली।

१० जून, १९५७

आज तीसरे पहर माँ ने मुझे लड़कियों को लेकर दिलीप कुमार के श्री कृष्ण विग्रह का दर्शन करने के लिए भेजा। हम लोग दर्शन कर वापस आ गये।

शाम के बाद दिलीप कुमार, इन्दिरा देवी और उनके शिष्य भक्तगण माँ के निकट आकर भजन गाते रहे। "तुमी ना जानाले परे, के तोमारे जानते पारे"—यह गीत दिलीप कुमार लगभग १ घण्टे तक विभिन्न भाव में गाते रहे। बाद में सभी लोग मौन में भाग लेकर विदा हुए। मौन के बाद कान्तिया भाई की पत्नी जया बेन ने माँ को दो भजन सुनाये। इनका गला बहुत ही मीठा है।

११ जून, १९५७

आज सवेरे माँ के निर्देशानुसार दीदी माँ, नारायण स्वामी, विमला, सती और तारा को बम्बई से देहरादून भेज दिया गया। मिस पाठक, नोलिमा तथा बूबा भी रवाना हो गयीं। ये लोग इलाहाबाद जायेंगी। माँ भोर के समय लान में टहल रही थीं, इसी समय सभी लोग आये और माँ को प्रणाम कर रवाना हो गये। माँ के गले में न जाने किसने बेला की एक माला पहनायी थी। उस माला को माँ ने दीदी माँ को पहनाते हुए जमीन की ओर झुकती हुई प्रणाम किया। हमारे अधिकांश साथी चले गये हैं। समझते देर नहीं लगी कि यहाँ से डेरा कूच करने का समय हो गया है।

दिलीप कुमार प्रातः भ्रमण करने के बाद वापस लौट रहे थे। माँ को देखते ही पास आकर उन्होंने माँ को प्रणाम किया। थोड़ी बातचीत करने के बाद वे चले गये।

१३ जून, १९५७

माँ तथा पाण्डेचेरी की मदर के साक्षात्कार सम्बन्धी बातें

आज सवेरे माँ के कमरे में हमलोग बैठे हुए थे। पाण्डेचेरी आश्रम में माँ और मदर के साक्षात्कार के सम्बन्ध में चर्चा चली। ब्रह्मचारी भारद्वाज कुछ दिन पहले पाण्डेचेरी आश्रम में जाकर वहाँ कुछ दिनों तक ठहरा था। इस समय वह भी यहाँ मौजूद है। उसकी जबानी पता चला कि वहाँ जाकर इसने छतू भाई से पूछा था कि माँ के साथ मदर की जब मुलाकात हुई थी तब मदर को कुछ अनुभूति हुई थी या नहीं। छतू भाई ने कहा था कि मदर ने जब माँ को

पहले पहल देखा तब उन्हें एक प्रकाण्ड विद्युत ज्योति की तरह देखा था। उनके दोनों ओर काले-काले कुछ बादल थे। यह काले बादल क्या हैं, इस बारे में प्रश्न करने पर उन्होंने कहा था कि वह बाधा के रूप में हो सकता है।

पाण्डेचेरी आश्रम के नलिनी सेन जी के बहनोई अध्यापक श्री ज्योतिषचन्द्र दास भी इस समय माँ के निकट बैठे हुए हैं। वे कह उठे—"माँ मैं भी पाण्डेचेरी गया था। बेंगल दादा ने कहा था 'मदर निर्निमेष दृष्टि से तुम्हारी ओर देखती हो रहीं और तुम उस दृष्टि को सह्य नहीं कर सकी, आँखे झुका ली।' इस तरह की और भी कई बातें उन्होंने माँ से कहीं।

माँ यह सब बाते सुनने के बाद जरा हँसती हुई बोलीं—"माँ और लड़की में। इसके भीतर फिर कोन सी बाती"

तब मैंने, तपन तथा उपस्थित कई लोगों ने माँ से कहा—"सत्य घटना का प्रकट होना क्या उचित नहीं है। खासकर साधु-महात्माओं से सम्बन्धित बातें।" इतना कहकर हम सब बड़े आग्रह के साथ वास्तविक कहानी को सुनने के लिए आग्रह प्रकट करने लगे।

माँ हँसती हुई बोलीं—"हरि बाबा इस छोटी लड़की को लेकर यात्रा पर गये थे। उसी तरह ठीक माँ के पास। लेकिन लेन-देन की दृष्टि से माँ के निकट जाना नहीं हुआ था। माँ के निकट लड़की सहज-सरल रूप में ही तो। जानते ही हो इस शरीर का अलगर्जी भाव रहता है यहाँ तो शक्ति के आदान-प्रदान का प्रश्न ही नहीं है। जो हो जाय। तुम लोगों के निकट यह शरीर जिस भाव में है, वहाँ जाना भी उसी तरह का था। यह शरीर, माँ और तुम लोग क्या भिन्न हो ? ठीक है, तुमलोग सुनना चाहते हो तो सुनो।

माँ जब इस शरीर के निकट आकर नहीं खड़ी हुई, यह शरीर तो अपने ख्याल में जैसे तुम सबको देखता है, तब माँ की दृष्टि से दृष्टि मिलायी, साथ में साधु लोग खड़े तो थे। ये कब तक खड़े रहेंगे, यह ख्याल आते ही क्षण भर के लिए उन लोगों की ओर देखते हुए, इसके बाद इस शरीर की ओर माँ की अपलक दृष्टि जमी रहने के कारण माँ की दृष्टि के साथ दृष्टि मिलाने वाले भाग का पूरण करने के लिए इस शरीर को ख्याल हुआ। इसीलिए यह शरीर अपने भाव में ही दीर्घ समय तक दृष्टि मिलाये रहा, बाद में माँ ने स्वयं हो दृष्टि घुमाकर इस शरीर के हाथ में फूल रख दिये। फूलों का आदान-प्रदान हुआ।"

पुनः मेरी ओर देखती हुई बोलीं—"तुम, परमानन्द और यहाँ के बहुत से लोग तो वहाँ थे। माँ की दृष्टि में तीव्र ज्योति तो नहीं थी अथवा दृष्टि आकर्षण करते हुए दृष्टि रखना यह भी नहीं था, यही है वास्तविक सच बात। बंगल बाबा कुछ समझ नहीं पाये थे, इसलिए यह सब वृथा कथा है।"

कुछ देर बाद पुनः कहने लगीं—"कई साल पहले छतू भाई के साथ जब इस शरीर की मुलाकात हुई तब मदर के सम्बन्ध में चर्चा चलने पर छतू भाई ने कहा था कि मदर का दर्शन करने जाने पर वे सभी की ओर स्थिर दृष्टि से देखती रहती हैं। तभी इस शरीर को ख्याल हुआ था कि ठीक है, इस शरीर के साथ अगर माँ के साथ मुलाकात का योगायोग हुआ तो इस शरीर को सहज-सरल जैसा ख्याल होगा, ठीक उसी प्रकार रहेगा। जो हो जाय।"

आगे पुनः हँसती हुई कहने लगीं—"पहले से ही माँ की दृष्टि के साथ दृष्टि मिलाकर रखना होगा, यही वहाँ का नियम है—अगर यह बात कोई कहता तो यह शरीर वही ख्याल करता स्थान-अस्थान जहाँ जैसा रूप वही तो। वहाँ ख्याल आने पर

स्थानोपयोगी जितना हो जाय इस शरीर का क्रिया हो जाती। जैसे जहाँ रहने देने पर रहना, जैसे जहाँ मुलाकात के लिए ले जाने पर उसी समय जाना। फिर जहाँ जब तक नियम है बैठे खड़े रहने का, यह सब तो किया गया है, जो-जो वहाँ का नियम है। अरे, तुम लोगों की जगत् दृष्टि में तरह-तरह की बातें करने का क्षेत्र है। जिस प्रकार बेंगल बाबा ने एक भाव की बातें कहीं। दूसरी ओर अगर पहले से ही इस शरीर की दृष्टि ठीक रहती तब तुम लोगों के लिए कुछ कहने की बात थी—मदर ने माँ की दृष्टि को इस तरह आकर्षित कर रखा कि माँ अपनी दृष्टि हटा नहीं सकी।" इतना कहकर माँ हा-हा कर हँस पड़ी। बाद में पुनः बोलीं—"क्या करोगे? सर्व रूप में तो एक मात्र भगवान् की विभूति है। एक-एक समय एक-एक रूप प्रकट होता है।"

इस सम्बन्ध में मुझे एसा लगा कि माँ हम लोगों से बराबर कहती रहती हैं—"महापुरुष, साधु-सन्त कब किस रूप में रहते हैं तथा किस कारण से क्या करते हैं, यह सब तुम लोग नहीं जान सकते। इसलिए तुम लोग उन लोगों के सम्बन्ध में बेकार की चर्चा मत किया करो। गोकि साधु-सन्तों की स्तुति-निन्दा सब बराबर है, पर तुम लोगों का नियम है कि यथा शक्ति आदेश का पालन करो।"

पाण्डेचेरी आश्रम के कोई न कोई व्यक्ति इस प्रकार की बातें माँ के पास आकर कह जाते हैं। इसके अलावा हम लोग और भी अद्भुत बातें सुन चुके हैं, माँ यह सब बातें सुनने पर हँस कर उड़ा देती हैं। आज हम लोगों के विशेष आग्रह करने पर यह सब बातें माँ के मुख से प्रकट हुई। माँ का आदेश है—किसी के बारे में या किसी प्रतिष्ठान के सम्बन्ध में समालोचना मत करो। अक्सर माँ के मुँह से सुनती रहती हूँ—"जो तुम लोगों के गुरु हैं, वे ही

जगत् के गुरु हें। जगत् के गुरु जो हैं वही तुम लोगों के गुरु हैं। उनका अनन्त रूप है, अनन्त प्रकाश है, अनन्त अप्रकाश गुरु-इष्ट-मन्त्र रूप में वही तो। जहाँ मन-प्राण, वहीं विश्व व्यापक आत्मा ही तो। निज को लेकर निज में स्वयं ही तो। उस स्वरूप के प्रकाश के लिए ही इस धरा पर नाना धाराएँ हैं। इधर धरा स्वयं को स्वयं धरे हुए हैं। फिर धरा अ-धरा का प्रश्न ही नहीं है। वही प्रकाश चाहिए तो। साधु-सन्त महापुरुष कहते हैं कि जिनके साथ तुम लोग मिलकर श्रेय ग्रहण करो, प्रेय त्याग को ओर जाता है वहाँ किसी भी महापुरुष की क्रिया में कोई विचार का क्षेत्र ग्रहण मत करो। जो कहते हैं, उसे ग्रहण करो। उनके बारे में गलत आलोचना करने से तुम लोगों से अपराध हो जाता है। क्षति का क्षेत्र। जिनके सम्बन्ध में जिस तरह की समलोचना करते हो, सब तो तुम्हारे अपने ही हैं। अपने लोगों की ही की जाती है। जब तक अपना स्वरूप प्रकट न हो, तब तक अपनी आत्मा सभी में एक मात्र भगवान—यह भाव रखने की चेष्टा करो। श्रेयः ग्रहण प्रेय त्याग। एक इष्ट समूह ही तो विश्व ब्रह्माण्डमय है। जो लोग सत्य-लाभ के लिए बाहर निकल सके हैं, वे लोग साधु-सन्तों के सत्यानुसंधान क्रिया को सर्वदा अपने-अपने इष्ट गुरु का नाना प्रकाश है, इसे बुद्धि से ग्रहण करो, यही तुम्हारा कर्त्तव्य है। तुम माता, तुम पिता, तुम बन्धु, सखा, सब एक ओर जहाँ है, वहीं विश्व व्यापक सिर्फ एक ही आश्रम है, वहाँ सीमा का कोई प्रश्न नहीं है—असीम। सब एक ही के एक ही। दो से द्वन्द्व जहाँ आवरण, वहीं अन्धापन।"

आज इन सब बातों को सुनने के बाद बहुत दिन पहले की एक स्मृति मेरे मन में जाग उठी। सम्भवतः यह घटना १५–२० वर्ष से अधिक पुरानी है। ढाका में मेरे स्वर्गीय पिता (स्वामी

अखण्डानन्दजी) के घर पर एक बार सैकड़ों लोगों के बीच माँ की दृष्टि ऐसी अपलक हो गयी कि ३-२ घण्टे तक एक भाव में बीत गया। बिल्कुल पत्थर की मूर्ति की तरह इसके बाद जव हमलोग माँ को सहारा देकर एक दूसरे मकान में ले गये तब भी देखा माँ में उसी एक भाव की दृष्टि है। हम लोगों ने यह दृश्य पहले-पहल देखा, इसीलिए डर गये कि कहीं माँ के शरीर को कुछ न हो जाय। उस समय जो लोग वहाँ उपस्थित थे, उन सभी ने यह दृश्य देखा था। उनमें आज भी कुछ लोग जीवित हैं।

श्री श्री माँ की एक पुरानी घटना

एक बार काशी धाम में महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जी की उपस्थिति में माँ का नाना प्रकार की स्थिर दृष्टि एवं त्राटक हुआ था। यह बहुत दिन पहले की वात है। इस तरह की घटनाएँ और भी कई बार हुई हैं। कविराज जी ने इस समय का चित्र ले लिया था। बाद में जव इस विषय पर माँ के साथ उनकी चर्चा चली तव माँ ने कहा था—"दृष्टि को अनन्त धारा।"

आज सवेरे की एक घटना है। माँ भोर के वक्त टहल कर आकर घर के सामने एक कुर्सी पर बैठी थीं। न जाने कौन बातचीत के सिलसिले में कह उठा—"बुध बीता, आज गुरुवार है।" माँ इस बात को पकड़कर बार-बार कहने लगीं—"बुध गया, भूत आया—वुध गया भूत आया।" इस प्रकार २-३ बार कहने के वाद वे बच्चों की तरह हँसने लगीं।

इस समय जो लोग सामने थे, उनसे वे पूछने लगीं—"तुम लोग भूत से डरते हो या नहीं?" अधिकतर लोगों ने कहा कि हम डरते हैं। आगे माँ ने कुछ नहीं कहा। बाद में मेरे बार-बार पूछने

पर माँ ने कहा—"ब्रह्म राक्षस, ब्रह्म दैत्य इस तरह का कोई था। यह शरीर सोया था, दरवाजे के सामने खड़ा होकर मुलाकात कर गया।"

मैंने माँ से पूछा—"माँ, तुम्हारा दर्शन पाकर इस प्रकार बहुत से लोग मुक्त हो जाते हैं, उनका क्या हुआ ?"

बार-बार पूछने के बाद माँ ने गम्भीर भाव से कहा—"अवस्था का परिवर्तन।"

आज तीसरे पहर कलकत्ता से डा० अनिल मैत्र का तार आया है कि पालू का ऑपरेशन सकुशल हो गया है। अनिल आजकल टाली गंज के सरकारी अस्पताल का मुख्य चिकित्सक है। उसी ने सारी व्यवस्था की है। इसके पहले भी वह अनेक आश्रमवासियों के लिए सपत्नीक बहुत कुछ कर चुका है। इन दोनों का स्वभाव बहुत ही मधुर एवं भक्ति पूर्ण है।

१५ जून, १९५७

श्री श्री माँ के निकट बम्बई के राज्यपाल श्री श्री प्रकाशजी

तीसरे पहर बम्बई के राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी माँ का दर्शन करने आये। सवेरे आपकी पुत्र-वधू आकर माँ का दर्शन कर गयी है। श्रीप्रकाशजी काशी के सुप्रसिद्ध पण्डित डा० भगवान दासजी के पुत्र हैं। आपके परिवार के सभी लोग माँ के निकट आ चुके हैं। केवल श्री प्रकाशजी को इतने दिनों के बाद आने का अवसर मिला। यही बात उन्होंने माँ से कही। माँ के साथ उनकी विभिन्न विषयों पर बातचीत हुई। चलते समय उन्होंने पूछा—"माताजी, आपके साथ इतने लोग जाते हैं, उन सब की व्यवस्था कैसे होती है ?" माँ ने

हँसकर उत्तर दिया—"पिताजी, पहले से यहाँ कोई व्यवस्था नहीं की जाती। इस शरीर की बात है कि हो जाता है।"

कुछ देर बाद वे तथा उनकी पुत्र-वधू माँ को प्रणाम कर चले गये।

१६ जून, १९६७

आज माँ सवेरे टहलकर घर के बाहर रखी कुर्सी पर बैठ गयीं। मैं माँ के पास जाकर खड़ी हो गयी। मैंने देखा—माँ के दोनों हाथ मुष्टिबद्ध अवस्था में हैं जब कोई उनके निकट आता तब वे उससे पूछतीं—"बताओ तो मेरे हाथ में क्या है?" माँ का यह शिशु सुलभ व्यवहार चकित कर देने वाला है।

जब मैं माँ के निकट आयी तब उन्होंने मुझसे यही प्रश्न किया। मैंने कहा—"शायद रास्ते में किसी ने कुछ दिया होगा।" माँ ने मुट्ठियों को खोलकर दिखाया। मैंने देखा एक हाथ में फूल है, दूसरे हाथ में तिल का दाना। दो महाराष्ट्रीय लड़की मार्ग में माँ को देखकर उनके हाथ में ये वस्तुएँ दी हैं। यहाँ का पूजा का यह एक नियम है। दोनों कन्याएँ बिल्कुल अपरिचिता थीं। वे रास्ते से चली जा रही थीं। अचानक माँ को देखकर उन्हें न जाने क्या ख्याल हुआ कि माँ के हाथों में यह सब दे गये। उन लोगों ने माँ में कुछ देखा है या नहीं, कौन जाने।

बात-बात में माँ कह रही हैं—"देखा गया कि एक व्यक्ति काला टोपी पहने इस घर के सामने बैठा है। उसके सामने एक ऐंचा व्यक्ति है।" इसके आगे वे कुछ नहीं बोलीं। थोड़ी देर बाद पुनः बोलीं—"भूपति बाबा आकर कह रहे हैं कि कीर्त्तन के समय

बड़ी नींद आती है।" यह बात भी साफ-साफ समझ नहीं सकी ढाका के पुराने भक्त भूपति मित्रजी आजकल काशी के नवनिर्मित आश्रम में रहते हुए साधन-भजन कर रहे हैं।

इसके बाद माँ आकर कमरे के भीतर सो गयीं आँखें बन्द करती हुई बोलीं—"एक गम्भीर जंगल। बाघ-भालू भी हैं। तुम सब साथ हो हमलोग पैदल चलते हुए कहीं जा रहे हैं। यह शरीर आगे-आगे चल रहा है और बाकी लोग पीछे रह गये हैं, इसलिए यह शरीर पीछे की ओर देखते हुए तुम लोगों के पास आया।"

पुनः कुछ देर बाद कह रही हैं—"कोई कान के पास आकर कह गया (अपने को दिखाती हुई) मैं पास हो गया हूँ। हजार में फर्स्ट।"

बुनी और उदास भी कमरे में थी। माँ की वात वे दोनों साफ-साफ सुनती रहीं, पर मैं पास में थी और मैंने सुना—परीक्षा की बात, पास की बात नहीं। फलस्वरूप मैंने माँ से आग्रह के साथ पूछा—"परीक्षा की बात कह गया माँ?" माँ ने समझा कि मैं बात ठीक तरह से नहीं समझ पायी, इसलिए वात दवा देने के लिए बोलीं—"अभी नहीं कहा जायगा।"

माँ की बात सुनकर बुनी ने मान लिया कि जरूर तपन के पास होने की बात है। तपन ने इस साल पंजाब विश्वविद्यालय से बी० ए० का इम्तहान दिया है। परीक्षा फल अभी तक मालूम न होने के कारण वह बड़ा चिन्तित है। आश्चर्य की बात यह है कि माँ के मुँह से इस तरह की बात सुनने के बाद भी तपन को यह बात कहने के लिए बुनो को कोई ख्याल नहीं हुआ।

तपन अल्मोड़ा विश्वविद्यालय से मैट्रिक पास करने के बाद

सोलन में योगी भाई के निकट ४ साल था। वहीं पढ़ लिखकर और शास्त्री की परीक्षा पास कर चुका है। इसके साथ आई० ए० पास करने के बाद उसने बी० ए० का इम्तहान दिया है। स्वभाव से बहुत सुन्दर है। उसके ऊपर माँ की विशेष कृपा दृष्टि है। उसके माँ-वाप-भाई वगैरह सभी लोग उसे कलकत्ता जाकर नौकरी करने के लिए सलाह दे चुके हैं। किन्तु उसने माँ की बात को सर्वोच्च स्थान देते हुए, माँ जो कह रही हैं, उसी को करने का प्रयत्न कर रहा है।

१७ जून, १९६७

आज सोलन से योगी भाई का तार आया। तपन बी० ए० बड़े अच्छे नम्बरों से पास हो गया है। समाचार सुनकर हँसती हुई माँ बोली—"कल दो बार कहा कि पास होने का समाचार दे गया, किन्तु आश्चर्य है कि दीदी ने एक भी बात नहीं सुनी। तब ख्याल हुआ कि इस वक्त बोलो मत। साफ देखा गया कि तपन ने आकर अपने को दिखाते हुए मेरे कान में कहा—मैं पास हो गया हूँ हजार में एक।"

माँ की बात सुनकर हम सब अवाक् रह गये। यह माँ की कैसी लीला है? सब कुछ जानते हुए भी मानों कुछ जानती नहीं, सब कहती हुई भी कुछ नहीं कहतीं। हम अपनी अज्ञता के कारण हर वक्त सभी बातें समझ नहीं पाते।

आज शाम के समय माँ स्वयं ही काफी देर तक कीर्त्तन करती रहीं—"हे नाथ विश्वनाथ, स्वयंम्भू विश्वनाथ।" पुनः बंगला में बोलीं—"धरे लओ धरे लओ किशोरीर प्रेम।" ये गीत बड़े सुन्दर ढंग से गाती रहीं। माँ के मुँह से यह गीत सुनकर इस समय इस समय जितने यहाँ के बंगाली थे, वे सब बड़े आनन्दित हुए।

यहाँ के एक पंजाबी सज्जन ठीकेदार श्री सोमप्रकाश नन्दा माँ के निकट नित्य सवेरे सपत्नीक आते हैं। इसी बीच एक दिन वे माँ को अपने घर ले गये थे। बड़े सुन्दर ढंग से वहाँ पण्डाल सजाया था। माँ के बैठने के लिए एक खटिया फूलों से मोहक ढंग से सजाया गया था। माँ को फूलों से सजाकर पंचामृत आदि के द्वारा भक्ति के साथ पति-पत्नी ने उनकी पूजा की। आरती के समय एक बालक वड़े सुन्दर ढंग से आरती गीत गाता रहा।

आज वही बालक आकर माँ ४-५ गीत सुना गया। गीत सभी सुन्दर थे। माँ ने कहा कि इन गीतों को लिखकर रख दो।

देखा अजब खिलाड़ी साधु
देखा अजब खिलाड़ी रे।
मिट्टी के प्रभु खेल बनावें,
तिनमे पवन पसारी रे।
बोलत, चालत, फिरत निरंतर,
काम करे वल शरीरे॥ देखा......

एक खण्ड के दो क कीने
एक पुरुष एक नारी रे।
देव दैत्य नर पशु पक्षीगण
रूप अनेक बिहारी रे॥ देखा......

आप बनावें आप सजावे
आप करें तैयारी रे।
आप ही भोगे आप भुलावे
भुवन चतु:दशचारी रे॥ देखा......

गुप्त रूप में प्रकट होय
नटवर मूरत धारी रे।

ब्रह्मानन्द गुप्त फिर होय
महिमा अचरज भारी रे ॥ देखा.......

दो दिन का जग में मेला
सब चला चली का खेला। (दो बार)
कोई चला गया कोई जावे
कोई खड़ा है गड्डी बांधे
कोई खड़ा तैयार अकेला जी ॥ सब.........

पाप कपट के माया जोड़ी
धन लाख करोड़ कमाया जी
संग चले ना एक अधेला ॥ सब.........

माता पिता सुनो मेरे भाइयों
अन्त का कोई साथी नहीं जी
क्यूं भरे फिर पाप का ठेला ॥ सब.........

शिव शिव शिव शिव
शिव शिव शिव शिव
नाम सुमिर ले, नाम सुमिर ले
जनम संवार ले।
रावण नाम लियो दूर मन में
सकल देव आज्ञा सिरधारी
सकल मनोरथ पूरण कारी ॥ शिव......

अंगे विभूति गले मुंड माल
शीशे जटा जाल गंगा विलासी
सकल जगत के पालनकारी शिव.....

करे त्रिशूल, पहिरे मृग छाला
संग बसे गिरजा नित दासी
सकल मनोरथ पूरण कारी ॥ शिव……

चन्द्रकला मस्तक पर सोहे
तीन नयन त्रैलोक्य विकासी
सकल जगत के पालन कारी शिव……
ब्रह्मानन्द करो करुणा प्रभु
भक्ति दान दिव्ये त्रिपुरारी
सकल मनोरथ पूरण कारी ॥ शिव……

माँ की संगत में हरि गुन गायी रे ।
माँ की संगत का लाभ घनेरा
मिटे जनम-जनम का अंधेरा
परमेश्वर को दर्शन पाई रे ॥ माँ की……

सत् संगत की महिमा अति भारी
ऋषि मुनि पुराण पुकारी
ईश्वर गान सदा मन लाई रे ॥ माँ की……

करे हजार कोशिश कोई
माँ की संगत बिना ज्ञान नहीं होई
माँ का नाम सुमिर गुंजराई रे ॥ माँ की……

आज रात को माँ अपने घर के सामने खटिया पर सोयी हुई थीं। रात के ११॥ बज गये हैं। माँ अपने मन से गाने लगीं—

"माँ डाक शोनेना कथा कयना
माँ बुझि आमार बेंचे नाई।"

अपने ख्याल में इसी गीत को घुमा फिराकर गाने लगीं।

१९ जून, १९५७

तीसरे पहर प्रतापगढ़ के राजा के घर माँ को ले जाया गया। राजमाता स्वयं और ३-४ मिलकर बड़े सुन्दर ढंग से देवी का स्तव-पाठ और कीर्त्तन करते रहे। सभी लोगों को सुनकर आनन्द मिला। वहाँ से माँ को मरवी की रानी साहबा घर ले गयीं। राजा साहब आजकल लंदन में हैं। अभी हाल में वृद्ध महाराजा का निधन हो गया है। मोरवी राजपरिवार के सभी लोग माँ के विशेष भक्त हैं।

आज रात को ८॥ बजे वापस आयीं। कल माँ पूना से रवाना हो जाने वाली हैं। सभी लोगों को यह आशा थी कि माँ यहाँ अभी कुछ दिनों तक विश्राम करेंगी। किन्तु माँ अब नहीं ठहर सकीं माँ मुझे यहीं छोड़े जा रही हैं। माँ ने कहा कि यहाँ एक महीना और रहने के बाद तब मैं रवाना होऊँ।

२० जून, १९५७

माँ का पूना त्याग और विभिन्न स्थानों में गमन

आज सवेरे ७॥ बजे माँ डकन क्वीन से बम्बई रवाना हो गयीं। साथ में परमानन्द स्वामी, बुनी, उदास और भारद्वाज गये। लीला बेन तथा लक्ष्मीजी साथ हैं।

मैं यहाँ रुक गयी। भूता साहब ने सारा प्रबन्ध कर दिया है। मेरे साथ ३–४ लोग रह गये। इसके अलावा काशी से मनमोहन

दादा का बड़ा लड़का सरोज आया है। माँ उसे भी मेरे पास छोड़ गयीं।

२२ जून, १९५७

बम्बई से बुनी का पत्र मिला। माँ परसों सवेरे ११ बजे के लगभग भइया के मकान पर पहुँची। आगामी २४ तारीख को वे दिल्ली रवाना होगीं।

२३ जून, १९५७

बम्बई से प्राप्त पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ की तबीयत ठीक है। माँ के निर्देशानुसार भइया के मकान में कल से अखण्ड रामायण का पाठ शुरू हो गया है। लीला बेन और लक्ष्मीजी भी बड़े उत्साह के साथ पाठ कर रही हैं।

२५ जून, १९५७

पत्र आया है। परसों माँ तीसरे पहर एक बार संन्यास आश्रम गयी थीं। साधुओं के अनुरोध करने पर वहाँ थोड़ी देर तक कीर्त्तन करती रहीं। वहाँ से चलकर हरिबावाजी के भक्त राम सिंहजी के यहाँ हो आयी हैं। कल शाम को फ्रण्टियर मेल से माँ रवाना हो गयी हैं। माँ के साथ सुनैना और ठाकुर भाई की लड़की बीना भी जा रही है। रास्ते में बड़ौदा में उत्कण्ठेश्वर से ब्रह्मचारी कुसुम, कान्तिभाई, हरप्रसाद आदि आकर माँ के साथ जायंगे।

२८ जून, १९५७

दिल्ली से समाचार मिला कि माँ पिछले २५ तारीख को वहाँ

पहुँची। माँ का स्वागत करने के लिए बहुत से लोग स्टेशन पर आये थे। भक्तों की प्रार्थना पर दिल्ली के आश्रम में दो रात रहने के बाद माँ २७ तारीख की रात को हरिद्वार रवाना हो गयीं। माँ की उपस्थिति में वहाँ के सभी भक्तों ने मिलकर बड़े उत्साह के साथ कीर्त्तन किया है। ठाकुर भाई की लड़की वीना ने दिल्ली वाला आश्रम पहले-पहल देखा। आश्रम में अभी बिजली नहीं लगो है। यह देखकर उसने स्वामीजी से कहा है कि इस बावत वह दो हजार रुपया देगी। आश्रम में जल्दी से बिजली आ जाय, यह उसकी हार्दिक इच्छा है।

अगले २२ नवम्बर से २८ तारीख तक इस बार दिल्ली में संयम-सप्ताह होने की बातचीत चल रही है। श्री आगा साहव इस बार सम्वन्ध में विशेष रूप से प्रवन्ध कर रहे हैं। पिछले कई सालों से आश्रम अधूरी हालत में है। लोगों को इस बात की आशा है कि संयम व्रत के उपलक्ष्य में हाल वाला कमरा बन जायगा।

२ जुलाई, १९५७

आज देहरादून से चिट्ठी प्राप्त हुई। माँ पिछले २८ तारीख की भोर में परमानन्द स्वामी, उदास और कुसुम को लेकर हरिद्वार उतर गयी थीं। बुनी तथा अन्य सभी लोग सीधे देहरादून चले गये थे।

योगी भाई आजकल सोलन में हैं। इसलिए हरिद्वार स्टेशन पर टहरी के महाराजा की गाड़ी माँ के लिए तैयार खड़ी थी। माँ उस गाड़ी से सीधे बाघाट हाउस चली गयीं।

दोपहर को भोजन आदि करने के बाद माँ मोटर द्वारा सप्तर्षि आश्रम में हरिबाबाजी से मिलने गयी थीं। इधर एक अर्से से

हरिबाबाजी वहीं रहते हैं। नित्य सवेरे और शाम को पेड़ के नीचे रहते हुए पाठ और सत्संग बराबर कर रहे हैं।

हरिबाबाजी से मिलने के बाद माँ उसी मोटर से देहरादून रवाना हो गयीं। शाम को ६।। बजे कल्याणवन पहुँची।

इसी बीच पूना से दीदी माँ, नारायण स्वामी तथा महिलाओं में अनेकों को देहरादून भेज दिया गया था। वे सब किशनपुर में हैं। माँ देहरादून जा रही हैं तथा वहाँ कुछ दिन रहने वाली हैं। यह समाचार पाकर अनेक भक्त वहाँ एकत्रित हो गये हैं।

माँ कल्याणवन में रह रही हैं। कभी-कभी किशनपुर वाले आश्रम में घुम-फिर आती हैं। वहाँ माँ बातचीत के सिलसिले में कहती रहीं कि इस बार बम्बई में भइया के यहाँ जब अखण्ड रामायण पाठ हो रहा था तब दो मूर्तियाँ (एक स्त्री और दूसरा पुरुष) आकर माँ को प्रणाम करने के बाद वहीं गायब हो गयीं। दोनों ही सफेद कपड़े पहने थे और उनके भाव अच्छे थे। उनके सम्बन्ध में माँ के मुँह से इससे अधिक कुछ सुनने का सुयोग नहीं हुआ।

९ जुलाई, १९५७

नारायण स्वामीजी और बुनी के पत्र प्राप्त हुए। माँ का शरीर एक प्रकार से ठीक है, पर शरीर में दर्द बना हुआ है। माँ किशन-पुर के आश्रम में रहती हैं। नित्य तीसरे पहर एक बार लोगों को लेकर कल्याणवन में टहल आती हैं।

पिछले पहली तारीख को दोपहर में टेहरी के महाराजा सपरि-वार माँ का दर्शन करने आये थे। तीसरे पहर वे लोग नरेन्द्र नगर वापस चले गये।

आगामी ८ तारीख को माँ हरिद्वार चली जायँगी इस बार योगी भाई के आग्रह पर गुरु पूर्णिमा का उत्सव हरिद्वार में होने वाला है।

९ जुलाई, १९५७

देहरादून से पत्र आया है। पिछले ५ तारीख को तीसरे पहर हरिबावाजी माँ से मिलने के लिए देहरादून गये थे साथ में पण्डित सुन्दरलालजी भी गये थे। ये लोग दिल्ली होते हुए वृन्दावन जायँगे। हरिबावाजी ने कहा कि अगर उन्हें ज्ञात होता कि गुरु पूर्णिमा के अवसर पर माँ हरिद्वार में रहेंगी तो वे वहाँ रहने का इन्तजाम करते, किन्तु निश्चित समय तक यह बात ज्ञात न होने के कारण गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सभी लोगों को वृन्दावन बुला लिया गया है। भइया की लड़की सुनैना माँ के कथनानुसार उन्हें कई भजन सुना चुकी है। इससे हरिबावाजी बड़े आनन्दित हुए हैं।

गुरु पूर्णिमा के दिन हरिद्वार में गौरांग ब्रह्मचारी संन्यास ग्रहण करेंगे, इसका इन्तजाम करने के लिए माँ ने पहले से ही ब्रह्मचारी कान्ति भाई, चिन्मयानन्द और केशवानन्द को हरिद्वार भेज चुकी हैं।

१२ जुलाई, १९५७

नारायण स्वामीजी और बुनी के पत्रों से माँ का समाचार मिला। पिछले ८ तारीख को १२ बजे वाली गाड़ी से बहुत से लोगों
को हरिद्वार भेजकर माँ ३॥ बजे मोटर
गुरु पूर्णिमा के अवसर पर द्वारा हरिद्वार रवाना हुईं। ६॥ बजे के
हरिद्वार में माँ लगभग वहाँ पहुँचीं। माँ के साथ दीदी, माँ,

९

परमानन्द स्वामी, नारायण स्वामी हरिद्वार आये। कासिम बाजार की महारानी कई दिन पहले पहुँच गयी थीं। महारानी की इच्छा है कि माँ के साथ कुछ दिन रहें।

गुरु पूर्णिमा के उत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न स्थानों से अनेक भक्त हरिद्वार पहुँच गये हैं। कुचामन से राजा प्रतापचन्द्रजी और उनकी बहन आये। टेहरी की महारानी और उनके देवर महाराज कुमार बालेन्द शाह अपनी पत्नी के साथ एक दिन माँ का दर्शन करने आये थे। इनके साथ माँ काफी देर तक आध्यात्मिक विषय पर बातचीत करती रहीं।

मुझे विश्वास है कि कल का गुरु पूर्णिमा उत्सव हरिद्वार में माँ की उपस्थिति में बड़े आनन्द के साथ मनाया गया होगा। उत्सव का समाचार अभी तक नहीं मिला है। हरिद्वार तथा देहरा-दून से यहाँ पत्र आने में ४ दिन लग जाते हैं।

१५ जुलाई, १९५७

हरिद्वार से प्राप्त १२ तारीख वाले पत्र से आज गुरु पूर्णिमा के बारे में विस्तारित समाचार प्राप्त हुआ।

गुरु पूर्णिमा के दिन सवेरे से अखण्ड नाम कीर्त्तन शुरू हुआ था। उसी के साथ अखण्ड जप भी चलता रहा। बाघाट हाउस के नीचे वाला हाल बड़े सुन्दर ढंग से सजाया गया था। ११ बजे के लगभग माँ नीचे आकर बैठीं, ब्रह्मचारी कुसुम ने माँ की पूजा की। पूजा समाप्त होने के बाद उपस्थित सभी लोगों ने माँ को पुष्पांजलि देकर प्रणाम किया। इसके बाद माँ ने स्वयं ही नाम शुरू किया—"जय गुरु देव, जय

हरिद्वार में गुरुपूर्णिमा उत्सव

गुरु देव ।" कुछ देर तक नाम करने के बाद माँ ने स्वयं अपने हाथ से लोगों को प्रसाद और माला वितरण किया ।

दिन के १ बजे से आरम्भ होकर शाम तक सम्पुटित रामायण पाठ भी हुआ है । तीसरे पहर माँ सत्संग में जाकर बैठीं । श्री गणेश दत्त गोस्वामी महाराज ने हिन्दी में 'गुरू तत्त्व' विषय पर एक सारगर्भित भाषण दिया ।

रात भर खूब झमाझम कीर्त्तन होता रहा जो दूसरे दिन सूर्योदय के समय समाप्त हुआ । देहरादून और दिल्ली के बहुत से लोग इस कीर्त्तन में भाग लेने आये थे ।

इसके अलावा गुरु पूर्णिमा के दिन सवेरे कासिम बाजार की महारानी ने माँ की उपस्थिति में सचल-युगल कृष्ण मूर्ति की प्रतिष्ठा करवायी हैं । पुरोहित का काम श्री वाटु दादा ने किया है ।

पूर्णिमा के पहले वाले दिन रात को ब्रह्मचारी गौरांग का विरजा होम आदि शुरू हुआ था । रात के अन्तिम भाग में दीदी माँ ने उसे संन्यास महावाक्य सुनायीं । इसके बाद स्वामी शंकरानन्दजी ने माँ तथा दीदी माँ की उपस्थिति में प्रेष-मंत्र दिया । आश्रम के अनेक संन्यासी उस समय उपस्थित थे । संन्यास ग्रहण के बाद गौरांग का नाम रखा गया —स्वामी चैतन्यानन्द गिरि ।

ब्रह्मचारी गौरांग का संन्यास ग्रहण

सन् १९५० में सावित्री महायज्ञ के बाद ब्रह्मचारी नेपाल दादा, प्रकाश, स्वरूप, मृणमय तथा केशव ने संन्यास लिया था । संन्यास लेने के बाद इन लोगों के नाम यथाक्रम नारायणानन्द, प्रकाशानन्द, स्वरूपानन्द, चिन्मयानन्द और केशवानन्द हुआ । अब ७ वर्ष के बाद पुनः एक ब्रह्मचारी ने संन्यास लिया ।

संन्यास-ग्रहण-उत्सव के उपलक्ष्य में आश्रम स्थित सभी ब्रह्मचारियों और संन्यासियों को माँ उपदेश देती रहीं—"तुम सब खूब मन लगाकर साधन-भजन में जुट जाओ, समय गुजरता जा रहा है। मंत्र का साधन या शरीर पतन।"

गौरांग के संन्यास ग्रहण के उपलक्ष्य में गुरु पूर्णिमा के दूसरे दिन माँ की उपस्थिति में लगभग ५० संन्यासियों को भोजन कराकर वस्त्र दान किया गया है।

पूर्णिमा के दूसरे दिन अर्थात् १२ तारीख को माँ तीसरे पहर मोटर द्वारा देहरादून वापस चली गयीं। हरिद्वार के बाघाट हाउस में साधन-भजन के लिए स्वामी शिवानन्द, चिन्मयानन्द और चैतन्यानन्द को रख दिया गया। ये लोग सम्भवतः हरिद्वार में चतुर्मास करेंगे।

१७ जुलाई, १९५७

देहरादून से कुसुम, वुनी और नारायण स्वामी का पत्र आया है।

माँ की तबीयत ठीक नहीं चल रही है। कान और सर में वही सीटी की आवाज गूँज रही है। कभी कम कभी ज्यादा हो जाती है। पैर में दर्द बना हुआ है, यही वजह है कि माँ नीचे बहुत कम उतरती हैं। पर शाम को नित्य एक बार कल्याणवन टहलने जाती हैं।

२० जुलाई, १९५७

नारायण स्वामी ने लिखा है कि इसी बीच एक दिन ब्रह्मचारियों के उद्देश्य में माँ कहती रहीं—"तुम लोग जब भोग का क्षेत्र छोड़-

यहाँ हो तब साधन-भजन के क्षेत्र में जुट जाना चाहिए। जितनी शक्ति तुममें है, उसका इधर ही प्रयोग करो।"

श्री श्री माँ के श्रीमुख से विभिन्न बातें

इस सम्बन्ध में माँ एक कहानी सुनाती रहीं जो यों है—एक साधक गुरु के आदेशानुसार विंध्याचल के निर्जन स्थान पर बैठा साधन-भजन कर रहा था। दीर्घ दिनों तक कठोर साधन करने के बाद एक दिन एक दीर्घकाय महापुरुष उसके सामने आकर खड़े हुए और पूछा—"तुम क्या चाहते हो?" उस साधक द्वारा कुछ भी न माँगने पर भी महापुरुष ने उसे मुक्ति-वर देना चाहा। साधक ने नम्र भाव से कहा—"जब तक मैं अपने गुरुदेव से पूछ न लूँ तब तक आपसे कोई वर लेने में अक्षम हूँ।" कुछ दिनों बाद जब उसकी मुलाकात गुरुदेव से हुई तब उन्होंने सारा समाचार सुनकर कहा—"तुमने कोई वर न लेकर अच्छा ही किया है। मुक्ति से बड़ा प्रेम और भक्ति है, तुम उसी के अधिकारी होगे।" यह कहानी कहने के बाद माँ ने कहा—"वे वैष्णव सम्प्रदाय के साधक थे, इसलिए उन लोगों ने भक्ति-प्रेम को मुक्ति से बड़ा माना है। असली बात यह है कि सर्वदा साधन-भजन करते-करते 'क्या मिला—क्या हुआ' इधर ध्यान न देकर उसी मार्ग पर चलते रहना चाहिए। इसी से धीरे-धीरे प्रकाश मिलता है।"

एक बार इसी प्रकार की चर्चा चल रही थी कि माँ किसी को प्यार करती हैं या नहीं। कुछ लोगों ने कहा कि माँ अगर प्यार न करतीं तो माँ के निकट इतने लोग कैसे आते। नारायण स्वामी-जी ने कहा—"पिछले ३० वर्ष के अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि माँ में प्यार का नाम गन्ध भी नहीं है।" प्रत्युत्तर में माँ तुरन्त बोल उठीं—"दण्डी साधु क्या कह रहा है देखो ठीक ही है तो, दो जन रहने से प्यार होता है। जब केवल यही कहते

हो कि केवल एक मात्र वही हैं तब कौन किससे प्यार करता है। जागतिक दृष्टि से देखने पर सभी छोटा बच्चा देखते ही कितना आदर करते हैं, प्यार करते हैं। किन्तु इस शरीर का सब कुछ अद्भुत है। एक समय ऐसा भी हुआ है जब यह देखा जाता था कि कोई शिशु का आदर कर रहा है तब शिशु की सृष्टि की बात ख्याल आते ही भीतर से वमन के भावते थे।"

थोड़ी देर बाद नारायण स्वामी ने माँ से कहा—"देखो माँ, मेरे पास कोई भी छोटा बालक आना नहीं चाहता। मैंने इसे अनेक बार लक्ष्य किया है। सम्भवतः मेरी शक्ल को देखकर वे सब डर जाते हैं।"

माँ कह उठीं—कोई अगर आना चाहे तो तुम उसे गोद लोगे ?" यह कह कर माँ खूब हँसने लगीं।

एक लड़के ने माँ से प्रश्न किया—"भगवान् अगर सर्वं शक्तिमान है तो इस जगत में इतना दुःख और अशान्ति क्यों है ? वे अपनी इच्छा से इसे दूर तो कर सकते हैं।"

माँ ने जवाब दिया—"इस जगत की सृष्टि भगवान् ने किसी से परामर्श करके नहीं किया है। अगर वे इस जगत को दूसरे ढंग से बनाते तब तुम लोगों का प्रश्न बना होता अगर ठीक-ठीक से समझ लिया जाता कि वे मंगलमय, सर्वशक्तिमान हैं तो इस प्रकार के प्रश्न मन में पैदा नहीं हो सकते।"

एक पुत्रहारा ८४ वर्षीय वृद्धा महिला माँ के निकट आकर बहुत रो-धो रही थी। इसका ६० वर्षीय इंजीनियर पुत्र कई दिन हुए मर गया है।

माँ उसे सान्त्वना देती हुई बोलीं—"क्या करोगी माँ ? जिसकी चीज रही वे इतने दिनों तक तुम्हारे पास रखकर सेवा करवाते

रहे। वह भी तुम्हारे निकट रहकर अपना प्राप्य सेवा ग्रहण करता रहा। इसके बाद उन्होंने अपनी चीज स्वयं ही लौटा लिया। जब तुम्हें रुलाई आये तब तुम भगवान् के लिए, इष्ट के लिए रोना।" इतना कहने के बाद माँ उसके वक्षस्थल पर अपने मस्तक को रखा। वृद्धा माँ को पकड़कर रोने लगी। कुछ देर बाद वृद्धा शान्त हृदय से माँ के निकट से विदा लेकर चली गयी।

इस प्रसंग में माँ एक घटना सभी से कह चुकी हैं। अनेक वर्ष पूर्व जिन दिनों माँ तारापीठ में थीं, उन दिनों एक भद्र महिला ११ वर्ष की लड़की लेकर माँ के पास आयी थी। उसकी बड़ी लड़की के विवाह का सारा इन्तजाम हो गया था।

तारापीठ की एक घटना

ठीक इसी समय उस लड़की के मर जाने के कारण वह अत्यन्त शोकाकुल हो उठी। माँ के पास आकर देर तक रोती रही। दूसरे साल माँ जब पुनः तारापीठ गयीं तव उक्त भद्र महिला ने माँ के निकट आकर कहा कि उसकी ११ वर्षीय लड़की भी मर गयी है। आश्चर्य की वात है कि उसके एक साल बाद पुनः माँ तारापीठ गयी थीं। समाचार पाकर उक्त भद्र महिला माँ के साथ मिलने आयी। इस बार उसकी गोद में एक महीने की एक लड़की थी। उक्त महिला ने सारी घटना माँ के निकट कह सुनायी। यह महिला अपनी ११ वर्षीय लड़की के लिए बहुत रोती रही। एक दिन स्वप्न में उसने देखा कि वह लड़की अपनी हम उम्र की अनेक लड़कियों के साथ एक स्थान पर वैठकर जैसे भगवान् की प्रार्थना कर रही है। स्थान वहुत मनोरम था। उधर भद्र महिला के पति ने स्वप्न में देखा कि उक्त मृत लड़की बड़े दुःख के साथ कह रही है—"पिताजी माँ मेरे लिए बहुत रो रही है। अब मैं यहाँ नहीं रह पा रही हूँ, अब मैं माँ की गोद में जा रही हूँ।" इतना कहने के बाद वह लड़की

एक शिशु मूर्ति बन गयी। उक्त सज्जन ने शिशु को अपनी पत्नी के गोद में डाल दिया। यह स्वप्न देखने के बाद ही भद्र महिला गर्भवती हुई। इसके बाद यही लड़की पैदा हुई। आज उस लड़की को लेकर यहाँ माँ से मिलने आयी है।

इस घटना का उल्लेख करते हुए माँ ने कहा है "मृत आत्मा के लिए रोना-गाना करने से कभी-कभी उसका अकल्याण भी होता है। इस तरह की अनेक घटनाएँ सुनने में आयी हैं। इसलिए कर्त्तव्य धीर स्थिर रूप से आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करो। वे ही देते हैं, फिर वापस भी ले लेते हैं। फलस्वरूप मनुष्य और क्या कर सकता है?

मृत आत्मा के लिए रोना-गाना नहीं करना चाहिए

उसी दिन माँ सबको एक कहानी सुनाती रहीं। नारायणस्वामी ने उसे विस्तारित रूप से सूचित किया है।

एक ब्राह्मण और एक फकीर साथ रहते थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। एक दिन एक घटना हुई। ब्राह्मण जब एक स्थान पर बैठा था तब उसे पके कटहल की महक मिली। उस समय कटहल का मौसम नहीं था। कटहल की महक कहाँ से आ रही है, यह जानने के लिए ब्राह्मण बगीचे में जाकर तलाश करने लगा। उसने देखा कि कहीं भी कटहल के नाम निशान तक नहीं है। कुछ समझ न पाने के कारण उसने फकीर के पास जाकर सारी घटना सुनायी। फकीर साहब एक अच्छे साधक थे। उनमें कुछ अलौकिक शक्ति थी। कुछ देर चुपचाप रहने के बाद उन्होंने ब्राह्मण को अपने साथ आने के लिए कहा, चलते-चलते दोनों एक नदी के किनारे उपस्थित हुए। नदी पार होने के बाद कुछ दूर जाने पर उन्होंने देखा एक कोठरी के भीतर एक ब्राह्मण बैठा पके

कटहल से अपने पिता का श्राद्ध कर रहा है। उसके स्व० पिता पका कटहल खाना बहुत पसन्द करते थे, इसलिए श्राद्ध के उपलक्ष्य में इस ब्राह्मण ने बड़े परिश्रम से एक पका कटहल कहीं से ले आकर श्राद्ध में अर्पण कर रहा है। यह दृश्य देखकर फकीर साहब ने अपने साथी ब्राह्मण से कहा—"देखो मित्र, इस ब्राह्मण के तुम पिछले जन्म में पिता थे। उन दिनों तुम पका कटहल खाना ज्यादा पसन्द करते थे। यही वजह है कि श्राद्ध में अर्पित कटहल को महक तुम अपने कमरे में बैठे पा रहे थे।"

यह कहानी कहने के वाद माँ ने कहा—"श्राद्ध के साथ मृत व्यक्ति के नाम पर जब कोई भी वस्तु अर्पण किया जाता है तो उससे मृत आत्मा को तृप्ति प्राप्त होती है। आजकल अधिकतर लोग कहते हैं कि श्राद्ध करने से क्या लाभ है। मृत व्यक्ति उसे कैसे भोग सकता है, किन्तु इस तरह की अनेक सत्य कहानियाँ हैं, जिस पर तुम विश्वास करने के लिए वाध्य हो सकते हो, अतएव किसी बात को हँसकर उड़ाना नहीं चाहिए।"

आज सवेरे पूना से रेल द्वारा रवाना होकर ११॥ बजे के लगभग मैं बम्बई स्थित भइया के मकान में पहुँची। पूना में माँ के निर्देशानुसार उन के जाने के बाद भी और एक माह तक रह चुकी हूँ। अब अगर बम्बई के डाक्टर मुझे जाने की अनुमति दे दें तो मैं माँ के निकट देहरादून जा सकती हूँ।

२१ जुलाई, १९५७

देहरादून से प्राप्त पत्र में माँ का समाचार मिला। माँ वहाँ विश्राम कर रही हैं। नित्य तोसरे पहर कल्याण वन में घूमने जाती हैं, एक बार पैदल जातो हैं और तोसरे पहर मोटर से ले आया जाता है।

एक दिन तीसरे पहर माँ वहाँ जाकर सामने पक्के स्थान पर चहलकदमी कर रही थीं। माँ के साथ जालन्धर के सरदार भगवन्त सिंह (रामजी) भी थे। एक बड़े पेड़ के जड़ के पास एक मूली का पेड़ उग रहा था, यह देखकर उन्होंने उस ओर माँ की दृष्टि आकर्षित किया। माँ हँसती हुई बोलीं—"बीज से बीज का नाश करना चाहिए अर्थात् बीज मंत्र जप करते-करते कर्म का बीज नष्ट हो जाता है तब फिर सृष्टि नहीं होती।"

बीज से बीज का नाश करना चाहिए

इसी बीच एक दिन स्वामी शरणानन्द जी माँ के साथ मिलने के के लिए आये थे। वे प्रकाण्ड पण्डित हैं। बचपन से ही प्रज्ञाचक्षु हैं। माँ के प्रति उनकी असीम भक्ति-श्रद्धा है। कई वर्ष हुए उनके भक्तों ने वृन्दावन में हमलोगों के आश्रम के सामने 'मानव सेवा संघ' नामक एक आश्रम बनवाया है।

२४ जुलाई, १९५७

देहरादून से प्राप्त पत्र से पता लगा कि वहाँ के आश्रम में अखण्ड भागवत-पाठ परसों सवेरे से शुरू हो गया है। उसी के साथ-साथ श्रीमद्भागवत के हिन्दी की व्याख्या भी जारी है। इसके अलावा अनेक लोग अपने-अपने इष्ट मंत्र अखण्ड रूप में जप कर रहे हैं। मूल पाठ श्री बाटू दादा, ब्रह्मचारी कान्तिभाई, अध्यापक शम्भूबाबू, शाश्वतानन्द स्वामी, ब्रह्मचारी भरद्वाज, कुसुम और कलकत्ता के वन्द्योपाध्याय कर रहे हैं। लोगों को उत्साह देने के लिए माँ अक्सर पाठ के समय आकर बैठ जाती हैं।

२६ जुलाई, १९५७

कुसुम के पत्र से ज्ञात हुआ कि अखण्ड भागवत पाठ ३८॥

घण्टा में समाप्त हो गया है। समाप्ति के समय माँ वहाँ उपस्थित थीं। सारा कार्य सुन्दर ढंग से समाप्त हो गया है।

२८ जुलाई, १९५७

देहरादून से २५ तारीख का लिखा हुआ पत्र आया है। पिछले २४ तारीख को सवेरे १० वजे काशी में अनाथ का देहान्त हो गया। माँ के निकट उसी दिन तार किया गया था।

पिछले कई वर्षों से अनाथ गठिया की पीड़ा से कष्ट पा रहा था। वह माँ का पुराना भक्त था। अस्वस्थता के कारण नौकरी से अवकाश लेकर वह दिल्ली से काशी आकर आश्रम के पास ही एक किराये के मकान में सपरिवार रहता था। इधर वह बहुत कष्ट में था। इतने दिनों के बाद उसे अपने कष्टों से छुटकारा मिला।

परसों से आश्रम में पुनः सुबह-शाम दोनों वक्त एक-एक घण्टा श्रीमद्भागवत की व्याख्या शुरू हुई है। सम्भवतः १४ दिन में यह व्याख्या समाप्त होगी। इसके अलावा माँ के निर्देशानुसार आश्रम के सभी लोगों ने मिलकर अखण्ड रूप से २४ घण्टे का जप प्रारम्भ किया है। सुबह से रात ९ बजे तक का समय लड़कियों ने बाँट लिया और सारी रात लड़के जप करते रहे। बेकार का समय नष्ट न होने पाये इस ओर माँ का विशेष ध्यान देखा गया है।

श्रीमान् पानु कलकत्ता से परसों माँ के पास पहुँच गया है। अनाथ के मृत्यु के समय वह काशी में था। अनाथ लम्बे अर्से से

अपनी बीमारी के कारण बड़े कष्ट में था।

विधिवत् शास्त्रीय कर्मों इसीलिए उसका एकमात्र पुत्र कान्ति उसके
का फल अनिवार्य है। पक्ष में प्रायश्चित करता रहा। बड़ी अद्-

भुत बात यह है कि प्रायश्चित के अन्त में गो ग्रास देते समय अनाथ को प्राण वायु निकल गयी। पुराणों में देखा गया है कि ऐसे मौके पर प्रायश्चित यदि ठीक से विधिवत् किया जाय तो रोगी स्वस्थ हो जाता है अथवा साथ ही साथ वह कष्ट से मुक्ति प्राप्त करता है।

यह सब बातें सुनने के बाद माँ ने कहा है—"देखो यह भी एक विशेष बात है। प्रायश्चित होने के साथ-साथ ही वह मर गया"

३० जुलाई, १९५७

आज शाम को मैं फ्रण्टियर मेल से दिल्ली की ओर रवाना हुई। वहाँ कल शाम को पहुँच कर पुनः रात को मसूरी एक्सप्रेस से देहरादून रवाना हो जाऊँगी। मेरे साथ सरोज, ठाकुरमाँ, तुलसी और पारुल हैं।

१ अगस्त, १९५७

आज सवेरे आठ बजे देहरादून पहुँची। कल दिल्ली स्टेशन पर बहुत से लोग मुझसे मिलने आये थे।

यहाँ आकर सुना कि माँ काफी अस्वस्थ हैं। आश्चर्य की बात यह है कि देहरादून से पिछले २७ तारीख को भइया की लड़की सुनैना और अहमदाबाद के ठाकुर भाई मुन्शा की लड़की बीन २९ तारीख को बम्बई पहुँचने पर उनके साथ मेरी बातचीत माँ के शरीर के सम्बन्ध में हुई थी, किन्तु उन लोगों ने माँ के शरीर के सम्बन्ध में इस तरह की कोई बातचीत नहीं बतायी। बाद में

पता चला कि माँ की अस्वस्थता का समाचार पाकर कहीं मैं अधिक उद्विग्न न हो जाऊँ इसलिए माँ के निर्देशानुसार कोई समाचार नहीं दिया गया।

पिछले २६ तारीख की रात से माँ का शरीर ठीक नहीं है। दूसरे दिन रात को माँ की हालत ज्यादा खराब हो गयी थी। उस समय माँ बाहर बरामदे में बैठी हुई थीं। चुपचाप जल्दी से घर के भीतर जाकर सो गयीं। हार्ट की गति तेज थी तथा नाड़ी की गति इतनी तीव्र थी कि गिनना मुश्किल हो उठा था। बहुत से लोग घबड़ा उठे थे और स्थानीय एक बड़े डाक्टर को बुला लाये थे। उन्होंने जाँच के बाद बताया कि हार्ट की हालत काफी दुर्बल है। इनको पर्याप्त विश्राम और एकान्त की आवश्यकता है।

इधर दूसरे दिन तीसरे पहर माँ अपने ख्याल के अनुसार सर्दी के भीतर बरसाती पानी में नहाती रहीं। इसका नाम माँ ने 'आकाश गंगा में स्नान' रखा है। माँ का सब कुछ अद्भुत है।

फिर भी माँ विश्राम कर रही हैं नीचे नहीं उतरतीं। लोग ऊपर जाकर माँ को देख रहे हैं।

२ अगस्त, १९५७

पिछली रात को माँ का शरीर ज्यादा खराब हो गया था। लगभग रात को २ बजे माँ एक बार बाथरूम में गयी थीं। घर में बुनी और सती थी। उन्होंने देखा कि माँ का भाव स्वाभाविक नहीं है। सम्पूर्ण आनन से एक अपूर्व ज्योति निकल रही है।

पीड़ित माँ

माँ हँसती हुई उनसे बोलीं—"अभी तो मौका है, सर धोऊँगी, मुँह धोऊँगी। बस, सवेरे मुझे कुछ करने को नहीं रह जायगा।"

माँ कभी-कभी अक्सर सर पर पानी उड़ेल लेती हैं। आधी रात को अचानक जब माँ ने माथा धोने की बात कहीं तब वे दोनों अवाक् रह गयीं। माँ अच्छी तरह माथा-मुँह धोने के बाद वापस आकर बिछौने पर सो गयीं। कुछ देर बाद वुनी को हवा करने को बोलीं। हवा करते ही माँ के शरीर में एक अद्भूत कम्पन शुरू हो गया। वह कम्पन ऐसा था कि दो-तीन व्यक्ति चाँप कर ठीक नहीं रख पा रहे थे। वे दोनों घबड़ा कर मुझे और नारायण स्वामी को माँ के कमरे में बुला लायीं। कुछ देर बाद माँ को धीरे-धीरे हार्लिक्स पिलाया गया। थोड़ी देर बाद माँ शान्त हो गयीं। उस समय रात के ४ बज चुके थे। कमरे में मैं, नारायण स्वामी, बेलू, वुनी और सती थे।

माँ बाँयी करवट लेटी हुई थीं। आँखें बन्द किये हुए धीरे धीरे कहने लगीं—"दो पुरुष मूर्ति आयी हैं, जा रहे हैं न जाने क्या-क्या कह रहे हैं।" इतना कहकर चुप हो गयी आगे कुछ नहीं बोलीं।

नारायण स्वामी माँ के निकट प्रार्थना करते हुए बोले—"माँ, तुम्हारे ख्याल करने पर सब कुछ होता है। हमारी विनीत प्रार्थना है कि तुम जरा ख्याल करके हमलोगों के लिए अपने शरीर को स्वस्थ बना लो।" माँ धीरे-धीरे करवट बदलती हुई बोलीं—"हाँ, इस शरीर को ख्याल होने पर वह निश्चय पूर्ण होगा।" माँ अपनी बात पर विशेष जोर देकर कहती रहीं। माँ अपना परिचय स्वयं कितने तरह से देती हैं, पर हम लोगों में अटूट अवस्था कहाँ रहती है। इससे बढ़कर और दुर्भाग्य की बात क्या हो सकती है?

हमलोग ४॥ बजे के बाद माँ के कमरे से बाहर चले आये। माँ चुपचाप सो गयी थीं।

कल दोपहर को मिसेज सब्बरवाल अपने पुत्र और पुत्रवधू को साथ लेकर माँ के निकट प्रणाम करने आयी थीं। लड़का मद्रास स्थित वर्मा शेल कं० में काम करता है। दिल्ली की कमला जायसवाल को छोटी बहन नीना से उसका विवाह हुआ है। दोनों जल्द इंग्लैण्ड जाने वाले हैं, इसलिए माँ से आशीर्वाद माँगने आये हैं। जाते समय पुत्रवधू के हाथ में माँ ने दो फल दिये। यह देखकर मिसेज सब्बरवाल हँसती हुई बोल उठीं—"माताजी फिर वही फल।" हमलोग पहले इसका मतलब नहीं समझ सके बाद में सुना कि श्री आगा साहब कुछ पहले यहाँ आये थे। उन्होंने लोगों के सामने अपने जीवन की घटना सुनायी थी। वह भी फल से सम्बन्धित था।

घटना इस तरह है कि आगा साहब उन दिनों उत्तर प्रदेश के डिप्टी पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट थे तब तक वे माँ से विशेष रूप से मिलने का सुयोग नहीं पा सके थे। एक बार किसी काम से सपत्नीक मसूरी गये थे। वहाँ से वापस लौटते समय माँ का दर्शन करने के लिए यहाँ के आश्रम में आये। यहाँ आने पर उन्हें पता चला कि इस समय माँ विश्राम कर रही हैं। अभी दर्शन पाना सम्भव नहीं है। वे निराश होकर मोटर पर बैठने ही जा रहे थे कि ठीक इसी समय किसी ने आकर कहा—"माँ बुला रही हैं।" उन दोनों ने माँ के निकट जाकर प्रणाम किया। चलते समय माँ ने उनकी पत्नी के हाथ में एक साथ तीन फल रख दिये। आश्चर्य की बात यह हुई कि उन तीनों फलों को खाने के बाद क्रमशः उन्हें तीन बच्चे हुए। उस समय तक उन्हें सन्तान आदि नहीं थी। इन लोगों के मन में दृढ़ विश्वास हो गया कि माँ-कृपा से उनको तीन सन्तानें हुई हैं, इसीलिए माँ ने तीन फल एक साथ दिया था।

इस घटना के कई वर्ष बाद आगा साहब जब लखनऊ में बड़े

पुलिस अफसर के पद पर थे तब उन दिनों माँ एक बार वहाँ गयीं थीं। माँ यहाँ आयी हैं समाचार सुनकर वे सपत्नीक माँ का दर्शन करने के लिए आये। उस बार भी जब वे माँ को प्रणाम करके वापस जाने लगे तब माँ उनकी पत्नी के हाथ में दो फल देने जा रही थीं। यह देखकर वे तुरन्त बोल उठे—"माताजी अब नहीं चाहिए।" उन लोगों ने सोचा कि माँ द्वारा प्रदत्त दोनों फल लेने पर फिर दो बच्चे पैदा होंगे। इधर और सन्तान की अभिलाषा न होने के कारण उन लोगों ने पहले की घटना और अपने मन की बातें माँ के निकट कहीं। आश्चर्य की बात यह है कि कब देहरादून में माँ ने उनकी पत्नी के हाथ में फल दिया था। इस बीच न जाने कितनी बार वे माँ का दर्शन करने आये। पर कभी वे अपने तीनों सन्तानों के जन्म की कहानी माँ के निकट नहीं सुनायी थी। उस बार जब माँ लखनऊ में दो फल देने लगीं तब सारी घटना उन्होंने सुनायी।

इस बार देहरादून में आकर माँ के कमरे में जब बैठे थे तब लोगों के सामने वह कहानी सुनाते रहे। उस समय मिसेज सब्बरवाल उपस्थित थीं। वे सारी बातें सुन चुकी थीं। यही वजह है कि जब उनकी पुत्रवधू के हाथ में माँ ने दो फल दिये तब उनके मन में यह विश्वास हुआ कि उसे दो सन्तान अवश्य होंगे।

इस तरह की घटनाएँ माँ के निकट अक्सर होती रहती हैं। आज से तीन वर्ष पहले की बात है। माँ एक बार काशी में डा० गोपालदास गुप्तजी के घर के सामने मोटर पर बैठी थीं। गोपाल दादा की लड़की राधु जब माँ को प्रणाम करने आयी तब माँ ने उसके हाथ में दो मालाएँ एक साथ दीं। उपस्थित लोगों में कुछ लोगों ने सोचा 'दो' क्यों? किन्तु माँ पहले से ही सब कुछ देख रही थीं। इसके बाद माँ बम्बई चली आयीं। यहाँ आने के बाद

हमें समाचार मिला कि अचानक योगायोग हो जाने के कारण राधु का विवाह निश्चित हो गया। माँ जब रवाना हो रही थीं, उस समय विवाह की कोई बातचीत नहीं चली थी। उधर माँ राधु को दो मालाएँ पहले से ही दे आयी थीं।

आज रात को माँ की तबियत ज्यादा खराब हो गयी थी। मिसेज सब्बरवाल को सेवा ने जाकर जब यह समाचार दिया तो वे घबड़ाकर तुरन्त स्थानीय एक हार्ट-रोग विशेषज्ञ मेजर सिंह को बुला लायीं। डाक्टर को दिखाने से कोई लाभ नहीं जब कि इलाज नहीं किया जाता। इधर जब मिसेज सब्बरवाल बड़े आग्रह के साथ ले आयी हैं तब बिना जाँच करवाये डाक्टर को बिदा नहीं किया जा सकता। डाक्टर ने हार्ट की गति देखने के बाद रक्तचाप देखना चाहा। माँ का रक्तचाप पहले भी कई बार देखा गया है। मेजर सिंह ने जाँच करते समय हाथ में स्ट्राप को जरा जोर से बाँधा था। तुरन्त माँ के दिल की धड़कन तेज हो गयी। कुछ देर बाद डा० साहब चले गये। आधी रात के समय माँ के दिल की धड़कन और नाड़ी की गति आशंकाजनक हो गयी थी।

माँ के शरीर के अंगों में एक ऐसी अद्भुत प्रतिक्रिया होती है जिसे देखकर भी लोग विश्वास नहीं कर पाते। रक्तचाप लेते समय हाथ के ऊपर स्ट्राप जोर से बाँधने पर माँ के दिल पर प्रतिक्रिया आरम्भ हो सकती है, इसका अनुमान कोई भी डाक्टर नहीं लगा सकता। ऐसी हालत में इन सब बातों का दोषारोपण डाक्टरों पर करना सर्वथा अनुचित है। मैं माँ के साथ दीर्घ दिनों से रहती आ रही हूँ, फिर भी माँ के शरीर की धारा को ठीक से समझ नहीं सकी। ऐसी हालत में नये डाक्टर या और कोई उसे कैसे समझ सकता है ?

३ अगस्त, १९५७

आज सबेरे से माँ की तबीयत कुछ खराब है। बिछौने पर सोयी हुई हैं। बहुत देर बाद एक बार बाथरूम में गयी थीं। उस समय माँ को थोड़ा सा खिलाया गया। लोगों के दर्शन के लिए शाम को आधा घंटा और रात को मौन के पश्चात् आधा घण्टा का समय निश्चित किया गया। लोग कमरे के बाहर से एक-एक कर प्रणाम करते हुए चले जायेंगे।

माँ की अस्वस्थता में उत्तरोत्तर वृद्धि

माँ की नाड़ी की गति बहुत खराब हो गयी है। सेवा कुछ देर के अन्तर पर माँ की नाड़ी देखती रही। कभी गति तेज होती रही और कभी इतने धीरे-धीरे चलती रही कि ठीक से पकड़ में नहीं आती थी। माँ चुपचाप निष्क्रिय रूप से सोयी हुई थीं। हाथ-पैर काफी ठंडा हो गया था।

माँ की यह हालत देखकर मैंने माँ के भक्त डा० सोम को समाचार भेजा। वे इसके पूर्व माँ को अनेक बार देख चुके हैं। माँ की यह हालत देखते हुए क्या करना उचित है, हम ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं। डाक्टर सोम ने कहलवाया है कि तीसरे पहर चार बजे के पहले उनके लिए आना कठिन है, इसलिए हेमबाबू जल्दी से स्थानीय डा० दुर्गाप्रसाद को ले आये। आप एक कुशल चिकित्सक हैं। उन्होंने माँ की जाँच करने के पश्चात् कहा कि हृदय में किसी प्रकार की शिकायत नहीं है, फिर भी ऐसा क्यों हो रहा है; यह आश्चर्य की बात है। फेफड़े भी ठीक हैं, शरीर में अन्य कोई रोग नहीं है। बहरहाल उन्होंने कहा कि माँ को आराम की सख्त जरूरत है। माँ के लिए उपयुक्त खाद्य तालिका बनाकर दे गये।

शाम के बाद डा० सोम आये और माँ की जाँच की। वे अभी बैठे ही थे कि माँ का शरीर न जाने कैसा हो गया। थोड़ी देर बाद माँ स्वयं ही अपने शरीर को हालत का वर्णन करने लगीं।

माँ के शरीर की यह स्थिति है, ऐसी हालत में विभिन्न स्थानों के भक्तों को अगर समाचार न दिया गया तो वे सब शिकायत कर सकते हैं। फलस्वरूप श्री हरिबाबाजी, अवधूतजी, योगी भाई, भइया, डा० गोपालदास गुप्त, पटेल, कान्ति भाई, मुकुन्द भाई, टेहरी के महराजा आदि अन्य अनेक लोगों को तार और पत्र द्वारा माँ के स्वास्थ्य का समाचार दिया गया।

कुछ देर बाद मौका पाने पर जब माँ को यह समाचार दिया गया तब माँ बोलीं—"इस शरीर को कुछ नहीं कहना है। तुम लोग खबर दो या न दो, पर गोपी पिताजी इस शरीर की चिन्ता करते रहते हैं, इसलिए उन्हें एक पत्र लिख सकते हो। फलस्वरूप कविराजजी और अमूल्य दादा को माँ के बारे में समाचार दिया गया।

परमानन्द स्वामीजी ५-६ दिन पहले कलकत्ते में नये आश्रम के खरीदने के सम्बन्ध में गये हुए हैं। सम्भवतः वे कुछ दिन और वहाँ रहेंगे। इधर माँ की यह हालत है, ऐसी हालत में वे इतने दूर हैं, अच्छा नहीं लग रहा है; इसलिए स्वामीजी को माँ के स्वास्थ्य का समाचार भेजते हुए आने के लिए लिखा गया।

९ अगस्त, १९५७

माँ की तबीयत ज्यों की त्यों है। कभी-कभी थोड़ी देर तक बात करती हैं या स्वाभाविक लगती हैं, इसके बाद चुपचाप पड़ी रहती हैं। यह देखकर कुछ भय-सा मालूम पड़ता है।

माँ का समाचार पाकर आज दोपहर को वृन्दावन से श्री हरिबाबाजी, अवधूतजी तथा स्वरूपानन्दजी आये। ये लोग माँ के पास कुछ देर बैठे रहने के बाद कल्याणवन चले गये। इन लोगों के साथ थोड़ी देर तक बातचीत करते रहने के कारण तीसरे पहर तक माँ के श्वास की गति पुनः ज्यादा खराब हो गयी।

रात ९ बजे के बाद हरिबाबाजी और अवधूतजी माँ के कमरे में आये। हरिबाबाजी माँ के निकट अपने जीवन की तथा अन्य अनेक घटनाओं का वर्णन करते रहे। सम्भवतः उनकी यही इच्छा थी कि किसी सूरत में माँ में स्वस्थ हो जाने का ख्याल लाया जाय। माँ के विश्राम में कहीं व्याघात न हो जाय, इस आशंका के कारण इन्होंने आज शाम को अपना नित्य वाला कीर्त्तन नहीं किया। ऐसी हालत में भी माँ को सब कुछ ख्याल रहता है। धीरे-धीरे माँ ने हरि बाबाजी से कहा—"पिताजी, इस शरीर के लिए तुम अपना कीर्त्तन बन्द मत करो। कीर्त्तन की आवाज तो भगवान् के नाम की आवाज है, अच्छा है।"

६ अगस्त, १९५७

कल रात को लगभग १२ बजे के समय माँ के श्वास और नाड़ी की गति न जाने कैसी हो गयी थी। पैरों के नीचे का हिस्सा काफी ठंडा हो गया था। कुछ देर रगड़ने के बाद स्वाभाविक रूप वापस आया था।

काशी से डा० गोपालदास गुप्त और पटल माँ को देखने के लिए आज सवेरे यहाँ आ पहुँचे। गोपाल दादा को आने के लिए मैंने तार किया था। माँ की कब किस समय कैसी हालत हो जाय पता नहीं, ऐसी स्थिति में पास में एक अभिज्ञ चिकित्सक के रहने

पर वे वास्तविक स्थिति का अन्दाजा लगा सकते हैं। हालत अच्छी तरह समझ लेने पर वे माँ के शरीर के भावों के अनुरूप कोई न कोई व्यवस्था कर सकते हैं।

इन लोगों के आने के कुछ देर बाद दिल्ली से मोटर द्वारा भइया और कानिया भाई यहाँ आ गये। ये लोग कल शाम को बम्बई से हवाई जहाज द्वारा दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। दिल्ली से आते समय साथ में डा० बलराम को भी लेते आये हैं। डा० बलराम दिल्ली के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। मैं स्वयं इनके चिकित्साधीन थी तथा आश्रम के बहुत से लोग इनसे चिकित्सा करवा चुके हैं।

माँ चुपचाप पड़ी हुई हैं। दो बजे के बाद मैं जाकर माँ को उठायी। उस समय तक माँ ने मुँह नहीं धोया था। माँ जाग गयी हैं, समाचार पाकर गोपालदादा, पटल, भइया, कानिया भाई आदि माँ के साथ मुलाकात करने आये। कुछ देर बाद माँ को थोड़ा-सा खिलाई। माँ पुनः चुपचाप सो गयीं।

रात को मौन के बाद हरिबाबाजी और अवधूतजी माँ को देखने के लिए ऊपर आये। अवधूतजी जब माँ के निकट आते हैं तब फर्श पर चुपचाप बैठ जाते हैं। हरिबाबाजी को एक कुर्सी पर माँ के बिछौने के सामने बैठने देती हूँ। माँ लेटी हुई बीच-बीच में उनसे बातें कर रही हैं। लगता है जैसे अपनी बातें जोर से कह रही हैं। हरिबाबाजी बातें करते जा रहे हैं। बातचीत के जरिये वे माँ के भावों में परिवर्तन करने की इच्छा रखते हैं। किन्तु उनके बातचीत के बीच-बीच में न जाने क्यों सुस्त पड़ जाती हैं। लगता है जैसे किसी ओर ख्याल नहीं है। हरिबाबाजी आदि महात्माओं के आने पर किस तरह बातचीत करती हैं और किस तरह का व्यवहार करती हैं, यह सब दृश्य हम सब बराबर देखते चले आ

रहे हैं। किन्तु इस समय हरिबाबाजी बैठे हैं या क्या कर रहे हैं, इस ओर मानो उनका ख्याल ही नहीं है। इस स्थिति में परिवर्तन देखकर लोग और ज्यादा आतंकित हो उठे हैं।

हरिबाबाजी के चले जाने के बाद माँ बहुत देर तक सुस्त भाव से पड़ी रहीं। रात में कई बार हालत कुछ अजीब किस्म की हुई। रात भर हमलोग बहुत बेचैन रहे। हर वक्त माँ की सेवा के लिए दो व्यक्तियों की पारी लगा दी गयी। रात के लिए भी ऐसी व्यवस्था की गयी।

आज एकादशी है और आज ही से झूलन आरम्भ है। इधर माँ के शरीर की यह हालत है, इसलिए किसी के भी मन में किसी प्रकार का आनन्द नहीं है। अगर माँ स्वस्थ रहती तो उन्हें लेकर न जाने कितना उत्सव किया जाता, फिर भी आश्रम के नियमों को रक्षा करने के लिए नीचे बड़े कमरे के पीछे बरामदे पर झूलन सजाया गया है। माँ को जरा सा न देखने पर लोग विशेष दुखित होंगे, इसलिए उन्हें धीरे-धीरे एक कुर्सी पर लाकर शाम के बाद ऊपर वाले बरामदे में बैठाया गया। वहाँ से नीचे के बरामदे में होने वाला झूलन दिखाई दे रहा था। माँ थोड़ी देर के लिए आकर बैठीं। इससे लोगों के मन में कितना आनन्द और कितनी तृप्ति हुई। मानो समस्त उत्सव, समस्त आयोजन और समस्त परिश्रम सार्थक हो गया।

डा० बलरामजी और गोपाल दादा ने माँ की जाँच भलीभाँति की, लेकिन उन्हें किसी भी बीमारी का चिन्ह नहीं मिला। हृदय, फेफड़ा और रक्त का दबाव सब स्वाभाविक था, फिर भी माँ के शरीर की हालत ऐसी क्यों है, उनके चिकित्सा शास्त्र में कहीं उल्लेख नहीं है। बिना रोग पाये चिकित्सा किया भी नहीं जा सकता।

इधर कोई रोग नहीं है और उधर शरीर की यह हालत है, इसका निर्णय करना उनकी बुद्धि के बाहर की बात है। माँ से पूछने पर वे कहती हैं—"यह शरीर हर वक्त अच्छा रहता है जो हो जाता है वही ठीक है।" फिर कभी-कभी कहती हैं—"पिछले आठ महीने से इस शरीर में सोने का भाव नहीं है और कोई शरीर होता तो क्या होता कहना कठिन है पर इस शरीर की तो कोई बात ही नहीं है यह भी एक रूप है।"

७ अगस्त, १९५७

आज ११।। बजे के बाद माँ स्वयं ही उठकर बैठीं। पर किसी से कोई बातचीत नहीं। बिल्कुल पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी हुई हैं। चेहरे का भाव जरा सा अस्वाभाविक है। बहुत से लोग माँ के शरीर की यह हालत देखकर सोचने लगे कि माँ के शरीर में शायद कोई क्रिया चल रही है। किसी-किसी के मन में आशा की यह भावना उत्पन्न हुई कि शायद इसके बाद माँ का शरीर ठीक हो जायगा। भइया तो कह ही उठे—"माताजी ने शायद हमलोगों की प्रार्थना सुन ली हैं, इसलिए इस तरह की क्रिया आरम्भ हुई है। अब माँ जरूर अच्छी हो जायँगी।" बहरहाल प्रायः एक घण्टा तक उसी भाव में बैठे रहने के बाद माँ अपने आप सो गयीं। बाहर से हालत में कोई सुधार ज्ञात नहीं हो सका, पर आनन पर एक असाधारण दिव्य ज्योति थी। जो देखता वही मुग्ध दृष्टि से देखता रह जाता। कहाँ से क्या हो रहा है, उसे समझना हमलोगों की मनुष्य बुद्धि में असम्भव है। माँ स्वयं कृपा करके अगर कुछ बताएँगी तब हम समझ सकते हैं।

तीसरे पहर ४ बजे के बाद माँ को पकड़ कर बैठाया गया, थोड़ा सा खिलाया गया। शाम के समय थोड़ी देर के लिए माँ के

कमरे का दरवाजा खोल दिया गया। सभी आये और दरवाजे के बाहर से प्रणाम कर चले गये। कमरे में ३-४ व्यक्ति से अधिक आना, माँ के साथ बातचीत करना या माँ को स्पर्श करना, इन बातों की डाक्टरों की ओर से मनाही की गयी है।

तीसरे पहर बलरामजी मोटर द्वारा दिल्ली रवाना हो गये। वे यहाँ रहकर करते भी क्या? इन लोगों के चिकित्सा शास्त्र में कुछ मिल भी नहीं रहा है। माँ में खाने-पीने का भाव बिल्कुल नहीं है। माँ ने कहा—"भीतर से मानो सब बन्द हुआ जा रहा है।" सचमुच मुँह के भीतर कुछ डालने पर वह भीतर नहीं जा पाता। शायद वह मुँह के भीतर ही रह जाता है। यह एक असाधारण अवस्था है। कुछ लोग कह रहे हैं कि हार्ट की हालत जानने के लिए इलेक्ट्रो कार्डियोग्राम लेना चाहिए, पर माँ के शरीर पर कभी यह सब नहीं किया गया है। माँ से पूछने पर वे उदास भाव से बोलीं—"ठीक है, तुमलोग अगर जिम्मा ले सकते हो तो लो।" माँ के शरीर का दायित्व ले सके ऐसा साहस किसमें है? यही वजह है कि मैंने विशेषरूप से इस तरह का प्रस्ताव करने के लिए लोगों को मना किया। फिर सभी को विशेष कुछ कहा भी नहीं जा सकता। माँ की यह हालत देखते हुए सभी लोग अपनी-अपनी विद्या बुद्धि के अनुसार चिन्ता कर रहे हैं कि कैसे माँ का शरीर ठीक हो सकता है। इसलिए वे लोग जो कुछ भी कहते हैं, वह सब माँ के प्रति अगाध श्रद्धा का परिचय है। फलस्वरूप उनके कार्य में बाधा देने का भी मुझे अधिकार नहीं है। लोगों को माँ के शरीर के असाधारण स्वरूप की बातें बताते हुए उन्हें शान्त रहने की बात कहना पड़ रहा है। कोई प्रस्ताव पेश कर रहा है—"बम्बई से बड़े डाक्टर को बुलाया जाय।" किसी ने कहा—"दिल्ली से विशेषज्ञ बुला लाऊँ।" सभी लोग माँ के लिए उद्विग्न हैं। साधारण शरीर होने

पर इस स्थिति में कब क्या हो जाता यह बताना कठिन है। माँ का शरीर है इसलिए माँ अगर इच्छा करें तो वे पुनः स्वस्थ हो सकती हैं। ऐसा विश्वास हम सब के मन में है, इसलिए ऐसी हालत में हम सब कुछ निर्वाह करते चले जा रहे हैं, फिर जब माँ की हालत ज्यादा खराब हो जाती है तब हमारे मन की दशा कैसी हो जाती है, यह अनुमान करने लायक है। सभी के चेहरे पर मानो विषाद की एक छाया थी।

पिछली रात को माँ मुझे बुलाकर कहने लगीं--"देखा जा रहा है एक आदमी पैरों के पास खड़ा होकर कह रहा है कि डाक्टरी चिकित्सा में कुछ नहीं मिलेगा।" इसका वास्तविक अर्थ क्या है समझ नहीं सकी, पर इधर कुछ दिनों से माँ के मुख से किसी प्रकार की आशा की वाणी सुनने में नहीं आयी है, इसलिए हम सब और भी विचलित हो उठे हैं।

आज शाम के बाद से माँ की हालत और खराब हो गयी। बीच-बीच में हाथ-पैर बिल्कुल बर्फ की तरह ठंडा और कड़ा हो जा रहा है। तकिए के ऊपर सिर भी नहीं है। बिल्कुल शवासन की तरह सोयी हुई हैं। सम्पूर्ण श्वास फेंकने के पहले ही पुनः श्वास ग्रहण कर रही हैं। श्वास की गति ऊर्ध्व की ओर है। फिर जब गति नीचे को जाती है तब बिल्कुल नीचे की ओर जाती है। नाड़ी की गति कभी ११०–११५, और फिर कभी इतनी धीरे चलती है कि नाड़ी का पता ही नहीं चलता। पेट में वायु भी पर्याप्त है, सम्भवतः इसी-लिए हार्ट के ऊपर दबाव पड़ रहा है।

नित्य की भाँति आज रात को हरिबाबाजी माँ के निकट आकर बैठे, पर माँ में मानो कोई ख्याल ही नहीं था, कुछ लोग सोच रहे हैं कि यह भी शायद समाधि की एक अवस्था है, किन्तु माँ की

भावास्थाओं को देखने का मुझे अनेक बार अवसर मिला है। किसी ओर जैसे कुछ रुकने वाला नहीं है। अक्सर कहती हैं—"जब जो कुछ भी हो सकता है। इस शरीर की बात ही है जो हो जाय।"

हरिबाबाजी के चले जाने के बाद एकान्त में अवधूतजी ने माँ से अनेक प्रार्थना की। उनके मन में यह संकल्प उत्पन्न हुआ कि आगामी कल संध्या से प्रातः काल तक समस्त रात्रि माँ के कमरे में बैठकर किसी को शिव या शक्ति का जप करना चाहिए। इसके अलावा उन्होंने यह भी बताया कि जितना जल्दी हो सके कोई यहाँ से काशी चला जाय और शंकर भारती के निकट माँ की इस हालत का वर्णन विस्तार के साथ बता दे। वे माँ की स्वस्थता के लिए किसी प्रकार का अनुष्ठानादि करने का निर्देश देते हैं या नहीं यह पता लगाया जाय।

श्री शंकर भारतीजी काशी के एक उच्चावस्था प्राप्त महा-पण्डित संन्यासी हैं। आप काशी के ललिता घाट स्थित एक आश्रम में रहते हुए एकान्त में साधन-भजन करते हैं। घर से शायद ही कभी बाहर निकलते हैं। बाहरी लोगों से बातचीत भी नहीं करते। पिछले कई वर्षों से माँ के निर्देशानुसार आश्रम से उनके लिए नियमित रूप से खाद्य वस्तु भेजी जा रही है। भारतीजी के साथ एक ब्रह्मचारी रहते हैं। वे ही खाने-पीने की व्यवस्था करते हैं। उक्त आश्रम की गुफा के भीतर एक देवी मूर्ति प्रतिष्ठिता हैं। भारतीजी के निकट देवी मूर्ति प्रायः आविर्भूता होती हैं। आप उनसे बराबर आदेश प्राप्त करते हैं। एक बार आप देवी के निर्देश पर किसी के निकट माँ के सम्बन्ध में बिना समाचार प्राप्त किये, अकेले पैदल माँ का दर्शन करने के लिए आश्रम में चले आये थे। भारतीजी के सम्बन्ध में अनेक अलौकिक बातें सुनने में आती हैं।

अवधूतजी का यह विश्वास है कि भले ही भारतीजी इतनी दूर हैं, फिर भी वे वहाँ से माँ के शरीर की प्रकृत अवस्था सम्यक् रूप से समझने में सक्षम होंगे। अगर वे इस समय कुछ निर्देश दे सकें तो हम सबको शान्ति प्राप्त होगी। इसके अलावा भारतीजी देवी के निकट से कुछ आदेश भी पा सकते हैं। पिछले वर्ष जयन्ती उत्सव के समय माँ के सम्बन्ध में भारतीजी को देवीजी ने कुछ कहा था, किन्तु अभी वह समय नहीं आया है, इसलिए हम सब वह बात नहीं जान पाये हैं।

आज रात को अचानक माँ पूछ बैठीं—"क्या भागवत पाठ समाप्त हो गया ?" परमानन्दजी पास ही थे। उन्होंने कहा कि आज तीसरे पहर श्रीमद्भागवत की जो व्याख्या १४ दिन पहले प्रारम्भ हुई थी, वह सम्पूर्ण हो गयी। कुछ देर बाद माँ ने पुनः पूछा—"भागवत में परीक्षित के गति के बारे में क्या कहा ?" इतना कहने के बाद आगे कुछ नहीं बोलीं। स्वामीजी भी सही मतलब नहीं समझ सके।

८ अगस्त, १९५७

पिछली रात को माँ की तबीयत कई बार खराब हो गई थी। श्वास की गति और नाड़ी की अवस्था चिन्ताजनक हो गयी थी।

आज सवेरे हरिबाबाजी आदि माँ से मिलने के लिए आ रहे हैं; सुनकर ११॥ बजे माँ को जगायी। हरिबाबाजी और अवधूतजी माँ के सामने आकर बैठे। माँ निश्चल होकर जैसे नशे की हालत में, बिछौने पर चित्त लेटी हुई थीं। उनके सिर के नीचे तकिया नहीं था।

अवधूतजी वृन्दावन जाकर माँ के लिए कोई अनुष्ठान करायेंगे, इसलिए आज रात को वे वृन्दावन रवाना हो जायँगे। हरिबाबाजी भी आज वापस जाने वाले थे, किन्तु माँ की यह हालत देखते हुए वे दो-तीन दिन और रुक जाने को तैयार हो गये।

हरिबाबाजी से माँ धीरे-धीरे कहने लगीं—"पिताजी, कल रात को इस तरह का एक समाचार मिला कि कुछ साधु इस शरीर के निकट आयेंगे, किन्तु शरीर का भाव ऐसा है कि वे आयेंगे, आयें। उनके लिए मानों उस तरह का कोई ख्याल ही नहीं है। देखा गया तैलंग स्वामीजी (इस शरीर ने उन्हें कभी देखा नहीं है) सम्पूर्ण उलंग शरीर, सिर पर छोटे-छोटे बाल, छोटी-छोटी दाढ़ी, बड़ी तोंद लिए इस शरीर के सामने आकर बैठे। कुछ देर बाद दोनों हाथों के सहारे जमीन पर टेकते हुए उठे और वहीं गायब हो गये। उनके साथ ८–९ सूक्ष्म शरीरधारी भी थे। इनमें परीक्षित नामक एक था। ये भागवत वाले परीक्षित थे या नहीं, यह नहीं पूछा गया। वे लोग आपस में सटकर इस शरीर के सामने आकर बैठे। इसी समय बुनी कमरे के भीतर आ रही थी। उससे मैंने कहा—'तू जाकर सो जा।' बुनी के कमरे में आने पर साधुओं के शरीर से छुआछूत हो जाती, इसी तरह की बात थी।" साधुओं का दल माँ को परिक्रमा कर अन्तर्ध्यान हो गया।

बुनी भी कह उठी कि कल रात को वह दो-तीन बार माँ के कमरे में आना चाह रही थी, किन्तु माँ प्रत्येक बार उसे घर से बाहर चले जाने के लिए इंगित करती रहीं। अन्य लड़कियों को भी वे हटा चुकी थीं। बुनी ने दरवाजे के बाहर से देखा—माँ स्वयं मसहरी के भीतर बिछौने पर उठकर बैठीं। उनमें एक अनजाना भाव था। चूंकि माँ ने आने को मना किया है, इसलिए वह भीतर जाकर कुछ पूछने का साहस न कर सकी। अब समझ में आया

कि उस समय साधु-महात्मा सूक्ष्म शरीर में माँ के निकट आये थे। माँ की बातचीत से समझ सकी कि उन साधुओं के मन का भाव यह था कि माँ का शरीर स्वस्थ हो जाय। जब कि माँ अपने बारे में साफ-साफ कुछ नहीं कहतीं।

शाम को अवधूतजी बैठे थे। वे आज की रात को गाड़ी से वृन्दावन चले जा रहे हैं। साथ में स्वरूप भी चला जा रहा है।

माँ वातचीत के सिलेसिले में अवधूतजी से कहने लगीं—"कल देख रही थी कि अवधूत पिताजो और हरिबाबाजी इस शरीर के निकट आये हैं। (कहना न होगा कि सभी सूक्ष्म थे)। अवधूत पिताजो कभी भी इस शरीर के साथ नहीं बैठते, किन्तु उस समय आकर चौकी के किनारे बैठे। उनके मनमें एक तीव्र संकल्प था कि माँ का शरीर अच्छा करूँगा हो। यह भाव लेकर उन्होंने इस शरीर के हाथ के नाखून के भीतर से कुछ निकाल लेने का प्रयत्न किया। उसी समय किसी ने कहा कि कुछ रह जा सकता है; किन्तु अवधूत पिताजो का भाव ऐसा था—'नहीं, इस शरीर को स्वस्थ करूँगा ही। कुछ देर बाद हरिबाबा को देखा गया, वे गम्भीर भाव से न जाने क्या चिन्ता कर रहे थे। उनमें यही भाव था कि जैसे इस शरीर को स्वस्थ बना डालें।"

अवधूतजी ने माँ की बातें सुनने के बाद किंचित् मुस्कराते हुए कहा—"हाँ, कल सारी रात सचमुच मेरे दिमाग में एक ही बात चक्कर काट रही थो कि कैसे माँ को स्वस्थ बनाया जाय।" माँ ने भी इसो भाव को देखा है। इन सभी बातों को सुनने के बाद लोगों को प्रसन्नता हुई। महात्माओं की तीव्र इच्छा होने पर माँ का शरीर जल्द स्वस्थ हो जायगा।

हरिबाबाजी कल रात को माँ के निकट आकर हाथ जोड़कर

प्रार्थना करते रहे—"माताजी, आप यह संकल्प करें कि हरिबाबा के उद्धार के लिए शरीर स्वस्थ करना होगा।" सचमुच महात्माओं के भाव कितने सुन्दर हैं, कितने पवित्र हैं। और कुछ भले ही न हो अपने उद्धार की बात कहकर माँ के ख्याल को स्वस्थ होने की ओर घुमा दिया जाय।

माँ इस बात पर बोलीं—"इस शरीर का तो कोई बन्धन नहीं है। यह नहीं किया गया। यह करना होगा। इस शरीर में यह सब बात नहीं है। तुम सब जानते हो कि इस शरीर में इस तरह के कोई भाव नहीं हैं कि किसी आशा में बैठे रहो, जो हो जाय—वही ठीक है। यह शरीर कोई संकल्प करने नहीं आया है।"

९ अगस्त, १९५७

आज सवेरे ८॥ बजे भइया और कानिया भाई मोटर से दिल्ली रवाना हो गये। वहाँ से आज ही तीसरे पहर हवाई जहाज से बम्बई रवाना हो जायंगे। माँ कल कह चुकी हैं कि जाते समय वे लोग माँ से मिलकर जाँय। वे लोग प्रणाम करने के बाद चले गये। माँ दो-एक बात कहने के बाद पुनः चुपचाप सो गयीं।

११॥ बजे के बाद हरिबाबाजी आदि माँ के निकट आकर बैठे। इधर कई दिनों से मैं देख रही हूँ कि माँ जब करवट सोती हैं तब श्वास की गति खराब हो जाती है, चित्त सोने पर कुछ ठीक रहती हैं।

माँ भी इस प्रसंग में कह रही हैं—"यह शरीर जब आड़े भाव में रहता है तब मानो शरीर के श्वास की गति ठीक से नहीं चलती। दूसरे ढंग की हो जाती है, इसीलिए प्रायः अपने से ही सर तकिए

से नीचे उतर जाता है और शरीर में शवासन की तरह अकड़न हो जाती है। यह सब मानो अपने आप हो जाता है। यह भी एक अच्छा तमाशा है। यह शरीर बराबर देख रहा है कि शरीर के प्रत्येक शिराओं में क्या-क्या हो रहा है। यह शरीर देखना और क्रियाएँ सब एक ही है। पहले मानो मेरुदण्ड की बाँयी ओर कोई क्रिया चलती है। पुनः कुछ देर के बाद देखा गया कि दाँयी ओर भी उसी तरह क्रिया हो रही है। इसके बाद (अपने हाथ से दिखाती हुई) मेरुदण्ड के अन्त से प्रारम्भ कर ऊपर तक चौड़े स्थान को घेरते हुए उसी तरह की क्रिया हो रही है। यह जो क्रिया है, उसमें कभी-कभी शरीर मानो टक-टक कर कुछ चाह रहा है, बातें कर रहा है, हँस रहा है। यह लेकिन स्पंदन की क्रिया है; फिर इसी गति में ही शरीर कभी बिलकुल निस्तेज हो जाता है भीतर से मानो बन्द।"

हमलोग यह बराबर देखते हैं कि अक्सर माँ मानो बिलकुल पत्थर की तरह स्थिर हो जाती हैं। श्वास चल रही है या नहीं, समझ में नहीं आता। मुँह में कुछ डालने पर जैसे वह भीतर नहीं जा पाता।

पुनः कुछ देर के बाद कहने लगीं--"आठ महीना पहले सिर के भीतर जो शब्द होना प्रारम्भ हुआ तभी से श्वास की गति न जाने कैसी हो गयी। सोने का कोई भाव नहीं है। स्वाभाविक अवस्था में इस शरीर को एक आसन की तरह विश्राम मिलता। लेकिन वह बात इधर कई महीनों से बिलकुल नहीं है। बड़ा चमत्कार है। देखा गया शरीर शायद चुपचाप है, ठीक उसी समय श्वास नीचे की ओर जाते हुए ऊपर की ओर मानो धक्के दिये। तुरत शरीर का हाथ जरा सा खड़ा हुआ या सर हिल गया मानो नाभि से श्वास उठ रहा है। नाभि के नीचे की क्रियाएँ मानो बन्द हैं। जैसे

तुम लोग कहते हो कि नाभि छूट गया है उसी तरह और क्या। अगर यह हालत औरों की होती तो क्या होता, समझ सकते हो। आज कुछ ऐसा है कि शरीर के श्वास की ओर या भीतर की ओर देखने सुनने का ख्याल नहीं है। बदन कड़ा करके सोने पर श्वास की गति कुछ अच्छी रहती है, पर तकिया हटाने का ख्याल नहीं होता बीच-बीच में मानो बेख्याल हो जाता है।

पिछले दिसम्बर मास से माँ का शरीर खूब खराब है। उसके बाद भी जैसा होता है, उसी तरह आना-जाना, चलना-फिरना, प्रोग्राम में भाग लेना सब होता जा रहा है। माँ के शरीर को आज तक विश्राम ही नहीं मिला। बहुत दिनों से माँ कहती आ रही हैं—"इस समय तो सब हुआ जा रहा है, पर कब शरीर को क्या हो जाय कहना मुश्किल है।" इसलिए आज हम यह हालत देख रहे हैं।

दोपहर के बाद माँ चुपचाप सोयी हुई थीं। हमलोग समझ रहे थे कि माँ विश्राम कर रही हैं। तीसरे पहर चार बजे के बाद माँ उठीं और कुछ खायीं। खाने के बाद बिछौने पर आकर बैठीं। उनमें कुछ चटपट भाव देखने में आया।

बात-बात पर माँ कहने लगीं—"यह शरीर अब तक करवट लेटा हुआ था। तुमलोग सोच रहे थे कि शरीर आराम से सोया हुआ है, किन्तु इस हालत में भी कभी-कभी ऐसा हो रहा था कि नाभि की क्रिया बिलकुल बन्द। मानो कुछ भी नहीं है। श्वास की गति ऐसी जैसे तुमलोगों की दृष्टि में कुछ भी हो सकता है। इस शरीर के निकट सभी हालत बराबर हैं। कभी सोया हुआ है, कभी बैठा हुआ है, किन्तु उसी हालत में किसी भी क्षण कुछ भी हो सकता है, फिर मजे की बात यह देखो कि इस शरीर के निकट

यह सब तमाशा है। दो-एक बार ऐसा भी हुआ कि इस तरह का ख्याल आता था—जो हो रहा है होने दो पर तभी जो कुछ होता हो जाता। लेकिन ख्याल नहीं, हुआ, इस शरीर का तो जो हो जाय। इन्हीं दोनों भावों के बीच यह शरीर रह गया। जिस मुहूर्त में जिधर ख्याल हुआ, वही हो सकता है।"

माँ ने अपनी बातें इस ढंग से कहीं कि हमलोगों में आतंक और भी वढ़ जाय। हम अपने मन में यह विश्वास बनाये रखने का प्रयत्न कर रहे हैं कि माँ कृपा करके शरीर को स्वस्थ रखेंगी। दूसरी ओर माँ के मुँह से इस तरह की भयंकर स्थिति का वर्णन सुनने पर हम घवड़ा उठते हैं। हम कितने आतंकित रूप से दिन गुजार रहे हैं, यह कैसे समझायें।

आज सवेरे हरिबाबाजी के आग्रह पर दीनबन्धु को हरिद्वार भेजकर पण्डित सुन्दरलालजी को ले आया गया। आज सवेरे सत्संग के बाद हरिबाबाजी जब आये थे तब उन्होंने माँ के निकट स्वस्थ हो जाने के लिए प्रार्थना की थी। कह रहे थे—"माताजी, मेरे निजी संकल्प से भी बहुत से लोग प्रायः अच्छे हो गये हैं। आप तो हमसे बहुत-बहुत ऊँची हैं, इसलिए आपके ऊपर मेरा संकल्प नहीं चल सकता। आप स्वयं हमारे ऊपर कृपा करें।"

शाम के समय माँ के कमरे का दरवाजा खोल दिया गया। एक-एक कर लोग प्रणाम कर चले गये। फ्रांसीसी डा० विजयानन्द

माँ के लिए लोगों का गम्भीर आकर्षण

को देखते ही माँ ने पूछा—"क्या हाल है?" विजयानन्द ने सर हिलाते हुए कहा—"ठीक नहीं है।" माँ के पुनः पूछने पर उसने माँ को बताया कि जब माँ का शरीर इस तरह खराब है तब उसकी हालत कैसे ठीक रह सकती है। यह कहने के बाद वह माँ के कमरे में गया और माँ की चौकी के

ऊपर सिर रखते हुए बच्चों की तरह रोने लगा। माँ से उसने कहा—"माँ, मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब तक माँ आपका शरीर स्वस्थ न हो जाय तब तक मैं पानी तक ग्रहण नहीं करूँगा।" माँ उसे बहुत समझाती रहीं। बार-बार कहने लगीं—"ऐसा नहीं करना चाहिए। इस शरीर के लिए इस तरह का कोई संकल्प नहीं करना चाहिए। मन लगाकर जप-ध्यान करो। तुम्हारी बातें इस शरीर ने सुन लिया अब इस शरीर की बातें तुम सुनो।" विजयानन्द रोते-रोते बाहर चला गया। उसकी यह हालत देखकर बहुत से लोगों की आँखें छलछला आयीं। माँ के लिए लोगों में कितना तीव्र आकर्षण है।

कल झूलन उत्सव है। हरिबाबाजी के आग्रह पर उदयास्त कीर्त्तन की व्यवस्था हो रही है। दिल्ली के भक्त बड़े सुन्दर ढंग से कीर्त्तन करते हैं। हरिबाबाजी ने इनकी चर्चा की थी, इसीलिए इसी बीच आदमी को दिल्ली रवाना कर दिया गया था ताकि वहाँ से कुछ लोग आकर कल सवेरे से कीर्त्तन में भाग लेना प्रारम्भ कर दें। मौन के बाद स्थानीय भक्तों ने कीर्त्तन शुरू किया। रात भर कीर्त्तन होता रहेगा।

रात को डा० सोम माँ को देखने आये थे। उन्होंने देखा कि रक्तचाप स्वाभाविक है। नाड़ी की गति कभी ११० तो कभी ८०, कभी-कभी बिलकुल कम, यहाँ तक कि पता ही नहीं चलता। माँ चुपचाप लेटी हुई यह सब देख रही थीं। माँ के हाथ को जब डा० सोम ने धीरे-धीरे रख दिया तब माँ धीरे-धीरे नाड़ी की गति कब कैसी चल रही है, यह सब बताने लगीं। डाक्टर अवाक् होकर माँ की ओर देखता रहा। उन्होंने तो माँ को कुछ बताया नहीं, फिर माँ अपने आप सब कैसे जान गयीं। उठते हुए वे बोले—"सब माँ का खेल है। अब माँ की जाँच करने के लिए मैं कोई औजार नहीं

लाऊँगा। सब बेकार है। माँ की जाँच करने से कोई फायदा नहीं। यह सब केवल हमारे मन की शान्ति के लिए है।"

आज रात को सोने के समय माँ ने लड़कियों से कहा कि कमरा खाली कर दो और बगल के कमरे में जाकर सो जाओ। समझ गयीं कि आज भी शायद कोई सूक्ष्म शरीरधारी आयेगा। यों आजकल माँ अकेले रहना पसन्द करती हैं। शरीर अस्वस्थ होने के पहले माँ स्वयं भीतर से दरवाजा बन्द करके सोती रहीं। बाद में हमलोगों ने प्रार्थना की कि माँ की जब ऐसी हालत है तो दरवाजा खुला रहे। भीतर किसी को आने नहीं देतीं तो क्या हुआ दरवाजे के बाहर कोई बैठा रहेगा तो वह जान सकेगा कि माँ कब कैसी रहती हैं और क्या करती हैं। आजकल माँ अत्यन्त दुर्बल लगती हैं। शरीर में जैसे ताकत नहीं रही। दो-तीन व्यक्ति मिलकर माँ को बिछौने पर बैठाते हैं। जब माँ बाथरूम में जाती हैं तब एक आदमी उनके साथ जाता है।

शाम के समय हरिद्वार से सप्तर्षि आश्रम के श्री गणेशदत्त जी माँ को देखने आये थे। उन्होंने आकर माँ के पैरों के निकट प्रणाम किया। माँ तनाव की स्थिति में पड़ी रहीं। कोई विशेष ख्याल नहीं किया। कुछ देर तक खड़े रहने के बाद वे धीरे-धीरे बाहर चले आये।

१० अगस्त, १९५७, झूलन पूर्णिमा

आज झूलन पूर्णिमा है। सवेरे से ही उदयास्त कीर्त्तन आरम्भ हो गया है। दिल्ली से खास कोई नहीं आया। केवल कानू और लाहिड़ीजी आकर कीर्त्तन में भाग ले रहे हैं। हरिबाबाजी भी बीच-बीच में आकर कीर्त्तन में भाग ले रहे हैं।

१२ बजे के लगभग हरिबाबाजी माँ को देखने आये। माँ उठकर बैठ गयी हैं। पण्डित सुन्दरलाल साथ हैं। वे तरह-तरह की बातों के द्वारा माँ से बातें करवाने का प्रयत्न कर रहे हैं। बात-बात पर पण्डित जी ने कहा—"माताजी तो समाधि में डूबी हुई हैं।" माँ धीरे-धीरे बोलीं—"इस शरीर को समाधि लक्ष्य करके जाना नहीं है। जाना-आना कहाँ पिताजी?" समाधि का आसन, समाधि का भाव, उस ओर लक्ष्य भी नहीं, उधर स्थिति भी नहीं। इस शरीर के निकट चलना, हिलना, बैठना, बातचीत करना भी वही है। यह भी ठीक वैसा ही है।"

प्रश्नोत्तर में श्री श्री माँ का किंचित् आभास देना

हरिबाबाजी ने बातचीत के सिलसिले में कहा—"दिल्ली में मैं जिन दिनों अस्वस्थ होकर अस्पताल में भर्ती था, उस समय माताजी मुझे आश्रम ले गयीं। वहाँ से जाने के दिन माताजी से मुलाकात करने के बाद जब गाड़ी में बैठने जा रहा था, ठीक इसी समय माताजी ने मुझे पुनः बुला भेजा। मुझे अपनी चौकी पर बैठाकर मेरी पीठ पर हाथ रखती हुई उठाकर बोलीं—'अब चलो पिताजी।' उस समय मैं माँ के निकट छोटे शिशु की तरह खड़ा था।"

बातचीत के सिलसिले में हरिबाबाजी के सम्बन्ध में कई बातें

माँ इस प्रसंग पर बोलीं—"हाँ पिताजी, कैसा तमाशा। इसके दो साल पहले एक समय देखा गया था कि पिताजी इस शरीर के बाएँ अंग में मानो चिपके हुए हैं भाव शिशु की तरह था। इस शरीर ने कहा—'जाओ पिताजी पेशाब कर आओ।' कुछ लोग कह सकते हैं कि अचानक पेशाब करने की बात कहाँ से आयी? बाद में देखा गया कि पिताजी को पेशाब की बीमारी हुई। समाचार आया कि पिताजी होशियारपुर में बड़े कष्ट में हैं। उस समय

यह शरीर मानो सूखे हुए पत्ते की तरह उड़कर पिताजी के निकट पहुँचा। अगर उस समय यह शरीर पिताजी के निकट न पहुँचता तो न जाने क्या होता ठीक नहीं, जल्दी से सारी व्यवस्था हो गयी। दिल्ली ले आना, सन्तोष सेन के द्वारा अस्पताल में रखवाकर ऑपरेशन का इन्तजाम करवाना, सब कुछ फिर आश्चर्य की बात यह है। ऑपरेशन के ठीक एक दिन आगे इस शरीर ने देखा कि पिताजी के गुरुदेव आकर पिताजी के पास खड़े हुए। चेहरा विलकुल साफ-साफ देखा गया। इशारे के द्वारा इन्होंने इस शरीर की ओर ऐसा भाव प्रकट किया—'इस शरीर का संरक्षण करना।' बाद में इस घटना का वर्णन मनोहर आदि कई जनों से चुपचाप किया गया। उसके साथ ही साथ पिताजी के लिए अखण्ड जप शुरू करने के लिए कहा गया पर हर समय सभी बातें इस शरीर को नहीं आतीं। जबान पर आया था—पेशाब कर आओ। बाद में इतनी घटनाएँ होकर पेशाब की वह क्रिया सरल हो गयी।"

हरिबाबाजी ने माँ की ओर देखते हुए कहाँ—"मैंने भी ऑपरेशन के दिन देखा कि छोटे बच्चे की तरह माँ की गोद से चिपका हुआ हूँ। अनेक देव-देवी मूर्ति हाथ में योगिया रंग की पताकाएँ तथा योगिया रंग के कपड़े पहनकर एक साथ माँ की प्रदक्षिणा कर रहे हैं।"

माँ जरा हँसती हुई बोलीं—देखो किसके साथ किसका योगा-योग रहता है। वह कहा नहीं जा सकता। एक बार देखा गया कि इस ऑपरेशन के आगे अखण्डानन्द स्वामी (वृन्दावन के) और माखन का छोटा लड़का दोनों किसी चीज के ऊपर उठकर रवाना हो रहे हैं। इस शरीर को ख्याल हुआ कि दृष्टि के बाहर जाने पर फिर वापस नहीं लौटेगा। आश्चर्य की बात है कि अखण्डानन्द पिताजी की ओर ख्याल गया किन्तु बच्चे की ओर ख्याल नहीं

गया। यह शरीर माथा टेककर देखता रहा कि अंत तक दिखायी देता है या नहीं। शरीर की दृष्टि में रह गया तो आगे नहीं जा सकता। एक ऐसे चक्कर में चला गया जहाँ से अच्छी तरह दिखायी नहीं दे रहा था। फिर भी शरीर को ख्याल हुआ कि अखण्डानन्द पिताजी को देखना ही होगा। जब देखा गया तब ख्याल हुआ कि उनका अब कुछ नहीं होगा।"

कुछ देर ठहरने के बाद पुनः कहने लगीं—"कुछ देर बाद जब पिताजी का नर्सिंग होम में ऑपरेशन हुआ तब यह शरीर एक वक्त के लिए वृन्दावन गया था। उस समय पिताजी को देखने के लिए अखण्डानन्द पिताजी इस शरीर के साथ ही मोटर द्वारा वृन्दावन से दिल्ली आये थे। नर्सिंग होम में सीधे जाकर पिताजी को देखने के बाद अखण्डानन्द पिताजी भी डा० जे० के० सेन के यहाँ आये और यहीं खाना-पीना किया। यह शरीर भी उस समय वहीं था। दीदी भी वहीं थी। बिपिन को खबर भेजी गयी थी कि वह रात को आकर अपने पिताजी को घर ले जायगा। लेकिन बिपिन को आने में देर होते देख पिताजी के रहने का वहीं इंतजाम कर दिया गया। पिताजी सोये हुए थे, ठीक इसी समय विपिन आकर उन्हें ले गया। पिताजी का रहना नहीं हो सका।"

पण्डितजी कह उठे—"मैं भी वहीं था। माँ का दैवी भाव मुझे अच्छा नहीं लगता, किन्तु माँ की रीति-नीति स्वभाव मर्यादा के निकट मेरा सर झुक जाता है। उस समय अखण्डानन्द के लिए माँ स्वयं खड़ी होकर जिस तरह सारी व्यवस्था कर रही थीं, वह देखने पर भी विश्वास नहीं होता।"

माँ हँसती हुई बोलीं—"पिताजी, ऐसा नहीं कहना चाहिए। बच्ची को कुछ भी नहीं आता।"

माँ की बात पूरी होने के पहले ही वे पुनः बोल उठे—"माता-जी, यह सब बात मैं नहीं सुनना चाहता। यह सब तुम्हारी चालाकी है।"

माँ कुछ देर बाद पुनः पहले की बातों की चर्चा करती हुई कहने लगीं—"इसके बाद जब पिताजी के आश्रम में अखण्डानन्द जी ने भागवत पाठ शुरू किया उस समय यह शरीर वृन्दावन में था। पिताजी ने पहले भागवत पुस्तक इस शरीर के पास भेजवा दी थी। इसके बाद भागवत आश्रम से प्रसेसन् करते हुए पिता-जी के आश्रम में ले जाया गया। मोटर में ले जाया जा रहा था, उसी के साथ अखण्डानन्द पिताजी एवं यह शरीर भी था। रास्ते में चलते-चलते इस शरीर ने अखण्डानन्द पिताजी को आगे की सारी बातें बतायीं। पहले उन्हें यह सब बातें नहीं बतायी गयी थीं, किन्तु मोटर के भीतर सारी बातें कहने का मौका नहीं मिल सका। पिताजी ने भी शायद सारी बातों पर ध्यान नहीं दिया। बात वहीं तक रह गयी।"

यह सब बातें करते रहने के कारण आज कुछ देर हो गयी। हरिबाबाजी १॥ बजे के लगभग चले गये। माँ को आज दोपहर को ही खिला-पिला दिया गया। भोजन के बाद माँ बिछौने पर लेटी हुई कह रही थीं—"गोपी पिताजी दिखायी दे रहे थे। यह शरीर एक तत्त्व कथा कह रहा है। पिताजी भी कह रहे हैं। पिता-जी ने मानो एक कागज माँगा। बुनी ने एक टुकड़ा कागज लाकर पिताजी के हाथ में दिया। पिताजी मानो उसमें समस्त तत्त्व कथा लिखने लगे। उसने एक तस्वीर का रूप ले लिया यह देखकर शरीर ने कहा—'पिताजी, तुम तस्वीर बनाने की कला जानते हो?' पिताजी ने क़लम के द्वारा चित्र में आँखें बना दीं। बाद में पिताजी ने पुनः कागज माँगा। बुनी ने कागज का एक छोटा

टुकड़ा दिया। पिताजी ने पुनः आँकन शुरू किया पर इस बार सम्पूर्ण मूर्ति नहीं बना सके नम्बर देकर समझने का प्रयत्न करते रहे।" इतना कहकर माँ चुप हो गयीं। शाम को नीचे के बड़े कमरे में लड़कियाँ झूलन सजायी थीं। उनके आग्रह पर माँ बरामदे में आकर बैठीं। इसी से सबलोग प्रसन्न हो उठे।

११ अगस्त, १९५७

आज सवेरे से रामायण का नवाह् शुरू किया गया है। कान्ति भाई, भारद्वाज तथा उदास पाठ कर रहे हैं।

सवेरे सत्संग समाप्त होने के वाद हरिबाबाजी नित्य की भाँति माँ के पास बैठकर देर तक वातचीत करते रहे। उनकी इच्छा है कि माँ यहाँ से दूसरी जगह कहीं जाकर कुछ दिन विश्राम करें। रायपुर, वृन्दावन, काशी, विन्ध्याचल आदि स्थानों की चर्चा हुई। उनके जाने के बाद माँ का मुँह धुला दिया गया। आज भी हम-लोगों के अनुरोध करने पर माँ ने दोपहर को ही भोजन किया। माँ का संवाद पाकर सवेरे दिल्ली से श्री वर्मा जी आए हैं। वे रात को वापस जा रहे हैं। दिल्ली के कानू और लाहिड़ीजी आज रवाना हो जायँगे।

शाम के समय डा० गोपालदास गुप्त और पटल काशी रवाना हो गये। लखनऊ से इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट के सेक्रेटरी श्री पाल आये थे। वे भी आज पटल के साथ रवाना हो रहे हैं। गोपाल दादा के कई लेख एवं कविताएँ आज माँ को सुनाया गया। उनके भाव बहुत सुन्दर थे।

हरिबावाजी भी कल भोर के समय रवाना हो जायँगे। वे रात के समय माँ से मुलाकात कर गये। दोनों हाथ जोड़ते हुए वे

माँ के निकट प्रार्थना करते हुए बार-बार जताते रहे—"माँ शरीर को जल्दी अच्छा कीजिए।" एक बार वृन्दावन आने के लिए वे माँ से अनुरोध कर गये। आनन्द ब्रह्मचारी उनके आश्रम में बहुत दिनों से हैं। उन पर कृपा करने के लिए माँ को एक बार वृन्दावन जाने के लिए कह गये।

इसी बीच यह चर्चा चली थी कि माँ यहाँ से २० तारीख को वृन्दावन जायँगी और वहाँ तीन-चार दिन रहने के बाद काशी जायँगी, किन्तु माँ के शरीर की यह हालत देखते हुए उनके वृन्दावन जाने के सम्बन्ध में हमलोगों में किसी का मन नहीं है। यहाँ कुछ दिन आराम करने के बाद माँ को अपने ख्याल के अनुसार कहीं भी जाने पर अच्छा होगा। काशी में वार्षिक भागवत-जयन्ती पहली सितम्बर को प्रारम्भ होगी। वहाँ उपस्थित रहने के लिए हरिबाबाजी से विशेष अनुरोध किया गया।

१२ अगस्त, १९६७

माँ की अस्वस्थता का समाचार पाकर काशी से प्रसिद्ध डा० नाथ सपत्नीक माँ को देखने के लिए आज सवेरे आये। काशी में आप कितने कर्म व्यस्त रहते हैं, यह दृश्य माँ की अस्वस्थता के हम देख चुके हैं, इतना होते हुए भी आप समाचार से आकुलता माँ को देखने के लिए इतनी दूर से आये हैं, यह वास्तव में उनकी अटूट श्रद्धा और भक्ति का परिचायक है। माँ के कान की जाँच करने के लिए अपने साथ आवश्यक औजार भी ले आये हैं।

आज माँ का खाना-पीना ३ बजे के बाद हुआ। इसके बाद माँ का दर्शन करने के लिए दरवाजा खोल दिया गया।

तीसरे पहर डा० नाथ ने माँ के कानों की जाँच की। कान और सिर में पहले की तरह अभी तक थोड़ी-थोड़ी आवाज होती है, पर वैसी प्रबलता नहीं है। जाँच करने के बाद डाक्टर ने कहा कि स्थिति अच्छी है।

१३ अगस्त, १९६७

पिछले ९ ता० को तीसरे पहर कुसुम को काशी में श्री शंकर भारतीजी के निकट भेजा गया था। वह आज वापस लौटा है। उसके साथ काशी से पंडित गोपीनाथ कविराजजी भी ३-४ दिन के लिए माँ को देखने यहाँ आये हैं। माँ की अस्वस्थता का समाचार पाकर वे विशेष उद्विग्न हो उठे हैं।

कुसुम की जबानी श्रीशंकर भारतीजी की बातें सुनने में आयीं। भारतोजी काशी के बाहर कहीं नहीं जाते, इसलिए जब
उनसे चलने के लिए कहा गया तब उन्होंने
श्री श्री माँ के सम्बन्ध में कहा कि मेरे लिए जाना असम्भव है और
श्री शंकर भारतीजी की इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है।
उक्ति उन्होंने कहा है कि माँ के इस भाव की जो
हालत है, वह उनकी (माँ की) लीला
मात्र है। परेशान या शंकित होने की आवश्यकता नहीं है। बार-बार उन्होंने कहा है कि घबड़ाने की कोई बात नहीं है। उन्होंने यह भी कहा है—"देवी इस अकिंचन को भी कभी-कभी दर्शन देती हैं। माँ के शरीर से जगत् का कल्याण हो रहा है। फलस्वरूप माँ के शरीर की रक्षा करना सभी के लिए आवश्यक है। भक्तगण अनुष्ठान आदि तो सर्वदा करते रहते हैं, जैसे महामृत्युंजय जप, शत चण्डीपाठ आदि। आजकल इससे अधिक कुछ करने का अधिकारी

मिलना कठिन होता है।" श्रीशंकर भारती की इन बातों को सुनने के बाद हमलोगों के मन में आनन्द का संचार हुआ।

शोभा के आग्रह पर बाटु दादा ने सम्पुटित शतचण्डी पाठ और महामृत्युंजय अनुष्ठान शुरू कर दिया है। माँ का शरीर जल्द स्वस्थ हो जाय, यह सभी लोगों की प्रार्थना है।

आज शाम की गाड़ी से डा० नाथ और उनकी पत्नी बनारस के लिए रवाना हो गये। इन लोगों की इच्छा थी कि माँ के निकट ५-६ दिन रहेंगे, किन्तु भद्र महिला की तबीयत अचानक खराब हो जाने के कारण आज चला जाना पड़ा।

कविराजजी के साथ माँ की बातचीत होती रही। माँ का शरीर अचानक इतना खराब क्यों हो गया, इसके पीछे कौन-सा रहस्य है, यह सब समझना हमलोगों के लिए कठिन है। सम्भवतः कविराजजी कुछ समझ सके हैं, ऐसा सोचकर बहुत से लोग उनसे इस विषय पर पूछताछ करने लगे जब कि वे स्पष्ट रूप से कुछ बता नहीं सके। सम्भवतः माँ के मुख से समयानुसार सारी बातें प्रकट होंगी। कविराजजी ने यह अनुमान जरूर कर लिया कि पिछले जयन्ती महोत्सव के समय माँ ने विशेष गुरुत्वपूर्ण बातें कही थीं, उसके साथ शायद माँ की इस अवस्था का कोई योगसूत्र हो सकता है। माँ की ये बातें निम्नलिखित हैं।

करुणामयी मां की अस्वस्थता प्रारब्ध भोग नहीं है

किसी की कोई भी त्रुटि प्रकट होने पर इस शरीर को जता सकते हो। चित्त शुद्धि के लिए अपनी त्रुटियों के अनुरूप दण्डादि ग्रहण करना और अनुतप्त होना उचित है। अगर दण्डादि ग्रहण में कोई अनिच्छुक है, तब ख्याल हो तो त्रुटि के उस दण्ड को यह

शरीर आदर से ग्रहण करता है। और कोई उन बातों को इस शरीर को न बताकर छिपाता है तब यह शरीर भी ख्याल के अनुसार चुपचाप ही—अजी अपने जन! जो हो जाय। जहाँ यह शरीर प्रिय है, यह बात मन में रखो। हे बहुरूप विश्वात्मन्! अगर तुम लोग इस शरीर का कुछ अपनी दृष्टि से देखते हो तो समझ लेना कि तुम जो क्रिया रूप में प्रकाश हो, वही तुम ही दण्ड स्वरूप हो। तुम ही कहो या मैं ही कहो, एक मात्र, वही, वही, वही।"

१४ अगस्त, १९५७

श्री श्री माँ के श्री मुख से उनकी शारीरिक अवस्था की बातें

कल सवेरे जब कविराजजी के साथ माँ की शारीरिक अस्वस्थता के सम्बन्ध में बातचीत होती रही तब माँ ने कहा था—"देखो निद्रित व्यक्ति (साधक) के स्थिति लक्ष्य में गति रहती है, किन्तु यहाँ तो स्थिति-अस्थिति, लक्ष्य-अलक्ष्य का कोई प्रश्न ही नहीं है। प्रत्येक नाड़ी-शिरा-उपशिराओं की क्रिया, स्पंदन सब कुछ साफ दिखाई दे रहे थे। जिस प्रकार दीपक हाथ में लेकर अँधेरे कमरे में एक-एक कर सब कुछ स्पष्ट देखने में आता है, उसी तरह और क्या ? किन्तु निद्रित व्यक्ति की गति में यह सब दिखाई देना सम्भव नहीं है। नानारकम की बाधाएँ उसे अतिक्रम करके चलना पड़ता है। एक तो है बाहरी गति और एक है अन्तरमुखी गति। पिताजी, यहाँ तो यह सब प्रश्न नहीं उठता। यहाँ तो नाड़ी भी मैं हूँ, शिरा भी मैं हूँ, प्रशिरा भी मैं हूँ, द्रष्टा भी मैं हूँ, जबकि मैं कहकर अगर कोई एक शब्द व्यवहार किया जाय।"

कविराजजी—"हाँ, समाधि के मन की एकाग्रता और उसका

निरोध। यहाँ तो मन-अमन की कोई बात नहीं है। इसलिए माँ के सम्बन्ध में समाधि की कोई वात नहीं आती।"

माँ—"देखो, जिस तरह हँसना, बोलना, चलना-फिरना होता है। शायद शरीर का एक-एक तरह का प्रकाश है। इसलिए तुम लोग अपनी दृष्टि में शरीर की समाधि का आसन भी देख सकते हो। श्वास की गति जब जिस रूप में स्थिर हो गयी। यहाँ परिवर्तन-अपरिवर्तन का कोई प्रश्न ही नहीं है।"

कुछ देर रुकने के बाद माँ पुनः कहने लगीं—"देखो, आजकल न जाने कैसी बेतरतीबवार श्वास की गति मानो सर्वत्र स्पष्ट रूप से शरीर के भीतर दिखाई देती है। इस बीच एक बार ऐसा भी देखा गया कि यह जो देखने का ख्याल था, वह नहीं है। तुमलोग इसे चरम बात कह सकते हो। एक ख्याल रहता है 'जो हो जाय'। और एक प्रकार का हो सकता था 'जो हो रहा है होने दो।' सभी ख्याल तो एक ही जगह के हैं। स्वाभाविक-अस्वाभाविक सब कुछ तुम लोगों की दृष्टि में हैं। यहाँ तो कर्म या वासना की तो कोई बात नहीं है। यहाँ तो एकमात्र बात है 'जो हो जाय' कितना चमत्कार। एक समय देखा गया नाभि की क्रिया शुरू हो गयी है, उस समय देखने पर देख सकते थे कि शरीर के नीचे का भाग बिलकुल ठण्डा है। नाभि की क्रिया आरम्भ होने पर क्या साधारण शरीर में वापस आया जा सक्ता है? प्रथम दिन (७ अगस्त) देखा गया कि मेरुदण्ड के बीच से दाएँ-बाएँ स्पंदन के साथ तीन गतियाँ एक समान ताल पर मूल से ब्रह्मरन्ध्र तक जा रही हैं।"

कविराजजी—"यही इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना के प्राणों की समगति है। योगियों के उत्क्रमण के समय पर ही इस समगति का अविर्भाव होता है।"

माँ—"सभी श्वास की गति के लिए है। श्वास की गति अस्वाभाविक है, इसलिए कभी चुपचाप और कभी अत्यन्त चटपट भाव होता है। बाहर से देखने पर कह सकते हो कि माँ तो बड़े मजे में बातें कर रही हैं या माँ शायद चुपचाप सो रही हैं। किन्तु इस अवस्था में भी सोते हुएं, बैठे रहते हुए सब कुछ हो जा सकता है। कभी-कभी देखा गया मेरुदण्ड के भीतर गर्दन के नीचे या पीठ भीतर या अन्तिम छोर पर एक विशेष स्पंदन है। उसी समय पीठ के ठीक बीच में उन लोगों से जाँच करने के लिए कहा गया था। उन लोगों ने जाँच करने के बाद कहा—'बिलकुल बर्फ की तरह ठण्डा है'।"

श्री श्री माँ और कविराजजी के बीच अपूर्व सुन्दर कथोपकथन

माँ आज सवेरे जरा जल्दी उठकर बैठ गयी हैं। कविराजजी को समाचार दिया गया। वे आकर माँ के निकट बैठे। तब पिछली रात की बातचीत का सूत्र पकड़ती हुई माँ कहने लगीं—"वह जो मेरुदण्ड के तीन समसूत्रों में प्रवाह की बातें कहा गयो थीं न! पिताजी, यहाँ तो कोई बाधा नहीं है, सब बिलकुल खुला हुआ है। साधारण क्षेत्र का अवलम्बन लेकर प्राण की गति—क्या साधना के क्षेत्र में, क्या जगत् के क्षेत्र में। देह माने, दो-दो। भोग प्राप्ति। अपने को लेकर ही भोग। पिताजी, एक बात है—दूसरी ओर अपनत्व बोध न होने पर भोग नहीं हो सकता। मेरा मकान, मेरी पत्नी, मेरा पुत्र, मेरा शत्रु, मेरा मित्र, मैं—इन्हीं अवलम्बनों में ही प्राण की गति है। साधक के क्षेत्र में तो प्राप्ति ही अवलम्बन है। उसकी सर्वदा स्थिति रहती है, इसलिए चलते वक्त मार्ग का ख्याल नहीं रहता। लक्ष्य तक अगर वह पहुँच गया तो मार्ग के बारे में वह बता सकता है। उस समय एक प्रकाश से ही सबकुछ उद्भासित हो जाता है।

असल में एक ही वस्तु है, पथ—लक्ष्य चाहे जो भी कहो, अपने अलावा और कुछ नहीं रहता।"

मैंने माँ से एक प्रश्न किया—"अच्छा माँ, सब कुछ जब खेल है, कोई भी ग्रन्थि बन्द नहीं है तब तुम्हारे इस शरीर के प्रकाश का अवलम्बन क्या है ?"

माँ—(जरा हँसकर) "इस प्रश्न का जवाव देने के पहले, पिताजी, मैं तुम्हें एक बात बताना चाहती हूँ। अच्छा, जिन लोगों की मृत्यु हो गयी है और जो लोग मुक्त हैं; उन लोगों के लिए अपने परिचितों का देह धारण कर दिखाई देना क्या सम्भव है ?"

कविराजजी—"हाँ सम्भव है।"

कुछ देर बाद पुनः माँ कविराजजी से पूछने लगीं। "अच्छा पिताजी, जहाँ निर्वाण है, वहाँ करुणा की बातें आ सकती हैं या नहीं ?"

कविराजजी—"जहाँ करुणा की बातें हैं। वहाँ दुःख नामक दूसरी बात भी रहती है।"

माँ—"तो क्या निर्वाण में करुणा करना बाधक हो रहा है ?"

कविराजजी "माँ, दो मत हैं। यह बौद्ध धर्म का मत है। एक मत से निर्वाण होने पर फिर करुणा नहीं की जा सकती। दूसरे मत से निर्वाण प्राप्ति के बाद भी स्वरूपभूत करुणा रहती है। जैसे विषय न पाने पर भी आनन्द जिसे स्वरूपानन्द कहा जाता है। यही है बुद्धत्व।"

माँ—"जहाँ बुद्धत्व की बातें कह रहे हो, वहाँ निर्वाण से भी करुणा होती है। जैसे आग से चाहे जितना ही ताप क्यों न लो,

उसकी दाहिका-शक्ति कम नहीं होती। भगवान्, जिसे तुम लोग 'पूर्ण' समझते हो, वहाँ तो कुछ भी क्षुण्ण होने का नहीं है। स्वयं ही अपने आधीन—स्वाधीन हो।"

मैं—"तब तो माँ, तुम्हारे शरीर का अवलम्बन भी उसी तरह का हो सकता है।"

कविराजजी—"एक बात और है। एक है करुणा और एक है स्वाभाविक करुणा जैसे सूर्य का प्रकाश और उसी शून्य से किरण धारा का प्रवाह, इन दोनों में प्रभेद है, या दोनों एक ही हैं?"

माँ—"दोनों ही एक हैं। होना और करना एक ही स्वरूपतः है। और स्वरूप से पृथक् मानने पर वही पृथक् है। स्वरूपतः जिन्होंने किया है, वही हैं। स्वरूप से पृथक् कहने पर वही इच्छा शक्ति है। महाशक्ति और इच्छाशक्ति। इसलिए जगत् जीव के लिए जिस इच्छाशक्ति के द्वारा किया जा सकता है उसी के द्वारा मूल को पकड़ना। मूल को पकड़ना और करना, दोनों ही मगर एक ही है। दो सोचते हुए कर्म करो; किन्तु अपने आप द्वितीय वह कौन है, उसी प्रकाश के लिए स्वक्रिया।"

कविराजजी—"ऐसी कोई स्थिति है जहाँ प्रकाश का भी कोई शब्द नहीं है?"

माँ—"यह तो होना ही होगा। शब्द-अशब्द की बात नहीं है। भाषा मानने पर शब्द एक ओर की बात है। पूर्ण होते हुए अपूर्ण। अपूर्ण होते हुए पूर्ण। क्योंकि पूर्ण ही तो है। अनन्त ही तो है। इसलिए सभी अपने-अपने स्थान को चुन लें।"

आगे कहने लगीं—"अपने स्थान पर ही मैं खड़ी हूँ, किन्तु मैं दूसरी नहीं हूँ। इसी रूप में चलता है, चलते-चलते यात्री मिल जाते हैं, कभी-कभी यात्री मिलते भी नहीं, पर लक्ष्य ठीक रहने पर

धोखा खाने में नहीं आता। इसीलिए कहा जाता है कि ग्रन्थ के रूप में, पद्य के रूप में, एक मात्र वही। 'यत्र यत्र नेत्र हेरे तत्र-तत्र कृष्ण स्फुरे'। इस प्रकार और किसी प्रकार का कहीं विरोध नहीं है। दुनिया की बातें त्याज्य कही जाती है, किन्तु ऐसे भी स्थान हैं जहाँ त्याज्य ग्राह्य नहीं है। वही। विशेष रूप से वही। जाग्रत-अजाग्रत, जाना-अनजाना, प्रकाश-अप्रकाश इन सबका प्रश्न वहाँ नहीं उठता। जागतिक दृष्टि से प्रश्न आना स्वाभाविक है। प्रश्न आते हैं, समाधान के लिए। इसीलिए विशेष-अविशेष के स्थान से अलग नहीं।"

कविराजजी के साथ बातचीत के सिलसिले में उस दिन वाले सूक्ष्म साधुओं की चर्चा चल पड़ी। आज स्पष्ट रूप से सभी के बारे

सूक्ष्म शरीर में माँ के निकट आने वाले साधुओं की बातें

में जानकारी प्राप्त हुई। जितने महात्मा माँ के निकट आये थे, उनमें से केवल दो व्यक्तियों के चेहरे दिखाई दिये थे। सारा शरीर सफेद धुएँ से घनीभूत था। दोनों के परिधान में जरा सफेद वहिर्वास था। एक के परिधान में साधारण कोपीन मात्र था। बाकी लोग सम्पूर्ण रूप से उलंग थे। वे लोग माँ के सामने आकर बैठे। बाद में माँ की प्रदक्षिणा की, फिर कुछ देर वैठने के बाद वहीं गायब हो गये।

दूसरे दिन पुनः कोई सूक्ष्म शरीरधारी महापुरुष माँ के निकट आया था या नहीं पूछने पर उस सम्बन्ध में माँ इस समय कुछ नहीं बतायीं। केवल बोलीं—"कह नहीं पा रही हूँ।"

आज माँ को बातचीत करते देख हमलोगों ने उन्हें कुछ अच्छा ही समझा। इसके अलावा बातचीत बिलकुल स्पष्ट स्वाभाविक रूप से कह रही थीं। माँ इतनी उच्चस्तर की बातें कर रही थीं कि

उसे एकमात्र कविराजजी के अलावा और कोई समझ सकेगा कि नहीं, इसमें सन्देह है। यह सब सूक्ष्म तत्व कथा माँ इतने दिनों तक किसी के सामने नहीं कही थीं। इसी बीच ७ से ९ ता० तक माँ के शरीर की हालत काफी खराब हो गयी थी। उन दिनों की सारी बातें माँ रत्ती-रत्ती करके कविराजजी को बताती रहीं।

माँ ने कहा—"पिताजी, शरीर की गतियाँ जब उस तरह चल रही थी न, तब निष्क्रिय भाव विशेष रूप से बढ़ गया। देखा गया कि आँखें कभी बड़ी हो रही हैं, कभी झपकी ले रही हैं या आधी खुली हैं। बड़े मजे की बात। मुख भी खुल जा रहा है। इसके बाद क्या हो रहा था, क्या नहीं हो रहा था, यह सब बातें बाहर के लोग शायद देखते रहे। अभी तक उसका प्रभाव दूर नहीं हुआ है। दिन या रात में कभी-कभी शरीर की गति मानो उसी ओर मुड़ना चाहती है जैसे असाधारण मनुष्य का अन्तिम समय में तेजी के साथ बातचीत करना इत्यादि होता है, इसी रूप से पिछले आठ महीने से बराबर चलना-फिरना हो रहा है उसी प्रकार चलते-चलते आज यह स्थिति आ गयी है। अब शरीर मानों चल नहीं रहा है। किसी दूसरे शरीर में अगर इस तरह होता तो न जाने क्या होता। जैसे रात में, वैसे दिन में एक भाव से चल रहा है। किन्तु पिताजी, इस शरीर को तो कोई कष्ट नहीं होता। बीच-बीच में देख सकते हो कि गहरी सांसे चल रही हैं, किन्तु यह भी भीतर से आता है ऐसा नहीं है।"

कुछ देर ठहर कर पुनः बोलीं—"काशी में रहते समय कुछ तकलीफ बढ़ गयी थी, उस समय अपने ख्याल से उस अवस्था को दबाते हुए इधर के आठ-नौ महीने गुजार

श्री श्री माँ के शरीर के दिये गये। अब दबाने वाला यह ख्याल नहीं

सम्बन्ध में कई बातें है। इस समय मानों मैं फ्री हूँ। मुझे और

कुछ नहीं करना है। जो हो जाय। इधर कुछ दिन कैसा हुआ था जानते हो ? कीचड़ की तरह यह शरीर फैल गया था। हड्डियाँ मानों गल गयीं थीं। इन दिनों जरा उठना-बैठना बातचीत करना हो रहा है। पर यह भी स्वाभाविक अवस्था नहीं है। फिर इस शरीर का सब-कुछ स्वाभाविक है। पिछले अट्ठारह दिन तक यह शरीर बिछौने पर पड़ा हुआ था। किस तरह जानते हो ? जैसे तुमलोग खा-पीकर सो गये और उठ गये। अट्ठारह दिन बीते या अट्ठारह घण्टे बीते या अट्ठारह मिनट बीते, इस बात का ख्याल ही नहीं रहा। संख्या की कोई मात्रा नहीं थी। बस, एकदम से सब कुछ गायब।" (इतना कहकर ताली बजायीं)।

शरीर की हालत के सम्बन्ध में आगे कहने लगीं—"जिस गति के बारे में उस दिन कहा जा रहा था, वह अन्त तक आने पर जैसे साँप के फन की तरह हो गया। फैल गया दोनों ओर—एक अन्तमुंखी, और एक बाहर की ओर। मेरुदण्ड में चौड़े ढंग का एक प्रवाह चल रहा था, उस समय नाक, आँख, सिर पर भी एक विशेष स्पंदन चल रहा था।" इस तरह की बहुत सी बातें कविराजजी के साथ हुईं। माँ के मुँह की बातें अगर तुरत न लिख कर रखी जाँय तो बात आगे चल कर ठीक-ठीक पुनरुद्धार करना असम्भव हो जाता है। माँ की बातों के भावों की रक्षा करना कठिन हो जाता है।

रात को ९ बजे दिल्ली से टेहरी के महराजा सपत्नीक आ गये। माँ के शरीर की हालत जानकर उन्होंने मेरे पास तार भेजा था। आज से तीन दिन के लिए पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बन्द है, इसलिये वे माँ के निकट आये हैं। माँ की इस हालत को देखते हुए कहीं उनके आश्रम में आ जाने पर हम सब परेशान न हो

उठें, इसलिए वे शहर में अन्यत्र स्वयं ही जाकर ठहर गये। जबकि देहरादून शहर में उनका निजी मकान भी है।

१५ अगस्त, १९५७

आज गुरुवार है। कविराजजी दिन रात मौन रहते हैं। इसलिए माँ के साथ आज कोई बातचीत नहीं हुई।

माँ १२ बजे के लगभग उठीं। एक-एक कर लोग आये और प्रणाम कर चले गये।

माँ बातचीत के सिलसिले में कहने लगीं—"आजकल एक नया उपसर्ग देख रही हूँ। कभी-कभी पैर से कमर तक झटका देकर बिछौने से अलग हो जा रहा है।" माँ का सब कुछ असाधारण है। यह कैसा ढंग है, समझ में नहीं आया।

१६ अगस्त, १९५७

आज माँ जब ११ बजे उठकर बैठीं तब कविराजजी को माँ के निकट बुला लायी। विशेष कोई बातचीत नहीं हुई। शरीर के सम्बन्ध में साधारण बातचीत हुई।

आज शाम की गाड़ी से कविराजजी काशी रवाना हो गये। उनके साथ कमल भी चला गया। कविराजजी यहाँ दो दिन और ठहरने वाले थे, किन्तु काशी के गुरुदेव के आश्रम में जन्माष्टमी उत्सव होने के कारण वे और ठहर नहीं सके।

१७ अगस्त, १९५७

कल जन्माष्टमी है। इस उपलक्ष्य में नाना स्थान से अनेक

भक्त देहरादून में माँ के निकट आये हैं। आगामी कल उदयास्त अखण्ड नाम-कीर्त्तन होने वाला है। इसी-लिए दिल्ली से बहुत से बच्चे आये हैं। दिल्ली से श्री वर्माजी आने वाले थे। अचानक गिर पड़ने के कारण उनके कन्धे में चोट लग गयी, इसलिए वे नहीं आ सके। यह समाचार सुनकर हम-लोग अत्यन्त दुःखित हुए। बम्बई से भइया, लीला और कानिया भाई आने वाले थे, ये लोग भी विशेष कार्यवश नहीं आ सके।

देहरादून में माँ की उपस्थिति में जन्माष्टमी

नीचे के बड़े कमरे के बीच में केले के पेड़, फूल-पत्तियों से बड़े अच्छे ढंग से नाम-यज्ञ का मंच बनाया गया है। शाम के बाद कीर्त्तन का विधिवत् अधिवास हुआ। माँ ऊपर के बरामदे में आकर देर तक कुर्सी पर बैठी रहीं। इसके बाद कीर्त्तन आरम्भ होने पर घर के भीतर चली गयीं।

१८ अगस्त, १९५७

आज प्रातःकाल से ही नाम-कीर्त्तन हो रहा है। लड़के आपस में मिलकर आवेग भरे स्वरों में गा रहे हैं—

"श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द
हरे कृष्ण हरे राम श्री राधे गोविन्द।"

माँ १२ बजे के लगभग बरामदे में कुर्सी पर आकर बैठ गयीं। भोग निवेदन हो जाने के बाद माँ पुनः एक बार कुछ देर के लिए आकर बैठीं। इसके बाद उन्हें विश्राम के लिए ले जाया गया।

दिल्ली की कमला जायसवाल कुछ दिन हुए माँ का दर्शन करने चली आयी है। इस बार गर्मी में आश्रम के कुछ लोगों को

साथ लेकर कमला केदारनाथ और बद्रीनाथ दर्शन करने गयी थी। आज जन्माष्टमी के दिन अपनी यात्रा पूर्ण के उपलक्ष्य में लक्ष्मी-नारायण की पूजा और यज्ञ का आयोजन उसने किया।

शाम के समय कीर्त्तन समाप्त होने पर लोग नगर कीर्त्तन करने गये। वहाँ से वापस आकर सभी ने माँ को प्रणाम किया। दिन भर बहुत सुन्दर ढंग से कीर्त्तन होता रहा।

बड़े कमरे के बरामदे में लक्ष्मी और मैसूर की महारानी के साथ मिलकर लोगों ने बड़े सुन्दर ढंग से सिंहासन सजाया। उसी के ऊपर सभी देवताओं को बैठाकर पूजा की गयी। माँ रात को ठीक १२ बजे बरामदे पर आकर बैठीं। माँ लेटकर सारा दृश्य अच्छी तरह देख सकें इसलिए एक खाट साटन के कपड़े और जरी के झालरों से बड़े सुन्दर ढंग से सजाया गया है। नीचे कीर्त्तन और पूजा जारी है। माँ १॥ बजे के बाद अपने कमरे में जाकर सो गयीं। बहुत से लोग उपवासी थे। इन लोगों के प्रसाद ग्रहण करने के बाद जब हम विश्राम करने गये उस समय रात के ३ बज चुके थे।

१९ अगस्त, १९५७

इधर कविराजजी जिन दिनों यहाँ ठहरे हुए थे, उनके साथ एक दिन परमहंस योगानन्द योगी की आत्म जीवनी नामक पुस्तक पर चर्चा होती रही। योगानन्द स्वामीजी १५ साल तक अमेरिका में रहने के बाद भारत में सन् १९३५ में एक बार आये थे। यहाँ आने के बाद माँ के साथ उनकी २-३ मुलाकात हुई थी। सन् १९३६ में वे पुनः अमेरिका चले गये और वहाँ जाकर अंग्रेजी में 'आटोबाय ग्राफी ऑफ ए योगी' नामक पुस्तक

परमहंस योगानन्द की आत्म जीवनी में श्री श्री माँ के सम्बन्ध में कई लेख, भ्रान्त बातें और घटनाएँ

प्रकाशित करवायी। यह पुस्तक धीरे-धीरे संसार के अनेक भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। इस पुस्तक में माँ के सम्बन्ध में एक अध्याय लिखा है। पर बड़े दुःख की बात है कि इस तरह की बहु प्रचारित पुस्तक में माँ के बारे में कई प्रकार की भ्रान्त बातें और घटनाओं का उल्लेख है। इस पुस्तक के सम्बन्ध में इसके पहले डा० पन्नालाल माँ के निकट चर्चा कर चुके हैं।

परमहंस योगानन्दजी सन् १९३६ के बाद न तो कभी भारत वापस आये और न उनकी माँ के साथ मुलाकात हुई। सम्भवतः उन्हें हर पहलुओं पर विचार करने का समय या मौका नहीं मिल पाया है। यह भी हो सकता है कि किसी सूत्र से उन्हें माँ के सम्बन्ध में भ्रान्त समाचार प्राप्त हुए हों। योगानन्दजी अब इस संसार में नहीं हैं। भारत आकर माँ के साथ घनिष्ठ रूप से मिलने और जानने का अगर उन्हें मौका मिलता तो वे माँ के सम्बन्ध में जो कुछ लिख चुके हैं, उसे पढ़ कर चकित रह जाते।

पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है—माँ ने अपने दोनों हाथ योगानन्दजी के गले में डालकर उनके कन्धे पर सिर रखा था। इधर हम अच्छी तरह जानते हैं कि माँ कभी किसी का इस तरह गला नहीं पकड़तीं और न किसी के कंधे पर सर रखती हैं। यहाँ तक कि बचपन में अपने शरीर के माँ के गले से लगना या सटकर बैठने की घटना कभी नहीं हुई थी।

एक जगह लिखा है कि माँ योगानन्दजी से कह रही हैं—"बाबा, इस जीवन में मैं आपको प्रथम बार देख रही हूँ, कितनी युगयुगान्त के बाद। अभी चले न जाइयेगा।" माँ के मुँह से इस प्रकार की बातें हमने कभी नहीं सुनी। इसीलिए माँ से इस सम्बन्ध में पूछताछ की गयी थी। माँ ने कहा था—"तुम्हारा नाम सुना

है। बाहर देखने का सुयोग, योगायोग बाबा, यह तो करा लिया।" इस तरह की बातें हुई थीं।

आश्चर्य की बात है पुस्तक में माँ का जन्म-स्थान और जन्म-तारीख भी गलत छपी है। इसके अलावा एक स्थान पर भोलानाथजी और माँ के सम्बन्ध में इस तरह की अविश्वसनीय बातें और घटनाएँ लिखी गयी हैं, जिसे पढ़कर सचमुच चकित रह जाना पड़ा है। माँ या भोलानाथजी के सम्बन्ध में जिन लोगों को कुछ भी जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे लोग भी इस सत्य को स्वीकार करेंगे कि सारी बातें काल्पनिक और झूठ हैं।

योगानन्दजी स्वयं माँ के प्रति बहुत उच्च धारणा रखते थे, यह बात उनके द्वारा लिखित आत्म जीवनी से स्पष्ट हो जाती है। फिर भी माँ के सम्बन्ध में इस तरह की बातें उनके द्वारा लिखित पुस्तक में प्रकाशित हुई। जिसे पढ़ने पर सचमुच दुःख होता है। संसार की एक बहु प्रचारित पुस्तक में अगर सही घटना या सही बातें ठीक-ठीक ढंग से लिखी गयी होती तो हमलोगों के लिए आनन्द और गौरव की बात होती।

माँ और हमलोग २३ ता० को काशी रवाना हो जायँगे। कुछ लोग शायद २-१ दिन पहले चले जायँगे।

२-३ दिन हुए लखनऊ से श्री रामेश्वर सहाय का तार आया है कि उनका एकमात्र पुत्र टुटू का पेरिस में पिछले ११ ता० को देहान्त हो गया है। यह समाचार पाकर हमलोग विशेष रूप से मर्माहत हो उठे। चक्रधारी के चक्र को समझना बड़ा मुश्किल है। श्री रामेश्वर सहाय उत्तरप्रदेश के चीफ कन्सर्वेटर आफ फारे-

एक दुःखदायक घटना

स्टस हैं। वे डा० पन्नालाल के बड़े दामाद हैं। लीला और रामेश्वर सहाय दोनों ही हमलोगों के विशेष परिचित हैं। टुटू एक प्रतिभावान छात्र था। केन्द्रीय सरकार की ओर से वह कई सालों से पेरिस में परमाणु शक्ति का अन्वेषण करता रहा। ऐसे बालक की मृत्यु अचानक हो जायगी, इसकी कल्पना किसी को नहीं थी। यह समाचार पाकर माँ ने लीला, रामेश्वर भाई और डा० पन्नालाल के यहाँ पत्र भिजवायीं। शायद ऐसे शोक में माँ का उपदेश पाकर कुछ सान्त्वना मिल जाय।

२० अगस्त, १९५७

आज सवेरे सावित्री काशी आश्रम से यहाँ आ पहुँची। उसने आकर ज्यों ही माँ को प्रणाम किया त्यों ही माँ ने पूछा—"गोपाल मजे में हैं।"

सावित्री अवाक् हो गयी। धीरे से बोली—"हाँ, अच्छा ही तो देखा।"

शायद कुछ लोग सोच सकते हैं कि गोपाल किसका नाम है। इधर माँ पूछ रही थीं काशी आश्रम में प्रतिष्ठित गोपालजी के सम्बन्ध में। गोपालजी की अनेक अलौकिक घटना इसके पूर्व घट चुकी है। माँ के मुख से भी अक्सर यह प्रश्न सुन चुकी हूँ—"गोपाल कैसे हैं?" हमलोग अपनी बुद्धि के अनुसार इस प्रश्न का जवाब देते हैं।

काशी आश्रम में प्रतिष्ठित गोपाल की अलौकिक घटना

सावित्री का जवाब सुनकर माँ पहले की तरह निश्चित नहीं हो सकीं। धीरे-धीरे बोलीं—"कल रात को मैंने कई बार बुनी से

कहा कि गोपाल आकर इस शरीर को बार-बार अपने छोटे लाल-लाल हाथों को दिखाता रहा। भाव ऐसा था मानों उन्हें चोट लगी है।"

मैं अवाक् होकर बोली—"यह कैसी बात है? यह इसलिए कि माँ जन्माष्टमी के ३–४ दिन पूर्व काशी के अतुल ब्रह्मचारी और माखन को पत्र द्वारा यह लिखने को निर्देश दे चुकी हैं कि वे लोग जन्माष्टमी के दिन गोपालजी को अत्यन्त सावधानी के साथ हिलाये-डुलाये। सम्भवतः गोपालजी के शरीर में उसी दिन चोट लगी है।

माँ से मैंने पूछा—"कुछ बताया है? तुम्हारे पास आकर शिकायत कर गया है?"

माँ ने मन्द-मन्द मुस्कराते हुए कहा—"नहीं शिकायत नहीं। पर चोट लगी है, इसलिये इस शरीर को बता गये। सारे शरीर में चोट लगी है।"

सावित्री अवाक् होकर सुनती रही। शायद इसलिए आते ही सावित्री से माँ ने पूछा कि गोपाल कैसे हैं। किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि काशी से आते समय किसी के मुँह से यह बात नहीं सुन सकी कि जन्माष्टमी के दिन गोपाल जी को चोट लगी है। इधर माँ के निकट सारा समाचार पहुँच गया है।

माँ ने कहा—"कल रात को ही बुनी को बता चुकी हूँ। किन्तु उसे और किसी को बताने के लिए मना कर दिया है। सोचती थी देखा जाय सावित्री या अन्य कोई कुछ कहता है या नहीं।"

कल से माँ के गर्दन में कुछ दर्द शुरू हो गया है। आज वह दर्द बढ़ गया है। पता नहीं गोपालजी को चोट लगने का इस दर्द से कोई सम्बन्ध है या नहीं। क्योंकि इस तरह की घटनाएँ इसके

पूर्व अनेक बार हो चुकी हैं। इसलिए माँ से मैंने पूछा—"माँ, क्या इसीलिए यह दर्द तुम्हारे शरीर में उत्पन्न हुआ ?"

माँ प्रतिवाद के स्वर में बोल उठीं—"देखो दीदी, तुम इसके साथ उसका सम्बन्ध क्यों जोड़ती हो ?" साफ तौर से कुछ बतायी नहीं। इतना कहकर चुप रह गयीं।

मन ही मन माँ की बातों पर विचार करती रही। क्या माँ की सब अलौकिक घटना होती है। आजकल लोग कहते रहते हैं कि पत्थर की मूर्ति क्या जीवन्त हो सकती है। मूर्ति पूजा के सम्बन्ध में इसीलिए सर्वसाधारण में अविश्वास अश्रद्धा की भावना रहती है। इधर करुणामयी माँ स्वयं कृपा करके विभिन्न प्रकार से हमारी आँखों में अंगुली डालकर दिखा दे रही हैं कि हमारे ज्ञान के बाहर भी बहुत कुछ है। ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जिसे अविश्वसनीय कहकर हमें नहीं उड़ाना चाहिए।

आज तीसरे पहर बाटु दादा, विनय दादा, ठाकुर माँ कृपाल और उसकी लड़की को काशी भेज दिया गया। पानु माँ के निर्देश पर आज अलमोड़ा रवाना हो गया। माँ धीरे-धीरे यहाँ से चलने की तैयारी करने लगीं। यहाँ से माँ २३ ता० को रवाना होंगी। एक बार माँ के मुँह से सुना—"दीदी, तुम लोग उसी तारीख को चली जाओ न। मैं न हो कुछ दिन बाद जाऊँगी।" यद्यपि इसके अलावा और कोई बातचीत नहीं हुई है। इसीलिए २३ ता० के लिए गाड़ी रिजर्व कराया गया है।

शाम के समय स्थानीय एक डा० श्री बलवन्त सिंह माँ के निकट दो महिलाओं के साथ आये। इसके पूर्व ये आश्रम में माँ के निकट कभी नहीं आये थे। माँ कभी-कभी जब टहलने के लिए जाती थीं तब वे कई बार माँ का दर्शन कर चुके हैं। उन्होंने

एक विचित्र घटना

आते ही माँ से कहा—"माताजी, सुना कि आपकी तबीयत ठीक नहीं है। पर आपको तो शरीर का कोई प्रयोजन ही नहीं है। आप तो पूर्णकाम हैं। पर आपके शरीर की हमें आवश्यकता है। मुझे ऐसा लगता है जैसे आपके साथ जितने भक्त हैं, वे सब ये नहीं समझ पाते कि आपका शरीर खराब हो सकता है। इसलिए माताजी मैं आया हूँ, आपका शरीर ठीक करने। मैं स्वयं डाक्टर हूँ। मेरा अनेक डाक्टर-वैद्यों से परिचय है। आपकी चिकित्सा के लिए जो भी खर्च होगा उसकी जिम्मेवारी मैं लेता हूँ।

माँ हँसकर बोलीं—"पिताजी, यह शरीर कोई दवा नहीं लेता। इस सम्बन्ध में तुम परमानन्द से बात कर सकते हो।" इस सज्जन की बातचीत में एक विशेषता रही। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे माँ से बहुत दिनों के परिचित हैं।

२२ अगस्त, १९६७

आज दोपहर को एक बजे योगी भाई मोटर से सोलन रवाना हो गये। चलते समय हाथ जोड़कर माँ से प्रार्थना कर गये—"माताजी, आप खुद ख्याल करके अच्छा हो जाइए।"

मैसूर की महारानी अपने साथ के लोगों को लेकर आज शाम को रवाना हो गयीं। कितने दिनों के बाद शाम को आज माँ बरामदे के छत पर चहलकदमी करने लगीं।

माँ के प्रस्थान के प्रोग्राम में कुछ परिवर्तन हो गया है। माँ हम सबको कल काशी भेज दे रही हैं। माँ यहाँ कुछ दिन ठहरेंगी और दर्द घटने पर काशी जायँगी।

२३ अगस्त, १९५७

आज तीसरे पहर ५।। बजे हम २०-२२ व्यक्ति दून एक्सप्रेस से काशी रवाना हुए। स्टेशन आते समय माँ को कल्याणवन में छोड़ आयी। शायद माँ कुछ दिन यहाँ रहेंगी। माँ के साथ परमानन्दजी, नारायण स्वामी, हरप्रसाद, भारद्वाज, केशवानन्द आदि रह गये।

हरिबाबाजी वृन्दावन जाते समय माँ से बार-बार प्रस्ताव रख चुके थे कि किशनपुर से अन्यत्र कहीं जाकर कुछ दिन रहें। उनका विश्वास था कि यदि माँ स्थान परिवर्तन कर लें तो स्वस्थ हो जायँगी।

२४ अगस्त, १९५७

आज तीसरे पहर ३।।। बजे काशी पहुँची। आश्रम से स्टेशन पर बहुत से लोग आये थे। माँ का शरीर ठीक नहीं है, फिर भी माँ के आदेश से उन्हें छोड़कर आना पड़ा। सभी का हृदय विशेष रूप से चिन्तित है। यहाँ के लोग विशेष रूप से माँ के शरीर के बारे में पूछताछ कर रहे हैं।

२६ अगस्त, १९५७

देहरादून से पत्र आया है। माँ के कंधे में अभी तक दर्द है, पर पहले से कुछ कम है। पूर्ण विश्राम कर रही हैं। आज शायद कुछ दिनों के लिए रायपुर के आश्रम में चली जायँगी।

२९ अगस्त, १९५७

रायपुर का पत्र आज मिला। आज शाम को माँ देहरादून से रवाना होंगी।

प्रकाशानन्द अब तक माँ के निकट था। परसों वह उत्तरकाशी चला गया। पिछले कई वर्षों से वह उत्तर काशी स्थित आश्रम की देखरेख कर रहा है। उसके साथ गुजराती युवक दीनबन्धु तपस्या करने के उद्देश्य से रवाना हो गया है। चलते समय माँ ने उससे कहा है—"जिस तरह प्रयत्न करके एम० ए० पास कर चुके हो, उसी तरह प्रयत्न करके इधर भी पास होने का प्रयत्न करो।"

दीनबन्धु राजपिपला के पुराने भक्त चुन्नीलाल भाई का पुत्र है। आजकल पिता के कारबार की देखरेख वही कर रहा है। माँ के प्रति प्रबल आकर्षण रहने के कारण अक्सर माँ के निकट आकर रहता है। अत्यन्त शान्त प्रकृति का सुशील युवक है।

३० अगस्त, १९५७

माँ आ रही हैं जानकर पटल उत्साह के साथ आश्रम, सदर दरवाजा और सड़क सभी जगह फूल-पत्तों से सजाने का इन्तजाम कर रहा है। माँ बहुत दिनों के बाद काशी आ रही हैं। स्थानीय भक्त और आश्रमवासी अत्यन्त आनन्दित हैं। स्टेशन पर डा० दास गुप्त, पटल, कमल आदि बहुत से लोग गये थे। माँ ४ बजे के बाद आश्रम आ गयीं। रास्ते में कविराजजी के यहाँ होती हुई आयी हैं। माँ के लिए सड़क पर एक सुसज्जित पाल्की रख दिया गया था ताकि पैदल आने पर उन्हें कष्ट न हो। पाल्की से ही माँ को आश्रम में ले आया गया। अस्वस्थ दशा में इतनी दूर रेल से सफर करने के कारण माँ थकी हुई दिखाई दे रही हैं।

स्वामीजी की जबानी सुना कि आज सवेरे स्टेशन पर माँ का दर्शन करने के लिए अनेक भक्त नर-नारी आये थे। विशेष रूप से अस्वस्थता के बाद माँ को देखने के लिए सभी व्यग्र थे।

फैजाबाद स्टेशन से कुछ दूर आगे चलती गाड़ी में कोयले का एक कण न जाने कैसे माँ की आँखों में आकर गिरा। दरवाजे खिड़कियाँ सभी वन्द थे, फिर भी कोयले का यह कण कैसे आ गया, समझ में नहीं आता। आश्रम में आने के बाद आँखों को कई बार गुलाव जल से धोने पर एक टुकड़ा वाहर निकला। रात को जब डा० नाथ माँ का दर्शन करने आये तब उन्होंने रूई की सहायता से पुनः एक टुकड़ा बाहर निकाला, पर अभी भी लगता है जैसे माँ को आँखों के भीतर कुछ है।

३१ अगस्त, १९६७

आज सवेरे १० वजे के बाद कुछ देर के लिए माँ अन्नपूर्णा के नाट मन्दिर में जाकर बैठीं। उस समय लोगों ने माँ का दर्शन किया।

११ बजे के लगभग डा० नाथ अपने औजार लेकर माँ की आँखों की जाँच करने आये। उन्होंने देखा कि तारा के पास एक टुकड़ा धँसा हुआ है। अपने यन्त्र की

कई उल्लेखनीय घटनाएँ

सहायता से उन्होंने उस टुकड़े को वाहर निकाल लिया, फिर भी आँख के दर्द में कमी नहीं हुई। कल से श्रीमद्भागवत जयन्ती आरम्भ होने वाली है। नारायण स्वामीजी की जबानी जिन दिनों माँ देहरादून में थीं, उस समय की कुछ घटनाएँ सुनने में आयीं। सभी घटनाएँ उल्लेखनीय हैं।

एक दिन सवेरे दिल्ली के पुराने भक्त चारु दादा माँ का दर्शन करने आये और लोगों के सामने एक घटना का वर्णन किया।

एक बार माँ जब दिल्ली में डा० जे० के० सेन के यहाँ थीं, उन दिनों उनका तीसरा पुत्र श्री शिशिर कुमार अत्यन्त अस्वस्थ हो गया था। शिशिर बाबू कलकत्ता में रहते थे। हालत काफी खराब हो गयी थी। सभी डाक्टर लगभग निराश हो गये थे। डाक्टर सेन ने चारु बाबू से अनुरोध किया कि माँ के निकट शिशिर कुमार के जीवन रक्षा के लिए प्रार्थना करें। वे स्वयं माँ के सामने प्रार्थना करने में संकोच अनुभव कर रहे थे।

फलस्वरूप चारु बाबू ने माँ के पास आकर कहा—"माँ, तुम शिशिर की जान बचाओ। वृद्धावस्था में डाक्टर बाबू को पुत्रशोक न होने पाये।"

यह बात सुनकर माँ ने जोर से कहा—"पिताजी, तुमलोग के शास्त्र में है न कि पचास पार होने पर जंगल जाना चाहिए। तुम लोग सब बात मानते नहीं। अधिक दिन तक गृहस्थी में रहने पर यह सब शोक-दुःख उठाना पड़ता है।" इतना कहने के बाद माँ अपने कमरे में जाकर सो गयीं। बाद में समाचार मिला कि माँ की तबीयत ठीक नहीं है।

आश्चर्य की बात यह है कि कुछ घण्टे बाद कलकत्ता से समाचार आया—शिशिर कुमार की हालत पहले से अच्छी है।

चारु बाबू की पत्नी उनसे बार-बार शिकायत करती रहो कि माँ से यह सब कहना उचित न हुआ। माँ ने शिशिर बाबू के रोग को अपने शरीर में ले लिया है। सचमुच में देखा गया कि शिशिर बाबू धीरे-धीरे स्वस्थ हो गये। इस तरह को अलौकिक घटनाएँ माँ के जीवन में अहःरह देखी गयी हैं। हमलोग कितनी घटनाओं का पता जानते हैं ?

चारु बाबू जब इन बातों का वर्णन माँ के निकट कर रहे थे तब माँ ने कहा—"हाँ पिताजी, आश्चर्य की बात देखो, उस समय

यह शरीर क्या देख रहा था जानते हो ? देखा जा रहा था कि महादेव बैठे हैं। उनके निकट एक हड़िया है। उस हड़िये में असंख्य छोटे-छोटे कीड़े भीतर गिर रहे थे। महादेव मानो उन सबको खा जाने वाले हैं।"

आश्चर्य की बात यह है कि बाद में यह समाचार मिला कि कलकत्ते के बड़े-बड़े डाक्टर जाँच के बाद इस निश्चय पर पहुँचे, पुराने कागजों के भीतर एक प्रकार के छोटे-छोटे कीड़े होते हैं जो श्वास नली के भीतर जाकर जख्म बना देते हैं। अनेक कीड़ों ने भीतर जाकर इस तरह जख्म बना दिया था कि मुँह से पीप और खून निकल रहा था।

माँ ने एक बात और बतायी। शिशिर कुमार की माँ एक मन्त्र जप करती थी। माँ ने उनसे कहा था कि वह मन्त्र लड़के को दे देना ताकि वह नित्य मन्त्र जप करता रहे। जिनकी असीम कृपा से इस तरह के दुरारोग्य व्याधि से वह मुक्त हुआ, उनका नाम जप करना एक मात्र कर्त्तव्य है। माँ की कृपा से शिशिर बाबू पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर सरकारी काम कर रहे हैं।

चारु बाबू माँ तथा उपस्थित लोगों से कह रहे थे कि माँ के वर्तमान शरीर की यह हालत क्यों है, यह हमलोग नहीं जानते। माँ अगर कृपा करके कुछ न बतायें तो हम कुछ भी नहीं जान सकते।

दूसरी घटना यों है—एक दिन रामपुर स्थित मौन मन्दिर के सामने माँ बैठी हुई थीं। इसी समय राय साहब माधोराम की पुत्र-वधू हंसा देवी आयी और फूल-बेलपत्ती से माँ के चरणों में अंजलि दी। बेल पत्तियों में श्वेत चंदन से कुछ लिखा था। माँ ने उपस्थित लोगों के हाथ पर बेलपत्ती रख दिये।

बेलपत्ती में क्या लिखा है। पूछने पर माँ ने नारायण स्वामीजी से कहने को कहा—वे जब उन अक्षरों को पढ़ने लगे तो पढ़ते नहीं बना। तब माँ कह उठीं—"षड़क्षर मन्त्र लिखा है।" माँ का आदेश पाकर तब उन्होंने उस मन्त्र को स्पष्ट रूप से पढ़कर सुनाया।

एक-एक कर सभी लोग माँ के निकट आकर कहने लगे—"माँ, तुम अपनी जबानी बताओ कौन सा मन्त्र लिखा है।" माँ कभी मन्त्र उच्चारण नहीं करतीं। इसलिए माँ के आदेश पर नारायण स्वामी ने उस मन्त्र को बताया।

इसके बाद माँ लोगों से बोलीं—"जिन लोगों को बेलपत्तियाँ मिली हैं, वे इसी मन्त्र का जप करते रहें।"

इस तरह साधारण रूप में बहुत से लोगों को षड़क्षर मन्त्र प्राप्त हो गया।

जिन लोगों को बेल की पत्ती प्राप्त हुई थी, उनमें अलमोड़ा जिला के आस्कोट राजा का एक आत्मीय और कन्या भी थी। इन दोनों ने इस घटना को दीक्षा-ग्रहण का रूप समझ लिया और दूसरे दिन सवेरे वे माँ के लिए वस्त्र, फूल, फल, दीप, दक्षिणा आदि लेकर हाजिर हुए। इन दोनों ने माँ को गुरु मानकर उनका वरण करते हुए पूजा और आरती की।

इस तरह खेल-खेल में माँ क्या करती हैं, यह समझना साधारण बुद्धि के बाहर की बात है। माँ जागतिक दृष्टि से कभी किसी को मन्त्र दीक्षा नहीं देतीं। पर इस तरह की घटनाओं से ऐसी सब अद्भुत बातें हो जाती हैं जिसे हम सब ठीक-ठीक समझ नहीं पाते। यही वजह है कि आजकल जानित-अजानित ऐसे अनेक स्त्री पुरुष हैं जो द्विधा में कहते हैं कि माँ ही उनके गुरु हैं और माँ की कृपा से उन्हें मन्त्र प्राप्त हुआ है।

१ सितम्बर, १९६७

आज से आश्रम में श्रीमद्भागवत जयन्ती आरम्भ हुआ। आश्रम में इसका प्रारम्भ माँ के भक्त स्व० कुमार चन्द्र भट्टाचार्य ने किया था। उनके निधन के बाद भी यह बन्द नहीं हुआ। उनकी पत्नी के विशेष आग्रह पर प्रतिवर्ष भाद्र शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक भागवत जयन्ती उत्सव मनाया जाता है।

आश्रम में श्रीमद्भागवत जयन्ती उत्सव

इस बार इस सप्ताह के यजमान हुए बम्बई के श्री बाबू भाई कानिया। वे अनुष्ठान का सारा व्यय भार वहन करेंगे। इस उपलक्ष्य में वे सपरिवार माँ के निकट आये हैं। आज सवेरे माँ के सामने नियमानुसार घट स्थापना हुई, लक्ष्मीनारायण की मूर्ति को षोड़शोपचार से पूजा होने के बाद श्रीमद्भागवत पाठ आरम्भ हुआ। वृन्दावन के पंडित श्रीनाथ शास्त्री पाठ कर रहे हैं। बाटु दादा, ब्रह्मचारी कान्ति भाई, कलकत्ता के विनय बाबू और ब्रजवासी एक ब्राह्मण युवक धारक, जापक और श्रोता पद पर व्रती हुए। सवेरे महात्म्य पाठ हुआ और तीसरे पहर श्रीनाथ जी हिन्दी में व्याख्या करने लगे।

२ सितम्बर, १९६७

शाम के बाद श्री कविराजजी और डा० गोपाल दादा माँ के कमरे में आकर बैठे। तरह-तरह की बातें होती रही हैं। कुछ दिन पहले देहरादून में माँ की तबीयत कैसे खराब हो गयी थी, यह बात सभी को याद है। माँ को इस समय कुछ दिनों के लिए कहीं

एकान्त में विश्राम करने की आवश्यकता है। इस तरह की बातें चल रही थी। गोपाल दादा ने कहा—"माँ तो विन्ध्याचल वासिनी हैं, इसलिए कुछ दिनों के लिए स्वस्थान में जाकर विश्राम करें तो ठीक है।"

माँ यह बात सुनकर खूब हँसने लगीं। बोलीं—"पिताजी की बातें सुनो।"

गोपाल दादा की इस बात के पीछे गूढ़ अर्थ छिपा हुआ है। योगी भाई ने देखा कि विन्ध्यवासिनी देवी और माँ अभिन्न हैं।

योगी भाई का अपूर्व दर्शन

जाग्रत अवस्था में जप करते-करते उन्होंने देखा था कि माँ ने विन्ध्यवासिनी की मूर्ति धारण करके पुनः कुछ देर बाद स्वरूप धारण किया। योगी भाई ने माँ के गले में जो माला पहनायी थी, उन्होंने देखा कि वह देवी मूर्ति के गले में लटक रही है। फिर देवी के गले में माला डालकर उन्होंने देखा कि वह माँ के गले में है। योगी भाई की जीवन की यह घटना केवल कुछ लोग जानते हैं।

इस प्रसंग में और एक घटना याद आ गयी। वृन्दावन के राधारमणजी के लिए इस बार कलकत्ता के भक्त श्री अरुण घोष ने कई हजार रुपया खर्च करके एक कीमती सिंहासन बनवाया है। पिछले २५ ता० को वृन्दावन में इसी सिंहासन के ऊपर मूर्ति स्थापना उत्सव हो गया है। उस समय वृन्दावन में उपस्थित रहने के लिए अरुण ने माँ से बार-बार प्रार्थना की थी। माँ के जाने की बात भी एक प्रकार से निश्चित हो गयी थी, किन्तु माँ का शरीर ज्यादा खराब रहने के कारण उनका जाना नहीं हो सका। माँ ने अरुण के पास सन्देशा कहलवाया था—"दुःख मत करना तुम लोगों की दृष्टि में इस शरीर के न जाने पर भी यह शरीर वहाँ

रहेगा।" माँ की इस बात पर अरुण ने सम्पूर्ण रूप से विश्वास कर लिया।

सिंहासन पर जिस समय देवी मूर्ति स्थापित की जा रही थी, उस समय अरुण की पत्नी ने अचानक पूछा—"क्यों जी, माँ नहीं आयीं।" इधर अरुण स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा था कि माँ वहाँ उपस्थित हैं। इसलिए उसने जोरदार शब्दों में अपने पत्नी से कहा—"तुम देख नहीं पा रही हो ? माँ तो मौजूद हैं। वह रहीं।"

इसके पहले भी अरुण माँ को नाना रूप में दर्शन कर चुका है। एक बार अरुण ने देखा था कि वृन्दावन में महाप्रभु के मन्दिर के भीतर माँ खड़ी हैं। कुछ देर बाद विग्रह के सामने से जब पर्दा हटाया गया तब देखा गया कि माँ महाप्रभु का रूप धारण कर चुकी हैं। दूसरी ओर महाप्रभु ही माँ के रूप में खड़े हैं।

एक बार अरुण ने यह भी देखा था कि समुद्र की तरंगों में महाप्रभु और माँ वहते हुए चले जा रहे हैं।

एक बार उसने देखा था कि उसने माँ के गले में जो माला पहनायी थी, वह माला महाप्रभु के गले में लटक रही है और महाप्रभु के गले में जो माला पहनायी गयी, वह माँ के गले में है।

इस तरह न जाने कितने लोग कितने रूपों में माँ का दर्शन करते रहते हैं, उस सम्बन्ध में हमलोग कितना जानते हैं। इस तरह की बातें जब माँ के सामने हो रही थी तब माँ हँसते-हँसते बोली थीं—"इस शरीर का कोई गोलमाल नहीं है, जो जो कुछ कहता है वही। अगर कोई कहे कुछ भी नहीं, तब कुछ भी नहीं।"

९ सितम्बर, १९५७

भागवत-जयन्ती कल बड़े अच्छे ढंग से सम्पन्न हो गयी। इस

उपलक्ष्य में विभिन्न स्थानों से बहुत से लोग आकर सम्मिलित हुए थे। लखनऊ से डा० पन्नालालजी और उनकी लड़की लीला अपने पति (श्री सहाय, मुख्य जंगल विभाग के अधिकारी) को साथ लेकर माँ के निकट आयी थी।

लीला अत्यन्त शोकाकुल है। एक माह हुआ उसके एकमात्र पुत्र का पेरिस में देहान्त हो गया है। कामेश्वर यानी टुटू को हम-लोग बचपन से ही जानते हैं। इन दिनों उसकी उम्र २५ वर्ष की थी। भारत सरकार की ओर से पेरिस में आणविक शक्ति के सम्बन्ध में रिसर्च करने गया हुआ था। उसके रिसर्च से अनेक वैज्ञानिक मुग्ध हो गये थे। लोगों को आशा थी कि टुटू अपनी प्रतिभा से भारत को गौरान्वित करने में समर्थ होगा।

ऐसे सन्तान की अचानक मृत्यु से परिवार के सभी लोग विशेष शोकाकुल हो उठे हैं। इधर माँ के निकट शान्ति लाभ की आशा से परिवार के अधिकांश लोग आये हुए हैं। लीला उच्च शिक्षिता और गम्भीर प्रकृति की महिला है। इतने बड़े भयानक शोक में भी वह टूट नहीं गयी है। उसका धैर्य और सहनशीलता देखकर हम सब मुग्ध रह गये।

माँ के निकट बातचीत के सिलसिले में लीला कहने लगी—"माँ, मैं सब समझती हूँ। भगवान जो कुछ करते हैं, उसमें कोई भूल या अन्याय नहीं होता। फिर भी जैसे इसे बर्दाश्त नहीं कर पा रही हूँ।"

टुटू के सम्बन्ध में एक सुन्दर घटना की जानकारी हमें प्राप्त हुई है। एक दिन पूजा करते समय अचानक लीला के मन में आया कि टुटू को माँ की चरणों में अर्पित कर दे।

एक सुन्दर घटना

तुरन्त मन ही मन टुटू को माँ की चरणों में अर्पित कर दिया। टुटू को माँ ने मृत्यु

के बहुत पूर्व अपने चरणों में स्थान दिया था, इसमें रंचमात्र संदेह कहाँ रह गया ? एक वार किसी उपलक्ष्य में डा० पन्नालाल माँ के निकट काशी आये थे। नीचे के बड़े कमरे में सत्संग हो रहा था। सत्संग समाप्त होने पर ऊपर जाते समय माँ ने पन्नालालजी को बुलाकर कहा—"पिताजी, टुटू को षड़क्षर मन्त्र लिखकर के दे देना। इसका जप वह करता रहेगा।"

यह बात हमलोग उस समय नहीं जान सके थे। आज बात-चीत के सिलसिले में पन्नालाल ने इसे प्रकट किया। इसके बाद दुर्गा पूजा के अवसर पर माँ जब इलाहाबाद गयी हुई थीं, उस समय माँ मुझसे एक बेल पत्र पर षड़क्षर मन्त्र लिखवाकर टुटू को दिल-वायी थीं। माँ के निर्देशानुसार वह मन्त्र जपता रहा। जिस पर कृपा करना होता है, उस पर अयाचित भाव से वे स्वयं करुणा करती हैं। जिस मुहूर्त में टुटू को लीला ने माँ के चरणों में अर्पित कर दिया, उसी क्षण से कैसे उसका प्रकृत कल्याण हो, इसकी व्यवस्था स्वयं माँ करती आ रही थीं—इसमें संदेह कहाँ है।

बी० एस-सी० पास करने के बाद टुटू के इंग्लैंड जाकर पढ़ने की बात हो रही थी। माँ से इस सम्बन्ध में जब पन्नालालजी ने पूछा तब माँ ने स्पष्ट रूप से कहा था—"यहीं एम० एस-सी० पास करके कहीं प्रोफेसरी करे तो अच्छा है।"

पन्नालालजी ने उस समय यह बात और किसी से नहीं कहा। इधर टुटू के विदेश जाने का पूरी तरह से निश्चय हो गया तब माँ ने स्वयं ही लीला से कहा—"क्या टुटू को दो वर्ष बाद विला-यत नहीं भेजा जा सकता ?"

प्रत्युत्तर में लीला ने माँ से कहा कि टुटू बहुत उत्साहित है, जाने की बातचीत सब कुछ तय हो गया है, ऐसी हालत में मैं उसे

मना नहीं कर सकती। अगर माँ कृपा करके टुटू के मत को परिवर्तन कर सकें तो अलग बात है।

आश्चर्य की बात यह हुई कि टुटू यहाँ एम० एस-सी० पढ़ने को राजी हुआ और अपनी इच्छा से विदेश नहीं गया। यह सब माँ की लीला है।

टुटू ने इलाहाबाद में रहते हुए अच्छी तरह से एम० एस-सी० पास किया पर विधि का विधान कौन रोक सकता है। पास करने के कुछ दिनों के बाद ही उसे भारत सरकार की ओर से फ्रांस चला जाना पड़ा। आश्चर्य की बात यह हुई कि उसके जाने न जाने के बारे में माँ से किसी ने कुछ नहीं पूछा। उसके चले जाने के बाद माँ को समाचार मिला। जो होना होता है, वह इसी तरह हो जाता है। वहाँ जा करके दो वर्ष बाद कैसे उसका देहान्त हो गया, इसका पूर्ण विवरण अभी तक ज्ञात नहीं हो सका। विज्ञान की उपासना करना ही उसका एकमात्र काम्य था। उसी विज्ञान की उपासना करते-करते एक होनहार युवक की अकाल मृत्यु हो गयी।

बहरहाल, टुटू की आत्मा की उर्ध्वगति हो गयी है, इसमें बिन्दु मात्र भी सन्देह नहीं है। उसके समस्त परिवार पर माँ की कृपा दृष्टि है। लीला को माँ ने साधन-भजन करने के लिए एक सफेद कम्बल और नित्य पाठ के लिए श्रीमद्भागवत की एक प्रति अपने हाथ से दी हैं। पति-पत्नी को माँ के सामने बैठाकर भागवत पाठ कराया गया। महानिशा में रेशमी वस्त्र पहनाकर उसी सफेद कम्बल के ऊपर बैठाकर माँ लीला के द्वारा जप करवाती रहीं। माँ की अपार करुणा वे लोग अनुभव करते रहे।

२७ सितम्बर, १९५७

इस बार काशी आश्रम में दुर्गा पूजा होगी। बहुत दिन पहले

स्व० निर्मल बाबू की पत्नी (मेरी बड़ी बहन) ने यह इच्छा प्रकट की थी कि काशी में एक बार पूजा का आयोजन हो। इस बार माँ ने उसकी प्रार्थना पूर्ण की। पूजा के समय अगर अचानक कोई बाधा विघ्न उपस्थित न हुआ तो माँ यहीं रहेंगी। ऐसी बातचीत हुई है।

लखनऊ का एक बंगाली युवक बहुत सुन्दर ढंग से प्रतिमा बनाता है। आश्रम के कई जगह वह प्रतिमा बना चुका है। इस बार भी उसने देवी मूर्ति बनायी है।

२८ सितम्बर, १९५७

काशी आश्रम में बड़ी दीदी द्वारा दुर्गापूजा

आज देवी का शुभ बोधन दिन है। माँ की उपस्थिति में शाम के समय विधिवत् देवी का बोधन हुआ। मूर्ति बहुत सुन्दर बनी है। सभी लोग एक स्वर से प्रशंसा कर रहे हैं। मृण्मयी मूर्ति मानों बिलकुल जीवन्त सी लग रही है।

३० सितम्बर, १९५७

आज उषा-कीर्त्तन के बाद खूब धूम-धाम के साथ देवी की मंगल-आरती हुई। समस्त आश्रम मानो एक नूतन उन्माद में मत्त हो उठा है। भक्त नर-नारियों का दल पवित्र और शुद्ध भाव लेकर देवी का दर्शन करने आये हैं। माँ की उपस्थिति के कारण सभी के हृदय में आनन्द की वृद्धि हुई है। आरती समाप्त होने पर लोगों ने जगज्जननी को प्रणाम किया।

पूजा का आयोजन माँ के तत्त्वावधान में हो रहा है। स्वयं

उपस्थित रहते हुए कहाँ क्या होगा, वे सब दिखा दे रही हैं। देवी-पूजा तो अनेक स्थान पर होती ही रहती है, किन्तु माँ के साक्षात् निर्देश में पूजा का जिस प्रकार प्रकृत विधिवत् व्यवस्था होती है, ऐसा अन्यत्र कहीं नहीं देखने में आया है। वहाँ आडम्बर जरूर रहता है, पर प्राण कहाँ। आज हमलोग साक्षात् विश्वजननी के आश्रम में रहते हुए उनकी कृपा पूर्ण निर्देश प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं। यह एक विशेष स्मरणीय बात है।

देवी की नव पत्रिका स्नान से लेकर पूजा और भोग की प्रत्येक छोटी-मोटी वात को माँ स्वयं खड़ी होकर समझा दे रही हैं। पूजा के सरंजाम से लेकर भक्तों के बैठने के इंतजाम तक सब कुछ माँ देख सुन रही हैं।

मण्डप के बरामदे में आश्रम के लड़के-लड़कियाँ बैठे समवेत रूप से चण्डी और गीतापाठ करने लगे। भीतर पूजा हो रही थी। माँ चहल-कदमी करती हुई सबको आनन्द दे रही थीं।

पिछले प्रतिपदा से देवी भागवत और रामायण पाठ नियमित रूप से हो रहा है। नवरात्र के भीतर इन दोनों ग्रन्थों का सम्पूर्ण पाठ होगा।

सप्तमी विहित पूजा, अंजलि और मध्याह्न भोग माँ की उपस्थिति में बड़े अच्छे ढंग से हो गया। संध्या की आरती और कीर्त्तन के समय अनेक दर्शनार्थियों की भीड़ आ गयी। काशी जैसे स्थान में, गंगा तट पर, माँ की उपस्थिति में आश्रम की शारदीय पूजा में विभिन्न स्थानों से भक्त वृन्दों का आगमन होगा, इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

१ अक्टूबर, १९५७

आज महाष्टमी है। विधान के अनुसार उषा-कीर्त्तन, मंगल-आरती, देवी का स्नान पूजा, भोग-आरती सम्पन्न हुआ।

पूजा के बीच ही माँ एक बार चौखम्बा स्थित पटल के घर से हो आयीं। प्रत्येक साल वहाँ पूजा होती है। इसके पहले भी वे माँ को कई बार अपने यहाँ ले गये हैं।

पटल के यहाँ से वापस आने पर कन्या पीठ के बरामदे में कुमारी-पूजा का एक विराट अनुष्ठान किया गया। १५ कुमारी और एक बटुक की पूजा हुई। कल दो कुमारी की पूजा हो गयी है।

इसके बाद २।।। बजे से ३।। बजे के भीतर माँ के सामने देवी सन्धि पूजा हुई।

शहर के अधिकांश भक्तों ने आज आश्रम में प्रसाद ग्रहण किया। माँ ने आज अपने हाथ से एक तरकारी परोसा। कुछ संन्यासी माँ के हाथ से अन्न प्रसाद बार-बार माँगकर ग्रहण करते रहे। महाष्टमी के दिन साक्षात् अन्नपूर्णा के हाथ से प्रसाद पाकर सभी लोग अपने भाग्य को धन्य समझने लगे।

२ अक्टूबर, १९५७

आज नवमी पूजा हुई। मंगल-आरती, महास्नान आदि नियमानुसार हो गया।

३ अक्टूबर, १९५७

दशमी पूजा के बाद आज सवेरे ९ बजे के भीतर देवी का

विसर्जन हो गया। तीसरे पहरे सभी लोग नाव लेकर प्रतिमा को गंगा में ले जाकर विसर्जन कर आये।

शाम के बाद माँ अन्नपूर्णा के नाट मन्दिर में आकर बैठीं। भक्त गण माँ को प्रणाम कर धन्य हुए। माँ के निर्देशानुसार सभी को मैंने मिठाइयाँ बाँट दी।

मौन के बाद माँ लाइब्रेरी के बरामदे में आकर बैठीं। नारायण स्वामीजी को माँ पहले ही कह चुकी थीं—"तुम मीठा मंगाकर रख देना मैं अपने मित्रों और माताओं के हाथ में दूँगी।" समाचार पाकर सभी गरीब बालक-बलिकाएँ तथा महिलाएँ पहले से आकर एकत्रित हो गयी हैं। माँ सभी के हाथ में एक-एक रसगुल्ला देती रहीं।

जिस समय माँ मिठाई बाँट रही थीं, उस समय माँ के सामने श्री कविराजजी भी खड़े थे। उन्होंने माँ के हाथ से अत्यन्त श्रद्धा के साथ मिठाई ग्रहण करके वहीं खड़े-खड़े भोग लगाया। यह दृश्य देखकर हम सब चकित रह गये। बात यह है कि कविराजजी साधारण तौर पर जहाँ-तहाँ खड़े होकर आहार ग्रहण नहीं करते और न माँ इस प्रकार उन्हें कुछ देती हैं।

कविराजजी के साथ आज की बातें हो रही थीं। माँ कह रही थीं—"जिन दिनों प्रतिमा बन रही थी उन दिनों यह शरीर हरि भवन (लाइब्रेरी बिल्डिंग का नाम हरि भवन है। श्री श्री हरि-बाबाजी यहाँ आकर पहले-पहल इसी भवन में ठहरे थे।) के तीन तल्ले पर सोया हुआ था। देखा कि उत्तर के दरवाजे की ओर से एक देवी मूर्ति ने घर में प्रवेश किया। उनके पीछे अन्य अनेक देवी मूर्तियाँ थीं। पहले पहल जो देवी मूर्ति भीतर आयीं, उनकी वय ३०-३२ के लगभग थी। चेहरे की बनावट बाच्चू के माँ की तरह

थी, पर नीचे की ओर भरा हुआ था। देवी मूर्त्तियाँ आपस में कह रही थीं कि इस बार की पूजा प्रतिवर्ष की भाँति नहीं होगी, इसलिए इसी बार के लिए आना पड़ा।"

माँ ने आगे कहा—"पिछले साल बाच्चू की माँ की आश्रम में पूजा करने की इच्छा हुई थी। किन्तु विनय बाबू ने पहले से ठीक कर रखा था, इसलिए उस बार पूजा नहीं हो सकी। सब कुछ तो कल्पना है। पूजा करने की कल्पना उसे हुई थी, इसीलिए उसकी कल्पना के अनुसार देवी के मुख का भाव भी मानो कुछ उसी की तरह बन गया है। कितना सुन्दर।"

४ अक्टूबर, १९५७

आज अधिकांश बाहरी भक्त विदा लेकर अपने-अपने घर पर चले गये। पूना से पंजाबी भक्त श्री सोमप्रकाश नन्दा आये हैं।

भक्त वत्सला माँ

आज उनकी जबानी कई उल्लेखनीय घटनाओं का पता चला। माँ जिन दिनों दक्षिण यात्रा पर गयी थीं, उस समय पूना के एक धर्मशाले में एक रात ठहरी थीं। यहीं उन्होंने पहले-पहल माँ का दर्शन किया था। उन्होंने माँ से प्रार्थना की कि एक बार मेरी कुटिया में आप चरण धूलि दें। माँ राजी हो गयी थीं और रात के ३॥ बजे उनके मकान के प्रांगण में हाजिर हुई थीं।

माँ उनकी तरह अधम के घर जायँगी, इस बात की कल्पना उन्हें नहीं थी। माँ घर के भीतर नहीं गयीं। बाहर खड़ी रह कर बोलीं—"ठाकुर घर में तो बहुत देव-देवी की मूर्त्ति और फोटो हैं।" माँ के मुँह से यह बात सुनकर वे अवाक् रह गये। उनका ठाकुर घर मकान के बहुत भीतर है, माँ ने इसे कैसे देख लिया?

माँ उनके ठाकुर घर में सूक्ष्म रूप में जाकर सब कुछ को पवित्र कर चुकी हैं, इस बारे में उनके मन में रंचमात्र सन्देह नहीं रहा ।

माँ के जयन्ती उत्सव के पहले की घटना है—एक दिन पूजा करते-करते उनके मन में यह विचार आया—"शिव तो मेरे इष्ट हैं, किन्तु शिव क्या शक्ति से अलग हैं ?" उनसे जाकर किसी ने कहा—"तुम तो शक्ति की पूजा नहीं करते ।"

दूसरे दिन अपने हृदय की प्रेरणा से उन्होंने माँ की सेवा के लिए ५०० रुपया काशी के पते पर भेज दिया। आश्चर्य की बात है कि इस तरह पूना से किसने इतना रुपया भेजा है, यह बात हम नहीं जान सके। रुपया भेजते समय उन्होंने अपना कोई परिचय नहीं दिया था। जब माँ से यह बातें कही गयीं तब वे मुझसे बोलीं—"दीदी, दक्षिण यात्रा के समय एक बार जिससे मुलाकात हुई थी, वही तो नहीं ? उसे पत्र लिख कर देखो ।"

माँ की कृपा से पत्थर भी सोना बन जाता है।

इस घटना की बात मेरी जबानी सुनकर नन्दा साहब को दृढ़ विश्वास हुआ कि शक्तिरूपिणी माँ ने उनकी दीन पूजा को निश्चित रूप से स्वीकार कर लिया है। नन्दाजी कहने लगे—"जिनके कृपा स्पर्श से पत्थर भी सोना बन जाता है, उससे मेरा परिवर्तन होगा, इसमें आश्चर्य की क्या बात है।"

यहाँ पूजा के दिनों में वे नित्य ३ बजे उठकर मंगल आरती में भाग लेते रहे। आश्चर्य का विषय यह है, शय्या त्याग करने के समय वे प्रतिदिन सुनते रहे कि आश्रम में कहीं बड़े सुन्दर ढंग से नाम-कीर्तन हो रहा है। वह नाम बहुत ही मधुर था। अभी तक मानो उनकी कानों में गूँज रहा है। बिछौने से उठकर जब वे बाहर

आते थे तब उन्हें कीर्त्तन की आवाज नहीं सुनायी देती थी। उस समय उन्हें कुछ लोग शय्या त्याग कर शौचादि में जाते दिखाई देते थे। यह सच है कि भोर में ३ बजे आश्रम में कहीं कीर्त्तन नहीं होता था। कन्यापीठ की लड़कियाँ उषा-कीर्त्तन ४ बजे के बाद करती हैं।

और एक विचित्र घटना

विजयदशमी के दिन की घटना है। सवेरे विसर्जन की पूजा हो रही थी। बाटु दादा के मुँह से निकले विसर्जन मन्त्र चारों तरफ गूँज रहे थे। माँ पूजा-मण्डप के भीतर खड़ी थीं, बाहर नन्दाजी। अचानक एक तीव्र प्रकाश की झलक मानों उनकी दोनों आँखों को चौंका गयी। वह ज्योति अपूर्व थी। वे विह्वल हो उठे। वाद में जब यह बात माँ से उन्होंने कहा तब माँ ने संक्षेप में कहा—"वह ज्योति देवी की थी। विसर्जन के पूर्व क्षण का साधारण प्रकाश।"

७ अक्टूबर, १९५७

आज एक अपरिचित सज्जन माँ का दर्शन करने आये। नाम है श्री निगम कुमार चक्रवर्ती। पहले आसाम में रहते थे, इन दिनों बिहार में हैं। आजकल पटना में सब डिप्टी मैजिस्ट्रेट हैं।

पटना में रहते हुए पूजा के समय वे माँ के भक्त श्री शम्भु चौधरी (अध्यापक) के साथ मुलाकात करने गये थे। वहाँ जाकर माँ के सम्वन्ध में अनेक प्रकार की बातें सुन चुके हैं। शम्भु बाबू के कहने पर वे माँ का दर्शन करने आये हैं।

माँ के सामने उन्होंने एक सुन्दर स्वप्न का वर्णन किया।

उन्होंने स्वप्न में देखा था कि वे एक मित्र के साथ काशी में गंगा किनारे किसी एक मकान की छत पर बैठे हैं। मकान का अगला हिस्सा गंगा की ओर है। आंगन में फूल के अनेक पेड़ हैं। एक ओर एक बेल का पेड़ है। एक परमासुन्दरी महिला अनेक लड़कियों को लेकर छत पर बैठी हुई है। अचानक वह महिला कमर में आँचल लपेटती हुई एक छलांग में दालान के एक कार्निश में चढ़ गयीं और बेल के पेड़ से पत्तियाँ तोड़कर उक्त सज्जन के आँचल में देने लगीं। सज्जन ने उस महिला से पूछा कि यह सब बेल पत्तियों का क्या होगा ? तब महिला ने उन्हें गम्भीर भाव से बताया—"तुम्हारे साथ फिर मुलाकात होगी। उस समय जो होगा, देखा जायगा।"

एक सुन्दर स्वप्न

निगम बाबू ने कहा कि आश्रम में प्रवेश करते ही वे अवाक् रह गये। उन्होंने स्वत्न में जिस मकान, आंगन, बगीचा आदि देखा था। वह सब ठीक इसी तरह है। सब कुछ मानो हुबहू मिल गया है। सिर्फ बेल का पेड़ और विराट छत न देखकर वे चकित रह गये। माँ को देखकर वे समझ गये कि स्वप्न दृष्ट वही महिला हैं। चेहरे पर अद्भुत सादृश्य है। सिर्फ उम्र कुछ अधिक है।

उनकी जबानी इस घटना को सुनने के बाद हमलोगों ने हँसते हुए कहा—"स्वप्न में आपने जो कुछ भी देखा था, उसमें से कुछ भी छूटा नहीं है। बेल का पेड़ और छत भी थी। बेल का पेड़ आपने जहाँ देखा था, वहीं था। कुछ दिन हुए अचानक सूख गया। छत भी उसी प्रकार का था। अभी हाल ही में कुछ दिन हुए घाट के निर्माण के लिए तोड़ दिया गया है।"

हमलोगों की बातें सुनकर उक्त सज्जन चकित रह गये। उक्त

महिला की बातें—"फिर मुलाकात होगी"—उनके कानों में गूँज रही थी। सचमुच ठीक उसी रूप में पुनः उसी स्थान पर उसी परिस्थिति में माँ का दर्शन हुआ।

बेलपत्ती के सम्बन्ध में माँ के साथ उनकी क्या बातचीत हुई इसे हम नहीं जान सके। माँ निश्चित रूप से इस सम्बन्ध में जरूर कुछ बतायी होगीं, क्योंकि उनके साथ माँ की बातचीत एकान्त में होती रही।

माँ के कहने पर उन्होंने आश्रम में प्रसाद ग्रहण किया और विदा ली। माँ का दर्शन करके वे अत्यन्त मुग्ध हो गये। बार-बार कहते रहे—"माँ मुझे बहुत पसन्द आयीं। बिलकुल जैसे अपनी लग रही हैं।"

८ अक्टूबर, १९५७

मेरी बड़ी दीदी के आग्रह पर आज आश्रम में लक्ष्मी पूजा का आयोजन किया गया है। शाम के समय चण्डी-मण्डप में पूजा आरम्भ हुई। माँ अन्त तक वहाँ बैठी रहीं। रात को अनेक भक्त माँ के सामने प्रसाद पाते रहे।

आश्रम में बड़ी दीदी द्वारा लक्ष्मी पूजा

गहरी रात को भीड़ घट जाने के बाद पूना के नन्दाजी और उनकी पत्नी के विशेष आग्रह पर जयन्ती उत्सव के समय निर्मित अष्ट धातु के विशाल सिंह (आसन) पर माँ को एक बार बैठाया गया। नन्दाजी और उनकी पत्नी माँ का सिंहवाहिनी रूप दर्शन कर धन्य हुए। यह समाचार पाकर और भी बहुत से लोग दौड़ कर आये।

१७ अक्टूबर, २९५७

इधर कई दिनों से मेरे कमर में काफी दर्द है। आजकल मैं

ज्यादातर सोयी हुई रहती हूँ। ज्यों-ज्यों रात गहरी होती गयी, मेरा दर्द बढ़ता गया। माँ अन्नपूर्णाजी के मन्दिर के ऊपर वाले कमरे में सोयी हुई थीं। माँ का शरीर ठीक नहीं है, इसलिए माँ को समाचार देने के लिए मना कर दिया। मेरे निकट दुर्गा (जितेन दादा की पत्नी) अरुणा और सती थी। बुनी न जाने किस काम से कमरे में आयी तब दुर्गा ने इशारे से कहा कि माँ को यह समाचार दे दिया जाय।

श्री श्री माँ की कृपा

बुनी ने तेजी से जाकर माँ से मेरी तबीयत के बारे में समाचार दिया। माँ समाचार पाकर नीचे उतर आयीं। मेरे कमरे में घुसते ही घर का सामान इधर-उधर कराकर मेरी चौकी हटवायीं। यह सब इन्तजाम करने के बाद बिछौने के समीप एक कुर्सी पर बैठती हुई बोलीं—"दीदी, इस वक्त तुम्हारे दर्द में कमी हुई।"

माँ ने इस ढंग से पूछा कि मैं उनकी ओर अवाक् होकर देखती रह गयी। कहने लायक कोई बात नहीं थी, पर मैंने अनुभव किया कि माँ के कहने के साथ ही साथ दर्द की तीव्रता घट गयी।

इसके पहले ही डा० गोपाल दादा को समाचार दिया गया था। वे आ गये थे। इंजेक्शन लगाने के लिए अपने साथ एक डाक्टर को और लाये। डाक्टर बाबू ने माँ से कहा—"माँ, दीदी के दर्द वाले स्थान पर जरा हाथ लगा कर देखो।"

डाक्टर बाबू के कहने पर मेरा कुर्ता उठाकर दर्द वाले स्थान को उँगली से दिखाने लगीं। देखते ही देखते माँ अचानक बोल उठीं—"देखिए पिताजी न जाने क्या फट से हट गया।"

माँ की बात सुनकर लोग चकित रह गये। माँ का सब कुछ अलौकिक है वर्ना दर्द वाले स्थान से क्या हट जायगा। कुछ देर

बाद डाक्टर वावू से माँ ने पूछा—"पिताजी, दर्द तो घट गया है, क्या इंजेक्शन लगाना आवश्यक है।"

डाक्टर बावू ने जवाव दिया—"माँ, इंजेक्शन देने में कोई हर्ज नहीं है, बल्कि अच्छा ही होगा।"

इन्जेक्शन देने के बाद माँ धीरे-धीरे चली गयीं। साथ ही साथ मैं भी सो गयी।

१८ अक्टूबर, १९५७

आज सवेरे उठ कर देखा दर्द का कहीं नामोनिशान नहीं है। कैसे दर्द गायव हो गया, समझ नहीं सकी। यह ठीक है कि इंजेक्शन दिया गया था, पर उसके बहुत पहले से ही दर्द घटता जा रहा था। माँ कमरे में आकर केवल सामानों को इधर-उधर करवाती रहीं। इसके भीतर क्या रहस्य छिपा है, यह कौन बता सकता है। बाद में डाक्टर बाबू के अनुरोध पर मेरे दर्द वाले स्थान को उँगली से दिखाती हुई बोलीं—"न जाने क्या हट गया।"

माँ की यह सब सूक्ष्म घटना हमलोगों के बुद्धि के बाहर की है। उनके लिए असाध्य कुछ भी नहीं है। सामान्य स्पर्श से तीव्रतम रोग यन्त्रणा निरामय हो सकता है। हमलोगों की जीव बुद्धि ऐसी है कि अज्ञान का अंधकार दूर नहीं हो रहा है। उन्हें हम कहाँ पहचान पा रहे हैं।

२१ अक्टूबर, १९५७

कल से आश्रम में कालीपूजा का आयोजन होने वाला है। आज दोपहर को माँ विश्राम में जाते समय

आश्रम में कालीपूजा

अचानक नारायण स्वामीजी को बुलाकर

कहा—काली मूर्त्ति आज ही स्थापित करके रख दो।

माँ के निर्देशानुसार आज शाम के समय काली मूर्त्ति मण्डप की वेदी के ऊपर स्थापित कर दी गयी। विधिवत् आरती भी हुई।

२२ अक्टूबर, १९५७

आज काली पूजा है। पूजा का साज, नैवेद्यादि, भोग आदि सब कुछ माँ की उपस्थिति में सर्वांग रूप से सुन्दर ढंग से हो गया। रात १० बजे के बाद पूजा आरम्भ हुई। पूजा के अन्त तक माँ बैठी रहीं और प्रत्येक कार्य ठीक ढंग से हो जाय, इस ओर नजर रखती रहीं। श्री गोपीनाथ कविराजजी पूजा के समय देवी के निकट आकर स्थिर भाव से बैठे रहे।

पूजा, भोग और आरती समाप्त होते-होते रात के १।। बज गये। लोगों ने बड़े आनन्द के साथ प्रसाद ग्रहण किया। आगामी कल अन्नकूट है। उसकी व्यवस्था आज से आरम्भ हो गयी। माँ अब विश्राम करने नहीं गयीं। इधर घूमती हुईं सभी को उत्साह प्रदान करती रहीं।

२३ अक्टूबर, १९५७

सूर्योदय के साथ ही साथ अन्नकूट भोग तैयार हुआ। एक बजे के पहले ही भोग निवेदन और आरती हो गयी। फल मिठाई और भोग के अन्य पदार्थों को लेकर १५६ पद हो गया। इन सब पदों को थालियों में सजाकर भोग का आयोजन किया गया। बड़ा ही अपूर्व दृश्य था।

लगभग ५०० से अधिक नर-नारी, बालक-बालिकाओं ने आश्रम में अन्नकूट का प्रसाद ग्रहण किया। माँ ने स्पष्ट रूप से निर्देश दिया था कि आज के दिन कोई भी प्रसाद से वंचित न रहे। साक्षात् अन्नपूर्णा के भण्डार से विमुख होकर जाने का अवकाश कहाँ। प्रसाद ग्रहण के समय माँ अपने हाथ से लोगों को कुछ प्रसाद वितरण करती रहीं। अन्नकूट के दिन माँ के हाथ से प्रसाद ग्रहण कर लोग कृतार्थ हो गये। शाम के बाद सब काम समाप्त होने पर माँ थोड़ी देर के लिए विश्राम करने गयीं। कल शाम से माँ को विश्राम का अवकाश नहीं मिला है। अस्वस्थ रहते हुए माँ किस तरह इतने समय तक खड़ी-खड़ी यह सब देख सुन रही थीं, यह विश्वास करना कठिन है। साधारण मनुष्य के लिए ऐसा करना किसी तरह सम्भव नहीं हो सकता।

आश्रम में अन्नकूट का विराट उत्सव

दूसरी ओर माँ के अनुपस्थिति के बिना यह सब कार्य सर्वांग सुन्दर ढंग से होना सम्भव नहीं था। माँ स्वयं पूर्ण हैं। इसलिए माँ का सारा कार्य सटिक और पूर्ण हो जाता है। माँ की असीम कृपा से ही हमलोग इस तरह शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग प्राप्त कर रहे हैं। इस तरह सुयोग लाभ करना सचमुच दुर्लभ है।

२४ अक्टूबर, १९६७

काशी में दो महीने रहने के बाद आज माँ विन्ध्याचल जाने वाली हैं। इतने दिनों तक माँ यहाँ कभी नहीं ठहरी थीं। स्थानीय भक्त वृन्द और आश्रमवासी बालक-बालिकाओं को माँ को लेकर इस बार आनन्द करने का पर्याप्त सुयोग मिला।

तीसरे पहर ३ बजे के लगभग माँ मोटर से रवाना हो गयीं।

जो लोग बाहर से आये हुए थे। वे लोग भी माँ के साथ चल दिये। लगभग ५०-५२ आदमी माँ के साथ चल दिये। मेरा शरीर ठीक नहीं है। इसलिए माँ मुझे यहाँ विश्राम करने के लिए कह गयीं।

२७ अक्टूबर, १९५७

विन्ध्याचल से नित्य माँ का समाचार प्राप्त हो रहा है। कोई न कोई वहाँ नित्य आ रहा है। समाचार मिला कि माँ का शरीर ठीक है। विन्ध्याचल में विश्राम करने का पर्याप्त अवसर मिल रहा है।

आज रात को ज्योतिर्मय दादा (श्री कविराजजी के गुरु भ्राता, स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस के शिष्य) मुझसे मिलने आये थे। आगामी कल आप भी विन्ध्याचल जाने वाले हैं। आपकी जबानी एक सुन्दर घटना का पता चला। इस बार नवमी पूजा के दिन

एक सुन्दर घटना

इन्हें सपरिवार प्रसाद पाने के लिए निमन्त्रित किया गया था। पर घर के लोग अस्वस्थ रहने के कारण वे स्वयं और कोई नहीं आ सका। माँ ने आश्रम से इनके यहाँ प्रसाद भेजने के लिए कह दिया था। आश्चर्य की बात है कि उक्त प्रसाद का सामान्य अंश ग्रहण करते ही उनका रोग दूर हो गया। जब उक्त प्रसाद को और लोगों ने ग्रहण किया तब वे सब भी रोग मुक्त हो गये। ज्योतिर्मय दादा ने कहा कि उस तरह सुस्वादु और सुगन्ध युक्त प्रसाद खाने को जीवन में कभी नहीं मिला है।

३१ अक्टूबर, १९५७

आज १० बजे के लगभग अचानक माँ विन्ध्याचल से यहाँ

आयीं। श्री विपिन चन्द पाल एक्जीक्यूटीव ऑफिसर, लखनऊ म्युनिसपल बोर्ड माँ को ले आये हैं। आप कई दिनों से माँ के साथ विन्ध्याचल में हैं। माँ को अप्रत्याशित रूप से पाकर आश्रमवासी आनन्द मग्न हो उठे। इस तरह अचानक चले आने का कारण विन्ध्याचल या यहाँ के किसी को नहीं कहा। अब माँ की जबानी धीरे-धीरे सभी बातें सुनने में आयीं।

करुणामयी माँ की मेरे प्रति असीम करुणा

कल माँ विन्ध्याचल में लेटी हुई देख रही थीं कि लीला हो रही है। वहाँ हरिबाबाजी आदि बहुत से लोग और माँ भी बैठी हुई हैं। कुछ देर बाद माँ अन्यत्र जाकर खड़ी हो गयीं। भाव ऐसा था जैसे लीला तो न जाने कितनी बार देखा गया है। ऐसे समय हरिबाबाजी ने माँ से आकर कहा—"दीदी तो गयी।" उसके साथ ही साथ दुलार भरे स्वर में बोलीं—"जा—ओ।" माँ के मुँह से यह बात सुनकर मेरा शरीर रोमांचित हो उठा। माँ से मैंने पूछा—"गयी क्या ?" माँ हंसती हुई बोलीं—"जैसे कोई किसी को बिना देखे नहीं रह सकता उसी तरह और क्या।"

इतना कहने के बाद फिर बोलीं—"यह बात वहाँ किसी को बिना बताये तेरे पास आकर कहूँगी यह ख्याल था, इसलिए कह गयी।"

माँ ने आगे कहा—"किसी भी बार इस शरीर का मुहूर्त देख कर आना नहीं होता। इस बार मुहूर्त देखकर आयी हूँ।" माँ की बात सुनने पर अवाक रह गयी। करुणामयी माँ की कितनी अपार करुणा है। वे कृपा करके दर्शन देने के लिए विन्ध्याचल से यहाँ आयी हैं। कल रात को मेरी तबीयत ज्यादा खराब थी। मेरी हालत देखकर कुछ लड़कियाँ डर गयी थीं। मैं कै करते-करते हैरान

हो गयी थी। मन ही मन कह रही थी—"माँ, अब बर्दाश्त नहीं हो रहा है।"

लम्बे अर्से तक अस्वस्थ रहने के कारण सहन शक्ति घट गयी है। रोगों से लड़ने की ताकत समाप्त हो गयी है। इसलिए मन ही मन माँ के श्री चरणों में प्रार्थना करती रही। मेरी कातर प्रार्थना तुरन्त माँ के पास पहुँची। माँ भी मेरी अस्वस्थता का विवरण सुनकर कह रही थीं—"हाँ; देख रही थी कि तू कै करते-करते बिलकुल लस्त होकर पड़ी हुई है।" माँ की इस असीम करुणा की बातें स्मरण करते हुए मुझे एक गीत याद आ गयी—

अयोग्य अधम बले तो मोरे
कम करे किछू दाओ नी।
जा दियाछ तार अयोग्य भाबिया
काड़िआओ किछू नाओ नी।
तोमार आसिस धरी नाई शिरे
पाये ढले गेछि चाही नाई फिरे;
तोबुओ तो तुमि केवलि दियेछ
प्रतिदिन किछू चाओनि॥"

माँ के असीम कृपा का निर्देशन पग-पग पर पाती हूँ, फिर भी हमलोगों का अबुझ मन इसे समझने में सक्षम नहीं है। माँ स्वयं कृपा करके हमें समझने की शक्ति दें तभी यह सम्भव है।

भोजनादि के बाद माँ पुनः विन्ध्याचल के लिए रवाना हो गयीं।

डा० नलिनी ब्रह्म पी० एच० डी० कलकत्ता विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यापक कुछ दिनों से पैर में चोट लगने के कारण आश्रम में हैं। माँ के निकट रहने के लिए कलकत्ता से आये हुए हैं। माँ ने यहाँ आकर उन्हें इन्वेलिड चेयर पर बैठाकर ऊपर

वाले कमरे में रहने का इंतजाम करवा दिया। माँ चारों तरफ बहुत ध्यान रखती हैं।

५ नवम्बर, १९५७

शाम के समय विन्ध्याचल से पाल साहब अपनी मोटर लेकर आये। माँ मुझे विन्ध्याचल बुलायी हैं। कई दिनों से मेरी तबीयत ठीक नहीं है। शायद इसलिए माँ स्थान परिवर्तन करवा रही हैं।

तीसरे पहर ५।। बजे के लगभग में विन्ध्याचल पहुँच गयी। यहाँ आकर सुना कि माँ की तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए आज शायद माँ नीचे नहीं उतरेंगी। माँ से पूछने के बाद मुझे कुर्सी पर बैठाकर ऊपर ले जाया गया।

कुछ देर बाद माँ नीचे आयीं। मेरे कमरे में मौन तक बैठी रहीं। बीच-बीच में बातचीत करती रहीं। मौन के बाद ऊपर विश्राम करने चली गयीं।

६ नवम्बर, १९५७

आज माँ जरा देर से उठीं फिर मेरे कमरे में आकर बैठीं। माँ कृपा करके स्वयं उतर आयीं। मुझमें ऊपर जाने की शक्ति नहीं है। यह बात अलग है कि मुझे कुर्सी पर बैठा कर ऊपर ले जाया जाय।

कुछ देर बातचीत करने के बाद जब भोजन का समय हुआ तब माँ ऊपर चली गयीं।

७ नवम्बर, १९५७

बम्बई से आज सवेरे भइया (श्री बी० के० शाह, मैनेजिंग डाइरेक्टर, न्यू इण्डिया इंश्योरेंश कम्पनी) आये।

आज शाम को चन्द्र ग्रहण है। ग्रहण के समय मुझे माँ के कमरे में ले जाने की बातचीत थी। पर दर्द की वजह से ऊपर जाने का साहस मुझमें नहीं हुआ।

इधर माँ का ख्याल चारों तरफ पूरी तरह रहता है। ग्रहण के समय कीर्त्तन आरम्भ हो गया। सभी लोग माँ के कमरे में बैठे हैं। माँ जल्दी से मेरे कमरे में आयीं और मुझे एक माला देकर ऊपर चली गयीं।

रात १० बजे तक माँ के सामने कीर्त्तन होता रहा। ग्रहण छूट जाने के बाद भोग बनाया गया तब लोगों ने प्रसाद पाया।

१० नवम्बर, १९५७

यहाँ आने के बाद से माँ यथासम्भव विश्राम कर रही हैं। माँ का शरीर इसलिए पहले से कहीं अधिक ठीक है। माँ अपनी इच्छानुसार चल-फिर रही हैं और खा-पी रही हैं।

११ नवम्बर, १९५७

आज शाम के समय मीरजापुर से कुछ सरकारी कर्मचारी माँ का दर्शन करने आये। उनमें से किसी ने प्रश्न किया कि सरकारी काम में नियुक्त रहने पर साधन-भजन करने का समय कहाँ मिलता है?

माँ ने कहा—"असली सरकार का नौकर बनो। उसी मूल सरकार से ही यह सरकार है। जिस प्रकार ध्यान लगाकर सरकारी काम नियमित रूप से करते हो उसी प्रकार इस शरीर की

असली सरकार के नौकर बनो

ओर ध्यान लगाना उचित है। सेवा-वुद्धि से अगर गृहस्थी चलाया जाय तव वन्धन का कारण नहीं होता। लक्ष्य वही रहते हैं। पर उस सेवा-वुद्धि में स्थिर रहने के लिए (जैसे तुमलोग घड़ी में एक वार चाभी देते हो) सवेरे-शाम एक वार इधर भी चाभी दिया करो। अर्थात् कुछ देर स्थिर भाव से वैठकर उनका ध्यान-जप किया करो।"

माँ के मुँह से यह सब वातें सुनकर लोग आनन्दित हो उठे।

१२ नवम्बर, १९५७

आज सवेरे एक फ्रांसीसी सज्जन माँ का दर्शन करने के लिए आये हैं। सुना कि आनन्द प्रिया ब्रह्मजी (राजमाता कमलेन्दुमती शाह टेहरी गढ़वाल) ने इन्हें माँ के निकट भेजा है। आपका नाम जियं क्रिश्चियां है।

माँ के दर्शन के लिए कई विशिष्ट विदेशी व्यक्ति

आत्मानन्द (जो कि हमारे आश्रमवासी एक आस्ट्रीयन महिला हैं, मिस ब्लांका श्लाम) उन्हें माँ के कमरे में ले आयी। आत्मानन्द के माध्यम से उनकी माँ के साथ देर तक परमार्थिक बातचीत हुई। माँ के दर्शन और उपदेश से वे विशेष रूप से मुग्ध हुए।

१४ नवम्बर, १९५७

कल माँ विन्ध्याचल से काशी लौट जाने वाली हैं।

३–४ दिन हुए काशी से गोपीनाथ कविराजजी और अमूल्य दादा (ढाका विश्वविद्यालय के लॉ विभाग के अवकाश प्राप्त

अध्यापक श्री अमूल्य कुमार दत्त गुप्त) माँ के निकट आये हैं। ये लोग भी माँ के साथ वापस जायेंगे। माँ का दर्शन करने के लिए एक अमेरिकी महिला आयी हैं। आपका नाम है—श्रीमती जेनीफर जोन्स। सुना कि आप संसार की एक श्रेष्ठ अभिनेत्री हैं। माँ का नाम सुनने के कारण आप काशी आयीं। वहाँ से समाचार पाकर विन्ध्याचल चली आयीं। आप भारत में योगाभ्यास करने आयी हैं। आपका स्वभाव अत्यन्त मधुर है।

बातचीत के सिलसिले में उन्होंने माँ से कहा कि भारतवर्ष उनके निकट अत्यन्त परिचित सा लग रहा है। भारत का सब कुछ कितना अपना और कितना प्रिय है। माँ को देखकर आप अत्यन्त चमत्कृत हो उठी हैं। बार-बार कह रही हैं कि इतने दिनों बाद भारतवर्ष आना मेरे लिए सार्थक हुआ। कुछ दिनों के बाद ही इन्हें अमेरिका वापस चले जाना है। भारत छोड़ने के पहले पुनः कैसे माँ के साथ भेंट होगी यह वे जानना चाहती हैं।

१५ नवम्बर, १९५७

आज भोजनादि के बाद १॥ बजे के लगभग हमलोग विन्ध्याचल से रवाना हुए। पाल साहब की गाड़ी से माँ, कविराजजी, अमूल्य दादा गये। दूसरी गाड़ी से मैं शाश्वतानन्द स्वामी, कुसुम ब्रह्मचारी, उदास आदि को माँ छोड़ गयीं।

४ बजे के लगभग माँ को लेकर हमलोग काशी आश्रम पहुँचे। काशी में पुनः आनन्द का हाट लग गया।

१७ नवम्बर, १९५७

अगले २२ तारीख से दिल्ली आश्रम में संयम महाव्रत का

अनुष्ठान होने वाला है। इस बार आगा साहब (श्री श्यामसुन्दर नाथ आगा, आई० पी० एस० उत्तर रेलवे के चीफ सिक्यूरिटी आफिसर) के आग्रह पर दिल्ली में सप्ताह मनाया जा रहा है।

दिल्ली का आश्रम अभी तक अधूरा है। इस वार इस अनुष्ठान उपलक्ष्य में आश्रम को सम्पूर्ण करने की आवश्यकता अनुभव करने पर परमानन्द स्वामी पिछले २॥ माह से वही हैं। समाचार मिला है कि उनके अक्लान्त परिश्रम के फलस्वरूप स्थानीय भक्तों की सहायता से, आश्रम में विराट हाल और कई नये काम हो गये हैं। आश्रम में बिजली लग गयी है।

संयम सप्ताह में भाग लेने के लिए आज ही आश्रम से कुछ लोगों को माँ ने दिल्ली रवाना कर दिया। माँ परसों रवाना होने वाली हैं। फिलहाल मैं काशी में ही रहूँगी।

१९ नवम्बर, १९५७

आज दिल्ली एक्सप्रेस से माँ रवाना हो गयीं। १२ बजे के लगभग माँ मोटर द्वारा मुगलसराय जाकर गाड़ी पर बैठीं। माँ के साथ ब्रह्मचारी भरत, भुवन दादा सपत्नीक, वुनी, सती आदि कुछ लोग गये।

२० नवम्बर, १९५७

आज तार प्राप्त हुआ कि आज सवेरे माँ सकुशल दिल्ली पहुँच गयीं।

२३ नवम्बर, १९५७

आज बुनी का पत्र मिला। उस दिन माँ की गाड़ी कुछ लेट थी। माँ का स्वागत करने के लिए स्टेशन पर आगा साहब सपत्नीक,

दिल्ली के आश्रम में संयम सप्ताह महाव्रत

टेहरी के महाराजा लेफ्टिनेण्ट कर्नल श्री मानवेन्द्र शाह और महारानी सूरज कुमारी, नारायण दासजी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आगा साहब स्वयं मोटर चलाकर माँ को आश्रम ले गये थे। मार्ग में माँ आदित्य-नारायणजी के निवास स्थान पर श्री श्री हरिबाबाजी से मुलाकात करती हुई गयीं।

हरिबाबाजी कई दिन पहले से ही दिल्ली में आये हैं। दिल्ली आकर वे अपने भक्त आदित्यनारायणजी के यहाँ ठहर गये थे।

नया आश्रम बड़े सुन्दर ढंग से निर्मित हुआ है। इतने सुन्दर ढंग से, इतने कम समय में कैसे बन गया, यह देखकर लोग चकित रह गये। हाल वाला कमरा बड़ा सुन्दर बना है। इसमें ५०० से अधिक व्यक्ति आसानी से बैठ सकते हैं। इसके अलावा एक नया कमरा भी बनाया गया है। आश्रम के चारों ओर दीवार बनवाकर बगीचा लगवाया गया है। चन्द्रलोक के विशाल इलाके में यह आश्रम दूर से चित्र की भांति दिखाई देता है।

आश्रम के निर्माण के कार्य में स्वामी परमानन्दजी को सबसे अधिक सभी विषयों में सहायता देने वाले हैं—नारायणदास भाई, (रायबहादुर नारायणदास रिटायर्ड इक्जीक्यूटिव इंजीनियर दिल्ली) आपकी इस अतुलनीय सहायता और पर्यवेक्षण के लिए दिल्ली के सभी भक्त आपके निकट विशेष रूप से ऋणी रहेंगे। विभिन्न कठिन विषयों में वर्मा साहब (श्री प्रेमहरिलाल वर्मा सदस्य यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन) ने जिस प्रकार मदद दी है, वह अविस्म-रणीय है। इतने दिनों बाद दिल्ली के भक्तों की इच्छा पूरी हुई।

२४ नवम्बर, १९५७

दिल्ली से प्राप्त पत्र से विस्तारित समाचार प्राप्त हुआ पिछले २१ तारीख को तीसरे पहर माँ को दिल्ली के प्रसिद्ध कण्ट्राक्टर तीर्थरामजी के निवास स्थान पर ले जाया गया था। तीर्थरामजी ने दिल्ली के आश्रम के निर्माण में यथा साध्य सहायता दी है। इसके पहले उन्होंने माँ को कभी नहीं देखा था। अपने भवन में माँ का उन्होंने बड़े सुन्दर ढंग से स्वागत किया।

खेद का विषय है कि तीर्थरामजी की पत्नी पक्षाघात के कारण अचल हैं। कुर्सी पर बैठाकर उन्हें माँ के निकट लाया गया था। माँ ने उन्हें विशेष रूप से नाम करने को कहा है। माँ की कृपा से शायद वे कुछ स्वस्थ हो जाँय, इसीलिए लोग मन ही मन माँ के श्री चरणों में प्रार्थना करते रहे।

उसी दिन शाम को श्री हरिबाबाजी अपने साथ आये लोगों को लेकर आश्रम में आये थे। हरिबाबाजी आश्रम के एक कमरे में ठहरे हैं। उनके साथ आये लोगों को एक तम्बू के भीतर रखा गया है।

परसों सवेरे से माँ की उपस्थिति में संयम महाव्रत आरम्भ हो गया है। बड़े हाल को फूल-माला चित्रों से बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया है।

हाल के अन्त में माँ और महात्माओं को बैठने के लिए उच्च आसन की व्यवस्था की गयी है। हाल को दो भागों में बाँटकर नर-नारी व्रतिओं के लिए बैठने का इंतजाम किया गया है। सत्संग का प्रबन्ध माँ के निर्देशानुसार हर वर्ष की भाँति ब्रह्मचारी कान्ति भाई कर रहे हैं। कीर्त्तन आदि करने के लिए माँ देहरादून से

पुष्प को बुलवायी हैं। माँ के निकट ब्रह्मचारी हर प्रसाद भी हैं। इस बार दुर्भाग्यवश विभू उत्सव में भाग नहीं ले सका।

सप्ताह में योगदान देने के लिए विभिन्न स्थानों से २०० से अधिक भक्त वृन्द आये हैं। भारत का शायद ही कोई प्रान्त बचा होगा जहाँ से कोई भक्त न आया हो। महात्माओं में भी बहुत से लोग आये हैं। श्री कृष्णानन्द अवधूतजी और वृन्दावन के श्री चक्रपाणिजी आश्रम में हैं। इसके अलावा बाहर से अन्य-महात्मा शरणानन्दजी और हृषीकेश के श्री शुकदेवानन्दजी महाराज आकर इस उत्सव में आनन्द वर्धन कर रहे हैं।

माँ के आर्कषण से अनेक राजा-महाराजाओं द्वारा संयम का काठिन्य वरण

राजा-महाराजाओं में बहुत से लोग सप्ताह में व्रती हुए हैं। सोलन के राजा साहब, टेहरी के महाराजा-महारानी, मैसूर की महारानी, अम्बर के राजा साहब, कुचामन के राजा प्रताप सिंह जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। मण्डी के राजा साहब मेजर सर योगेन्द्र सेन स-परिवार आकर आश्रम के एक तम्बू में आकर ठहरे हुए हैं।

इन राजाओं और महाराजाओं द्वारा संयम व्रत में योगदान देने का दृश्य एक दर्शनीय दृश्य रहा है। ये लोग जब अपना स्वा-भाविक विलास-बसन और आडम्बर त्यागकर साधारण तितिक्षा-परायण व्रतिओं की भाँति शुद्ध वस्त्र परिधान कर, हाथ में आसन लिए संयम-सप्ताह में भाग लेने लगते हैं। उस समय का दृश्य देखकर बहुत से लोग मुग्ध हो जाते हैं। कुछ लोगों को कहते सुन चुकी हूँ कि प्राचीन भारत में यही आदर्श रहा। ऋषियों की भाँति राजाओं का आचरण और जीवन-यात्रा साधारण गृहस्थों के मन में भी एक अपूर्व उत्साह उत्पन्न करता है। माँ के श्री चरणों में

आकर किस तरह वे लोग अपना भोग-विलास और दैविक नशा की सामग्री त्यागकर संयमित जीवन यापन करने में सक्षम होते हैं, सचमुच में हमलोगों के लिए यह एक ज्वलन्त दृष्टान्त है। ऐसे सप्ताहों का संयमित जीवन का प्रभाव इन लोगों के जीवन में धीरे-धीरे परिव्याप्त हो सकता है, इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं है। अनेक लोगों के जीवन यात्रा की धारा इस बीच सम्पूर्ण रूप से बदल गयी है। क्यों? संयम-सप्ताह का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या है, इस सम्बन्ध में अनेक बातें माँ के मुँह से अनेक बार प्रकट हो चुकी हैं। अक्सर लोग कहा करते हैं कि यह संयम-सप्ताह वर्ष में एक बार न होकर और अधिक बार हो तो अधिक आनन्द प्राप्त हो सकता है। आश्रम के इस अनुष्ठान के अनुकरण पर आजकल भारत में कई जगह संयम-सप्ताह का प्रचलन हुआ है।

दिल्ली के पत्र से यह भी समाचार मिला कि व्रतिओं के रहने के लिए तम्बू में इंतजाम किया गया है। आश्रम की भूमि पर तथा बाहर खुले मैदान में ७० तम्बू लगाये गये हैं। दूरसे देखने पर सैन्य शिविर की भाँति लगता है।

२६ नवम्बर, १९५७

बुनी के पत्र से मालूम हुआ कि माँ का शरीर ठीक है। यद्यपि विश्राम का मौका कम मिल रहा है। सप्ताह का प्रोग्राम नियमित रूप से चल रहा है। माँ हर समय वहाँ रहने का प्रयत्न करती हैं।

पिछले २४ तारीख को राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादजी की बड़ी बहन माँ से मिलने आयी थीं। माँ को देखकर वे अत्यन्त मुग्ध हो उठीं। उसी दिन मोरारजी भाई देसाई (बम्बई के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री) माँ के साथ एकान्त में बहुत देर तक बातचीत

१५

करते रहे। आप इसके पूर्व कई बार माँ के निकट आ चुके हैं। इस बार जब माँ दिल्ली गयीं तब उसी गाड़ी से मोरारजी देसाई भी दिल्ली गये थे। मुगलसराय स्टेशन पर माँ के साथ उनकी मुलाकात हुई थी।

२८ नवम्बर, १९५७

दिल्ली से प्राप्त पत्र से माँ का समाचार प्राप्त हुआ। सत्संग में नित्य काफी भीड़ हो रही है। माँ के साथ एकान्त में बातचीत करने के लिए अनेक लोग व्याकुल हैं। दिन-रात इसी प्रकार की बातें होती रहती हैं।

पिछले २६ तारीख को मौन के बाद माँ कुछ विशेष देख चुकी हैं। जिसे सत्संग में हरिबाबाजी आदि को बताती रहीं।

माँ सूक्ष्म में देख रही थीं कि एक कोई सारा शरीर वस्त्रावृत होकर आया और ध्यान करने बैठ गया। सिर्फ चेहरे का एक अंश दिखाई दे रहा था। उसे देखते ही माँ पहचान गयीं। वे स्वयं महावीरजी थे। उनके शरीर से कपड़ों को भेदती हुई दीप्ति प्रकट हो रही थी।

माँ का एक सूक्ष्म दर्शन

एक और अति दीर्घकाय महापुरुष श्वेत वस्त्र पहने, सर पर घुंघराले बाल, खड़े होकर सामने की एक प्रौढ़ महिला के सर पर हाथ देकर आशीर्वाद दे रहे थे।

इसके अलावा एक कम उम्र की सुन्दर लड़की माँ के सामने घुम-फिर रही थी। उसके साथ हम उम्र की कई लड़कियाँ और थीं। एक अतिसुन्दर छोटा बालक निर्निमेष दृष्टि से माँ को देखते हुए हँस रहा था। यह सारी बातें माँ धीरे-धीरे कहती रहीं।

प्रत्येक वर्ष मौन के समय (संयम काल में) माँ इस तरह की घटनाएँ देखती हैं। अक्सर कुछ बातें प्रकट कर देती हैं और कभी-कभी पूरी बातें नहीं मालूम होतीं। कहने का मतलब मौन के समय माँ की उपस्थिति में समवेत रूप में ध्यान-जप का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जाता है। इस सम्बन्ध में सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है।

२९ नवम्बर, १९५७

आज बुनी के पत्र से माँ का समाचार मिला। भीड़ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। माँ को हाथ-मुँह धोने का अवसर नहीं मिलता। प्रायः दिन भर के बाद रात के समय माँ का मुँह धुलाया जाता है।

सत्संग के समय रात को जब मातृसंग का समय होता है, उस समय प्रश्नोत्तर काल में माँ बड़ी सुन्दर-सुन्दर बातें कहती हैं। माँ अपने जीवन तथा साधनाओं के बारे में बहुत सी बातें कहती हैं। वे सब बातें लिखकर नहीं रखा जा सका। यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है।

इसी बीच एक दिन रामकृष्ण डालमिया की धर्मपत्नी माँ के निकट आयी थीं। विभिन्न विषयों पर देर तक बातचीत करती रहीं। इसके अलावा अनेक विशिष्ट व्यक्ति बारबार माँ के निकट आते-जाते रहते हैं।

३० नवम्बर, १९५७

माँ की उपस्थिति में परसों संयम-सप्ताह का अनुष्ठान बड़े

सुन्दर ढंग से सम्पन्न हो गया। इस बार सप्ताह बड़ा आनन्ददायक रहा। लोगों का कहना है कि बम्बई के बाद इतना सुन्दर ढंग से सप्ताह अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। सभी लोगों के लिए खाने-पीने का प्रबन्ध बड़े अच्छे ढंग से किया गया था। किसी को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई थी। सब मिलाकर ७४ तम्बू लगाये थे। दूर से देखने पर प्रयाग के कुम्भमेला जैसा लग रहा था।

यह सब मैं नहीं देख सकी इसलिए अनेक लोग दुःख प्रकट करते रहे। माँ भी कह रही थीं—"दीदी को फोटो भेजकर दिखाना चाहिए।" टेहरी के महाराजा ने बहुत से चित्र लिये हैं। वह सब मेरे निकट भेजा जायगा।

सप्ताह के अन्तिम दिन आश्रम के बड़े हाल का नाम रखा गया है—"नाम ब्रह्म मन्दिर।" एक संगमरमर के पत्थर पर महामन्त्र लिखा गया है। श्री श्री हरिबाबाजी तथा अन्य महात्माओं के द्वारा उक्त प्रस्तरलिपि का आवरण उन्मोचन किया गया है। माँ की इच्छानुसार रविवार के दिन वहाँ अखण्ड महा-मन्त्र नाम-यज्ञ होने वाला है।

नाम ब्रह्म मन्दिर

उसी दिन भारत सरकार के मन्त्री श्री जगजीवनराम सपत्नीक माँ का दर्शन करने आये थे। इन लोगों ने पहले पहल माँ का दर्शन किया। एकान्त में माँ के साथ साधन-भजन के बारे में बातचीत करते रहे। जयपुर की महारानी भी माँ के साथ बातचीत करने के लिए आयी थीं।

अन्तिम दिन रात के समय मौन के बाद संयमित जीवन के साथ ध्यान-जप करने और गुरु का आदर्श पालन करने पर किस प्रकार आत्मा के प्रकाश में सहायता मिलती है। इस सम्बन्ध में

माँ काफी देर तक प्रवचन देती रहीं। व्रतिओं और उपस्थित लोगों को माँ गीता और रामचरित मानस की एक-एक प्रति अपने हाथ से बाँट चुकी हैं।

१ दिसम्बर, १९५७

दिल्ली से प्राप्त पानु के पत्र से बहुत सी बातों का पता चला माँ का शरीर एक तरह से ठीक है। अपने इस शरीर को लेकर वे इस तरह के शोरगुल वाले उत्सव में योगदान दे रही हैं। यह सब देखकर चकित रह जाना पड़ रहा है। सप्ताह के अन्तिम दिन तो माँ रात भर भक्तों के बीच रहीं। रात १॥ बजे के बाद महानिशा का ध्यान हो जाने पर माँ अपने कमरे में आयीं। उसके बाद लोग एक-एक कर प्राइवेट में बातें करने लगे। रात ३ बजे तक माँ लोगों से प्राइवेट में बातचीत करती रहीं। पुनः ४ बजने के पहले ही स्वयं उठकर हाल में आयीं और सुमधुर स्वर में नाम करने लगीं। अचानक इतने सवेरे माँ का गायन स्वर सुनकर भक्त वृन्द दौड़े आये और सभी लोग माँ के साथ नाम करने लगे।

उसी दिन सवेरे हाल में गायत्री यज्ञ हुआ था। उसके बाद भण्डारा का आयोजन किया गया। व्रती और आगन्तुकों ने बड़े सन्तोष के साथ प्रसाद ग्रहण किया।

एक दिन ७-८ मेम साहब माँ का दर्शन करने आयी थीं। इनमें कुछ विदेशी राजदूत की पत्नियाँ थीं। माँ के साथ बातचीत करने में आत्मानन्द माँ की सहायता करती रहीं।

पिछले २९ तारीख को माँ तथा महात्माओं को कालकाजी कालोनी में सत्संग में ले गये थे। वहाँ अनेक नर-नारी माँ का

दर्शन करने के लिए एकत्रित हुए थे। रात में माँ जब मण्डी गयी हुई थीं तब उस समय की खींची गयी फिल्म भक्तों को मण्डी के राजा साहब ने दिखाया। माँ भी वहाँ उपस्थित थीं।

आज आश्रम के हाल में अखण्ड नाम-कीर्त्तन होने वाला है। पिछली रात को महिलाएँ नाम रक्षा करती रहीं।

३ दिसम्बर, १९५७

दिल्ली शहर के विभिन्न भक्तों के घर में माँ

दिल्ली से पत्र आया है। माँ परसों सवेरे शहर के विभिन्न स्थानों से घुम-फिर आयी हैं। पहले श्री जगजीवनरामजी माँ को अपने यहाँ ले गये। उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने माला-फूल वस्त्र आदि से माँ की पूजा की। उनकी श्रद्धा और भक्ति देखकर लोग मुग्ध रह गये। जगजीवनरामजी के यहाँ अन्य अनेक विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

यहाँ से माँ को दिल्ली के रामकृष्ण मिशन में ले जाया गया। किसी विशेष धनाढ्य व्यक्ति की सहायता से वहाँ एक श्री रामकृष्ण मन्दिर की स्थापना हुई है। इसी उपलक्ष्य में इस बार वहाँ विशेष उत्सव हुआ था। उत्सव में योगदान करने के लिए माँ के निकट २-३ बार अनुरोध आया था। किन्तु संयम-सप्ताह के कारण उन दिनों जाना माँ के लिए सम्भव नहीं हुआ। उस दिन कुछ भक्त मोटर लेकर आये थे। मिशन के साधु आश्रम के सभी स्थानों का दिग्दर्शन माँ को कराते रहे।

रामकृष्ण मिशन से माँ को पी० एन० बजाज के नये मकान में ले जाया गया। श्री बजाज भारत सरकार के खाद्य विभाग के डिप्टी डायरेक्टर हैं।

तीसरे पहर अखण्ड नाम कीर्त्तन में आकर माँ लोगों के साथ देर तक घूम-घूमकर नाम करती रहीं। माँ के साथ एक कम उम्र की लड़की भी घूम रही थी। अचानक एक जगह माँ लड़की को अपने सामने खींचकर उसके कंधे पर दाहिना हाथ रखते हुए, बाएँ हाथ की उँगलियाँ मुँह से लगाकर, देर तक एक दृष्टि से सजल नैन देखती रहीं। ऐसा लगता था मानो माँ किसी असीम प्रेम सागर में डूब गयी हैं। वाह्य चेतन्य लुप्त हो गयी है। आश्चर्य की बात है कि लड़की भी स्थिर होकर खड़ी रही। इतने व्यक्तियों के रहते और माँ की यह हालत देखते हुए भी उसमें चंचलता प्रकट नहीं हुई। थोड़ी देर बाद माँ लड़की के दोनों कंधों पर दोनों हाथ रखती हुईं स्थिर भाव से खड़ी हो गयीं। कीर्त्तन के बीच माँ भावा-वेश में आ गयी हैं, यह समझते किसी को देर नहीं लगी, किन्तु माँ ने कुछ भी प्रकट नहीं किया। कहीं कुछ हो जाय, शायद इसीलिए लड़की को अवलम्बन बनाकर वे स्थिर भाव से खड़ी रहकर अपने को स्वाभाविक स्थिति में ले आने का प्रयत्न करती रहीं।

एक अलौकिक घटना

बहुत देर बाद माँ की आँखों में स्वाभाविक रूप आया तब जाकर लोग निश्चिंत हुए। इसके बाद कीर्त्तन समाप्त हो जाने पर माँ काफी देर तक तनमय होकर गाती रहीं—

"निताई डाके आय
गौर डाके आय
शान्तिपुर डुबु डुबु
नदे भेसे जाय॥"

६ दिसम्बर, १९६७

माँ के निर्देशानुसार मैं काशी एक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुई।

पिछली बार भइया जब यहाँ आये थे तब उन्होंने इस समय पर २–३ सप्ताह के लिए अच्छे डाक्टरों से जाँच कराने की बात कह गये थे। मैं कब सम्पूर्ण रूप से आरोग्य होऊँगी और माँ की सेवा कर सकूँगी यह बात तो केवल माँ ही जानती हैं।

७ दिसम्बर, १९५७

आज शाम को बम्बई पहुँची। स्टेशन पर लीला बेन आदि उपस्थित थे। मुझे यहाँ से सीधे विले पार्ले स्थित भवन में ले जाया गया।

८ दिसम्बर, १९५७

यहाँ आने के इतने दिनों बाद बत्र में माँ का समाचार पाकर निश्चिंत हुई। माँ का शरीर ठीक नहीं है, कब कहाँ जाती हैं, इन बातों के लिए मैं चिंतित थी।

माँ का शरीर और भाव दोनों ही ठीक है। पर इधर २-३ दिन से वहाँ कुछ सर्दी अधिक पड़ रही है, इसलिए माँ इच्छानुसार चल फिर नहीं पा रही हैं।

आजकल लोगों की भीड़ घट गयी है। बाहरी भक्तों में डा० पन्नालाल, मिसेज शिवदासानी, भुवन दादा आदि कुछ लोग हैं। माँ यहाँ कब तक ठहरेंगी इसका कोई निश्चय नहीं है। अन्दाज है कि अभी यहाँ कुछ दिन रहेंगी।

माँ आजकल ठीक से विश्राम कर रही हैं। पर सवेरे प्रायः कहीं न कहीं बाहर जाने का कार्यक्रम बन जाता है। दिल्ली के

राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसादजी के विशेष अनुरोध पर राष्ट्रपति भवन में माँ

असंख्य भक्तों की प्रार्थना इस रूप में माँ धीरे-धीरे पूर्ण कर रही हैं। पिछले २ तारीख को माँ को राष्ट्रपति भवन में ले जाया गया था। राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने अपने यहाँ आने के लिए माँ के निकट विशेष अनुरोध करके समाचार भिजवाया था। मां के साथ हरिवावाजी, चक्रपाणिजी, टेहरी के महाराजा-महारानी मण्डी के राजा साहब, योगी भाई, डा० पन्नालाल एवं आश्रम के कुछ लोग भी थे। राष्ट्रपति के अस्वस्थ रहने के कारण माँ तथा अन्य सभी लोगों को ऊपर उनके पूजा वाले कमरे में ले जाया गया था। माँ के निकट उन्होंने प्रार्थना की—"आप आशीर्वाद दीजिए, भगवान के प्रति मेरी भक्ति बनी रहे।" उनके परिवार के वहुत से लोग वहाँ उपस्थित थे। श्री राजेन्द्र प्रसाद की वृद्धा जेष्ठा भगिनी माँ को छोड़ने को तैयार ही नहीं हो रही थो। वे माँ के प्रति इतनी तीव्र रूप से आकृष्ट हो गयी थीं कि देखकर अवाक् रह जाना पड़ा।

दूसरे दिन सवेरे पुनः वे माँ के निकट आयीं। माँ के लिए वे विशेष रूप से व्याकुल हो उठी हैं। वृद्धा महिला माँ से राष्ट्रपति भवन में जाकर एक वार भोग लेने के लिए बार-बार अनुरोध करती रहीं।

दिल्ली के गांधी मैदान में गीता-जयन्ती उत्सव हो रहा है। लोग माँ को वहाँ सवेरे ले गये थे। तीसरे पहर बिड़ला के विशेष अनुरोध पर माँ और हरिबाबाजो आदि महात्मागण बिड़ला मन्दिर में गये। शाम का प्रोग्राम वहीं हुआ। माँ का दर्शन करने के लिए वहाँ अत्यधिक भीड़ हो गयी थी।

श्री श्री माँ के निकट विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन और आशीर्वाद की प्रार्थना

४ तारीख की भोर में हरिबाबाजी वृन्दावन रवाना हो गये। चक्रपाणिजी भी उसी दिन चले गये। अवधूतजी को अहमदावाद के कान्ति भाई मुनशा अपने साथ ले गये हैं। कान्ति भाई सपत्नीक कुछ दिनों के लिए माँ के निकट आये थे।

इसी बीच श्री जगजीवन राम सपत्नीक माँ के निकट २-३ बार आये थे। अमेरिकन फिल्म अभिनेत्री जोनीफार जोन्स माँ के यहाँ से वृन्दावन गयी थीं। दिल्ली में माँ से बातचीत करने के लिए वह पुनः आयी थीं। इसी बीच उसे अमेरिका वापस जाना चाहिए था, किन्तु माँ के साथ बातचीत किये बिना वह अपने मुल्क जाने को तैयार नहीं थी। उस दिन रात को माँ के साथ बातचीत करने के बाद दूसरे दिन हवाई जहाज से अमेरिका चली गयी।

श्री रामकृष्ण डालमिया माँ के साथ एक दिन मुलाकात करने आये थे। आजकल वे आर्थिक मामले के किसी मुकदमे में फँस गये हैं। डालमियाजी जाते वक्त माँ से कह गये हैं—"माताजी की जो इच्छा है, वही होगा। वही मेरे कल्याण के लिए, शिक्षा के लिए आवश्यक है, ऐसा मैं समझूँगा। अगर मुझे जेल की सजा हुई तो उसे भी मैं माँ का आशीर्वाद मान लूँगा।" ऐसे संकट के समय में भी उनकी निर्भीक बातें और भाव देखकर कुछ लोग चमत्कृत हो उठे।

मण्डी की रानी साहिबा के साथ काश्मीर के सदर ए-रियासत युवराज कर्ण सिंह माँ का दर्शन करने के लिए एक दिन रात को आये थे। आपकी माँ (काश्मीर के महाराजा सर हरि सिंह की

पत्नी) पहले माँ के पास आ चुकी हैं। युवराज पहले पहल माँ के निकट आये। माँ के साथ बातचीत होती रही। माँ के निकट आशीर्वाद की प्रार्थना करते रहे। काश्मीर का भविष्य अत्यन्त समस्या पूर्ण है। ऐसे समय युवराज के आगमन के फलस्वरूप माँ के आशीर्वाद से शायद काश्मीर समस्या का कुछ समाधान हो सकता है, ऐसी आशा उपस्थित भक्त वृन्दों के मन में थी।

इसी बीच एक दिन धामिजा साहब (श्री जगन्नाथ धामिजा आई० एफ० एस०, भारत सरकार के डिप्टी सेक्रेटरी) माँ को अपने यहाँ ले गये थे। वहाँ से माँ कुछ देर के लिए आगा साहब के यहाँ गयी थीं।

कल सवेरे माँ राष्ट्रपति भवन गयी थीं। डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने यहाँ भोजन करने के लिए बार-बार अनुरोध करते हुए आदमी भेजा था। आश्रम की ओर से ब्रह्मचारी कुसुम और भरद्वाज वहाँ जाकर माँ के लिए भोग का इंतजाम करते रहे। माँ के साथ सभी संन्यासी गये थे।

राष्ट्रपति भवन स्थित मुगल गार्डेन में माँ के लिए अलग से तम्बू लगाया गया था। माँ को चारों तरफ घूमा-फिरा कर दिखाया गया। स्थान अत्यन्त शान्तिपूर्ण है। माँ ने कहा है—"अत्यन्त शान्त स्थान है, मानों चिड़ियों की आवाज नहीं सुनायी देती। एकान्तवास हो गया।"

माँ का भोग हो जाने के बाद खाने-पीने का सामान राजेन्द्र प्रसादजी और भवन के अन्य लोगों के लिए माँ ने भिजवा दिया। वृद्धा महिला तो बराबर माँ के साथ थी। इसके अलावा राजेन्द्र प्रसाद जी के दो ए० डी० सी० माँ के निकट बराबर खड़े थे। पता नहीं, कब किस चीज की जरूरत पड़ जाय।

आफिस में अत्यधिक कार्य रहने के कारण राजेन्द्र प्रसादजी माँ

के भोजन के समय नहीं आ सके थे। बाद में वे माँ को मोटर पर चढ़ाने आये थे। बार-बार कहते रहे—"मेरी बहन की विशेष इच्छा थी कि आपका भोग यहाँ हो। मैंने इससे कहा था कि माँ के भोग के लायक यहाँ स्थान कहाँ है, फिर भी आप कृपा करके मेरे यहाँ चली आयीं।"

जब तक माँ की गाड़ी गेट से बाहर नहीं हो गयी तब तक वे दोनों हाथ जोड़े खड़े रहे। उनकी श्रद्धा भक्ति देखकर सभी लोग मुग्ध रह गये।

१० दिसम्बर, १९५७

आज दिल्ली से दो पत्र प्राप्त हुआ। माँ का शरीर एक प्रकार से ठीक है, जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। माँ नित्य सवेरे उठकर एक बार सत्संग में बैठती हैं। तीसरे पहर हाल में जाकर लोगों के साथ बातचीत करती हैं।

सम्भवतः माँ १३–१४ तारीख तक वहाँ रहेंगी। इसके बाद वृन्दावन जाने वाली हैं। हरिबाबाजी जाते समय माँ से विशेष रूप से यह कह गये हैं कि कम से कम कुछ दिनों के लिए आप वृन्दावन जरूर आयें।

इसी बीच एक दिन भारत के सुप्रसिद्ध न्याय विशेषज्ञ श्री गोपाल स्वरूप पाठक इलाहाबाद से माँ का दर्शन करने के लिए चुपचाप आकर सत्संग में बैठ गये थे। उन्हें पहले कोई पहचान नहीं सका था। बाद में माँ ने पहचान कर उनसे बातें कीं। वे भारत के प्रतिनिधि बनकर संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में गये थे। अभी कुछ दिन हुए वहाँ से वापस लौटे हैं। इस बार सरस्वती-पूजा इलाहाबाद स्थित उनके मकान में ही और माँ कृपा करके वहाँ पदार्पण करें, इसी के लिए वे विशेष प्रार्थना लेकर गये थे।

इस बार जन्मोत्सव सम्भवतः वृन्दावन के आश्रम में होगा। योगी भाई की भी यही राय है। संयम-सप्ताह के सम्बन्ध में बिड़लाजी विशेष प्रार्थना कर गये हैं कि अगले वैशाख माह में हृषीकेश के स्वर्गाश्रम में यह आयोजन किया जाय। वे इस आयोजन की सारी व्यवस्था करेंगे।

संयम-सप्ताह के सम्बन्ध में माँ के निकट श्री मोदी और जोधपुर की महारानी अनुरोध कर चुकी हैं। सम्भवतः इसलिए अब वर्ष में दो बार संयम-सप्ताह का आयोजन हो सकता है।

११ दिसम्बर १९५७

दिल्ली से पानु का पत्र आया है। वहाँ काफी सर्दी पड़ रही हैं। माँ के शरीर में सामान्य दर्द उत्पन्न हो गया है। २–३ दिन बाद मां वृन्दावन जाने वाली हैं। वृन्दावन मे माँ कितने दिनों तक ठहरेंगी, इसका कोई निश्चय नहीं है। वह इसलिए कि वृन्दावन, देहरादून, विन्ध्याचल सभी स्थानों में सर्दी पड़ रही है। अतएव माँ किधर जायँगी, कोई निश्चय नहीं है।

पंजाब के गवर्नर श्री चण्डिका प्रसादजी का माँ-दर्शन

परसों रात को पंजाब के गवर्नर सर चण्डिका प्रसाद सिंह माँ का दर्शन करने आये थे। इसके पहले उन्हें माँ का दर्शन करने का अवसर नहीं मिला था। एकान्त में माँ से एक घण्टे तक बातचीत करते रहे। माँ से उन्होंने कहा है—"माँ, आपके कारण न जाने कितने लोगों का संसार में आध्यात्मिक कल्याण हो रहा है। दुर्भाग्यवश मैं आपके दर्शन से इतने दिनों तक वंचित रहा। राजेन्द्र बाबू के साथ अगर आपकी मुलाकात एकान्त में हुई होती तो अच्छा होता।"

१६ दिसम्बर, १९५७

वृन्दावन से प्राप्त बुनी के पत्र से माँ का समाचार मिला। माँ कल दोपहर को १॥ बजे के लगभग वर्माजी की गाड़ी से वृन्दावन की ओर रवाना होकर वहाँ पहुँचीं। माँ के साथ मण्डी की रानी साहिबा, उनके भाई और भाभी भी पहुँचे हैं।

दिल्ली में कल सवेरे सीरिया के राष्ट्रदूत माँ का दर्शन करने आये थे। माँ के साथ एकान्त में साधन-भजन के बारे में बातचीत करते रहे।

१८ दिसम्बर, १९५७

वृन्दावन से प्राप्त पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ नियमित रूप से हरिबाबाजी के आश्रम के सत्संग में जाती हैं। अहमदाबाद से नटवर भाई पटेल सपरिवार माँ के पास आये हैं। यह लोग बड़े शोकार्त थे। कुछ दिन हुए नटवर भाई के बड़े भाई का अफ्रीका में देहान्त हो गया है। नटवर भाई के लड़के की वय जिस समय १॥ वर्ष की थी, उस समय माँ अहमदाबाद गयी हुई थीं। उन दिनों वह लड़का बहुत अस्वस्थ था। पैदा होने के बाद से उसे नींद नहीं आ रही थी। बालक के माता-पिता से माँ ने कुछ कहा। आश्चर्य की बात यह हुई कि उसी दिन से लड़के को नींद आने लगी। माँ के इस तरह अयाचित कृपा से नटवर भाई विशेष रूप से प्रभावित हो गये थे।

एक समाचार और प्राप्त हुआ। मण्डी की महारानी साहिबा की बहुत दिनों से इच्छा थी कि वृन्दावन में माँ के लिए एक सुन्दर मकान बनवा दें। किन्तु पिछले ४-५ वर्षों से प्रवास में रहने

के कारण अब तक मकान के सम्बन्ध में कोई भी कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका था। इस बार वे माँ के साथ एक दिन के लिए वृन्दावन के आश्रम में गयी थीं। सवेरे के वक्त वे परमानन्द स्वामी के साथ आश्रम में चारों तरफ घूम-फिरकर देख रही थीं। ठीक इसी समय माँ बाहर आयीं। जब उनके संकल्प की चर्चा चली तब माँ ने कहा—"प्रतिष्ठा-त्रतिष्ठा की इच्छा होने पर आज ही कर सकते हो।" तुरन्त पत्रा खोलकर देखा गया। उस दिन १२ बजे अच्छा लग्न था।

जमीन की नाप-जोख हो रही थी। ठीक इसी समय माँ एक जगह जाकर खड़ी हो गयीं और बोलीं—"परमानन्द यहाँ हो तो कैसा हो? स्वामीजी तुरन्त ही वहीं नींव के लिए मिट्टी खोदवाने लगे। यथा समय मन्दिर की नींव डाल दी गयी। रानी साहिबा की इतने दिनों की इच्छा अब कार्य रूप में परिणत हुई देखकर, वे आनन्द मग्न हो उठीं।

माँ वृन्दावन से कहाँ जायेंगी अभी इसका निश्चय नहीं हुआ है। पानु ने लिखा है कि माँ अपने साथ ज्यादा आदमी नहीं रखेंगी। कुसुम रायपुर के आश्रम में चला गया है। हीरू कल्याण वन में रहेगा। कान्ति भाई माँ के निर्देश से भीमपुरा जा रहे हैं।

२१ दिसम्बर, १९५७

पानु का पत्र आया है उसने लिखा है कि आज सवेरे माँ दिल्ली जाने वाली हैं। वहाँ से तीसरे पहर मोदी नगर जाकर एक रात ठहरेंगी, फिर किशनपुर के आश्रम में जायेंगी। माँ के साथ परमानन्द स्वामीजी, भरत भाई, पुष्प और गोपाल की माँ जायेंगी बुनी, रमा आदि को माँ ने काशी रवाना कर दिया है।

२० दिसम्बर, १९५७

माँ के एक विशिष्ट भक्त की मृत्यु—एक आकस्मिक दुर्घटना

आज शाम को भइया कलकत्ता से यहाँ आये। उनकी जबानी एक घटना का विवरण सुनकर मैं मर्माहत हो उठी। कलकत्ता के डा० सुधीन मजुमदार सरकारी काम के सिलसिले में दार्जिलिंग गये हुए थे। अचानक वहाँ उनका हार्ट फेल हो गया। सुधीन दादा की तरह आश्रम का हितैषी मित्र एक प्रकार से नहीं के बराबर है। वे हमेशा आश्रमवासी तथा आश्रम के परिचित व्यक्ति की सहायता करने के लिए तत्पर रहते थे। उनकी इस असामयिक मृत्यु से आश्रम का काफी नुकसान हुआ, इसमें कोई सन्देह नहीं।

यह समाचार सुनकर मन बहुत खराब हो गया। नींद नहीं आ रही थी। अचानक फोन की घण्टी बज उठी। अहमदाबाद से मेरे नाम ट्रंक काल आया है। उर्मिला (कान्ति भाई मुनशा की लड़की) फोन पर कह रही थी कि आज शाम के समय कान्ति भाई का हार्ट फेल हो जाने के कारण देहान्त हो गया। मैं जैसे इस पर विश्वास नहीं कर पा रही थी। बार-बार पूछने पर एक ही जवाब मिलता रहा। रात भर बेचैनी से करवट लेती रही।

२२ दिसम्बर, १९५७

सवेरे टेलीफोनों का तांता लग गया कि कान्ति-भाई मुनशा का मृत्यु समाचार जो कि समाचार पत्रों में छपा है, वह सही है या गलत ? इस समाचार पर कोई विश्वास नहीं कर पा रहा था।

कान्ति भाई को आश्रम का प्रधान स्तम्भ कहा जाय तो कोई

अत्युक्ति नहीं होगी। जब जिस चीज को आवश्यकता हुई और उनके निकट पहुँची तब उन्होंने उसे तन-मन-धन से पूर्ण किया। माँ के प्रति उनमें अविचलित श्रद्धा और भक्ति थी। उनका पूरा परिवार ही भक्त परिवार है। आज मुझे एक-एक कर सारी घटनाएँ याद आने लगीं। सावित्री यज्ञ, काशो का टूटा हुआ घाट आदि सभी कामों में कान्तिभाई ने जिस तरह सहायता दी थी, वह सब बातें याद आने लगीं।

इसी नवम्बर माह के अन्त में वे माँ के यहाँ दिल्ली गये हुए थे। चलते समय माँ से अनुमति लेकर श्री अवधूतजी महाराज को अपने साथ अहमदाबाद ले गये। अवधूतजी उत्कंठेश्वर महादेव के मन्दिर में थे। अचानक न जाने किस वजह से कल अहमदाबाद आये थे। उसी समय कान्तिभाई सहसा अस्वस्थ हुए। उनकी मृत्यु के समय अवधूतजी वहाँ उपस्थित थे।

आज एक और आकस्मिक मृत्यु का समाचार मिला। दो दिन के भीतर एक के बाद एक तीन मृत्यु समाचार मिले।

रमा दीदी के पति मेरठ में थे। परसों शाम को स्टेशन के प्लेटफार्म पर सहसा उनका हार्ट फेल हो गया और उनकी मृत्यु हो गयी। रमा दीदी को माँ उसी दिन वृन्दावन से काशी भेज चुकी थीं। काशी में जाते ही यह दु:संवाद पाकर वे मेरठ चली गयीं।

रमा दीदी के पति डा० रामबाबू सक्सेना माँ के भक्त थे। आप उत्तर प्रदेश के विशिष्ट नागरिक और अनेक उच्च पदों पर प्रतिष्ठित थे। उनका एकमात्र पुत्र वीर बचपन से ही माँ के निकट आताजाता रहता है। आजकल वह आई० ए० एस० पास करके रेलवे में असिस्टेण्ट ट्राफिक सुपरिण्टेण्डेण्ट है।

३१ दिसम्बर, १९५७

इधर कई दिनों से माँ की गतिविधि के सम्बन्ध में कोई समाचार नहीं मिला था। आज चित्रा के पत्र से पर्याप्त समाचार मिला। माँ पिछले २७ तारीख को हरिद्वार से योगी भाई की मोटर द्वारा दिल्ली आकर वहाँ एक रात थीं। इसके बाद २८ तारीख को सवेरे तूफान एक्सप्रेस से माँ इटावा के लिए रवाना हुईं और शाम के लगभग वहाँ पहुँची।

इटावा में आश्रम के लिए दादा ने एक जमीन खरीदी है। वहाँ महावीरजी का एक छोटा सा मन्दिर है। आश्रम के उस नवीन भूमि पर माँ का चरण-स्पर्श कराने के लिए दादा ने माँ से विशेष रूप से प्रार्थना की थी। इस बार भी माँ वाजपेयी जी के यहाँ ठहरी थीं। माँ के साथ स्वामी परमानन्दजी, भरत, भाई, चित्रा, पुष्प और गोपाल की माँ हैं।

वृन्दावन में विद्यापीठ के सभी लड़के हैं। वे सब मथुरा स्टेशन पर माँ का दर्शन करने आये थे।

माँ के कथनानुसार दादा ने आश्रम की भूमि पर जहाँ हनुमान जी की मूर्ति थी, वहाँ पूजा करने के बाद अच्छे ढंग से भोग चढ़ाया।

